11, IV

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

—०—

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य
श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

●★●

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री१०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन ।
श्रीमान् भाई चूहरमल्लजी मुञ्जाल, चूहरमल्ल एण्ड को०, कटरा बड़ियां, देहली ।
श्रीमान् लाला शिवचरणदास जी, सदस्य परामर्शदातृ-समिति हिमाचल प्रदेश, सोलन ।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य ।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर ।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर ।
श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूरीज लिमिटेड, सोलन ।
श्रीमान् बा० भागीरथलालजी मिलऑनर, लहरागागा [पटियाला-राज्यसंघ]
श्रीमान् ला० अमरनाथजी रईस, न्यूअमरटाकीज, अजमेरीगेट, दिल्ली ।
श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]
श्रीमान् सेठ गयाप्रसादजी खण्डेलवाल, सिल्चर [आसाम]

—★—

सम्पादक और व्यवस्थापक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—
श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और परलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक—

जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जाएंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) और एक प्रतिका १।) रु० है।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र पत्रिकाएं सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)के पतेसे भेजने चाहिएं।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। अस्वीकृत लेख डाकव्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमासकी विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमी का 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें इनसे वार्षिक मूल्य ४)रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ) तकके शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३)रु० और एक अंकका मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवानेमें उक्त मूल्यमें आठ आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधिक बढ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहकसंख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए, यदि ग्राहकसंख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य वा एक अंकके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अंक न पहुंचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

स्वाध्यायोऽध्येयतव्यः ॐ श्रीः ॐ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम

श्रीस्वाध्याय

(ग्रीष्माङ्क)

स्वराष्ट्रशिक्षां गृहीत्वाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥

वर्ष ११ | सोलन, आषाढ शु० १० गुरुवार सं० २००६ वि० | संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयंस्तत्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥

---अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

अकल्याणं कीदृक् कृतमिह हि कल्याणमपि वा
रजोरागैर्लिप्तं प्रभवति न चित्तं कलयितुम् ।
समर्था निर्णेतुं गुरुपदपरागाः स्वकलया
सखायोऽतो नः स्युः सकलकलनाकल्पतरवः ॥१॥

हृदन्तः सन्तो ये स्मरहरपदाम्भोजयुगलीं
स्मरन्ते तेषां नो भवति यमधानीगमनिका ।
परं ते विश्वेषां परमशिवधानीगुरुपदे
चिरं ते राजन्ते स्वबलदलिताऽशेषकलुषाः ॥२॥

राम-राज्य

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज्य नहि काहु हि व्यापा ॥"

'राम राज्य!' अहा कितना प्रिय शब्द है, कर्ण-कुहुरोंमें पड़ते ही अनुपम सुख शान्तिमय सुधारसका संचार करता जाता है यह शब्द। 'राम-राज्य' शब्दका उच्चारण करने मात्रसे जब तन-मन पुलकित हो उठता है, रामायण, रामचरित मानस आदि ग्रन्थोंमें इसका वर्णन पढ़ते पढ़ते रोम रोम एक अनिवर्चनीय आनन्दोल्लासमें मग्न हो जाता है तब वे लोग क्यों न धन्य और कृतार्थ होंगे जो उस 'राम-राज्य'में रहते होंगे। विश्व भरकी भूत भविष्य और वर्तमान सभी राज्य-प्रणालियोंमें सर्व श्रेष्ठ आदर्श एवं अनुकरणीय व्यवस्था राम-राज्य ही है। राम-राज्यमें प्रजा जब आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक सभी दृष्टियोंसे सुखी और समुन्नत थी। किसीको कभी कोई ताप सताता न था। सभी लोग स्वकर्तव्य निरत थे। हिन्दी साहित्याकाशके सूर्य श्री गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज इस राम राज्यका कैसा सुललित वर्णन कितने संक्षिप्त रूपसे कर रहे हैं, देखिए:—

राम राज बैठे त्रैलोका।
हर्षित भए गए सब शोका ॥
बयरुन करई काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई ॥
बरनास्रम निज धर्म सब निरत वेदपथ लोग।
चल हिं सदा पावहिं सुख नहिं भय सोक न रोग ॥
सब नर करहिं परसपर प्रीति।
चलहिं स्वधर्म निरत स्रुति नीति
अल्प मृत्यु नहिं कवनिऊ पीरा।
सब सुन्दर विरुज सरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोऊ दुखी न दीना।
नहिं कोऊ अबुध न लच्छन हीना ॥

अर्थात्—

रामराज्यमें वैर विरोध, शोक संताप, दुःख, अज्ञान आदिका कमी लवलेश भी नहीं। सभी पढ़े लिखे विद्वान सुखी सम्पन्न व निरोग सुन्दर स्वस्थ हैं। कोई भी धर्मसे विमुख नहीं। सब लोग परस्पर प्रेमसे रहते हैं। किसीको किसी प्रकारका कष्ट नहीं। छोटी आयुमें किसीकी मृत्यु नहीं होती। संक्षेपमें कह सकते हैं कि प्रजाके प्रत्येक कष्टका दायित्व राज्य पर है। और रामराज्यमें ऐसी व्यवस्था थी कि किसीको कष्ट दुःख भय न हो। कैसा दिव्यानन्दमय है यह 'राम-राज्य।' पाठक पढ़ते पढ़ते सचमुच एक असीम सुख सागरकी तरंगावलियोंमें हिलोरें लेने लगता है।

हमारे नेतागण लोकमान्य भगवान् बाल गंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, योगिराज अरविन्द, महामना पं० मदन मोहनजी मालवीय, सुभाषचन्द्र बोस 'नेताजी' और विश्ववन्द्य 'बापू' सभी ब्रिटिश नौकरशाहीकी अनन्त यातनाएं सहकर उसके साथ निरन्तर संघर्षमें रत रहे, क्यों किस लिए? एकमात्र 'रामराज्य' की प्राप्तिके लिए। ये सब लोग यही चाहते थे कि हमारे देशमें और सम्पूर्ण विश्वमें एक आदर्श रामराज्यकी स्थापना की जाय, जिससे जनता सब प्रकारकी दुःख दुविधाओंसे दूर होकर सुख सुविधाओंसे सम्पन्न व सन्तुष्ट हो जाय। किन्तु अंग्रेजोंके अभिशापमय राज्यके समाप्त हो जाने पर और कांग्रेसके नेतागणोंके हाथोंमें देशकी बागडोरको आये आधे युगके लगभग समय बीत जाने पर भी देशकी दुर्दशा दिनों दिन बढ़ती ही जा रही, है कहीं भी सुख, शान्ति, सन्तोष, सम्पत्ति, समृद्धि व सन्मतिके दर्शन नहीं होते। सर्वत्र रामराज्यके स्थान पर यहां तो कराल कलिका राज्य अहर्निश अकाण्ड ताण्डव कर रहा है। गोस्वामीजीने कलिके जिन जिन कष्टों और कलंकोंकी ओर संकेत किया है वे सब इस राज्यमें प्रत्यक्ष रूप धर उपस्थित हो रहे हैं। देखिए:—

बरन धर्म नहीं आगम चारी।
श्रुति विरध रत सब नर नारी ॥
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन।
कोऊ नहिं मान निगम अनुसासन ॥
मारग सोई जा कहं जोई भावा।
पंडित सोई जो गाल बजावा।

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन,
हम तुमते कछु घाटि ।
जानहिं ब्रह्म सो विप्रवर,
आंखि दिखावहि डांटि ॥

भए बरन-संकर कलि भिन्न सेतु सब लोग ।
करहिं पाप पावहिं दुःख भयरुज सोक वियोग ॥

कलि बारहिं बार दुकाल परै ।
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥
नर पीड़ित रोग न भोग कहीं ।
अभिमान विरोध अकारनहीं ॥
लघु जीवन संवत पंचदसा ।
कलपांत न नास गुमान असा ॥
नहिं तोष विचार न सीतलता ।
सब जाति कुजाति भए मंगता ॥
इरषा परुषाच्छर लोलुपता ।
भरि पूरि रही समता बिगता ॥
सब लोग वियोग विसोक हये ।
बरनास्रम धर्म अचार गये ॥

इस प्रकार आज रामराज्यके स्थान पर कलि-राज्य हीका कौतुक दिखाई दे रहा है। अस्तु !

राष्ट्रकी नव निर्वाचित सर्वतन्त्र स्वतन्त्र सत्ता सम्पन्न संसदका अधिवेशन पिछले दिनों आरम्भ हो चुका है। अनेक सदस्य और राष्ट्रपति स्वयं भी चाहते हैं कि कलिराज्य समाप्त कर रामराज्यकी स्थापना की जाय। हम भी चाहते हैं और संसदके विद्वान् सदस्योंसे एवं राष्ट्रपतिसे साग्रह निवेदन करते हैं कि स्वतन्त्र भारतमें अब तक रामराज्यकी विडम्बना होती रही है उसे तुरन्त बन्द कर गौहत्या, रिश्वतखोरी, काला-बाजार, और अंग्रेजियतके मोहको छोड़कर गौसंवर्धन व रक्षण, सत्य-न्याय एवं भारतीय राष्ट्रभाषाकी प्रतिष्ठा कर सच्चे रामराज्यकी स्थापनाके प्रयत्न द्वारा अपने कर्तव्यका पालन करें। तभी वे जनताके सच्चे सेवक वास्तविक प्रतिनिधि कहलानेके अधिकारी होंगे।

★

खण्डग्रास-चन्द्रग्रहण

श्रावण शुक्ला १५ मंगलवार ता. ५ अगस्त (अर्धरात्रोत्तर ६ अगस्त) १९५२ ई. को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण होगा, जो भारतमें सर्वत्र दिखाई देगा। इस ग्रहणका भारतीय स्टेण्डर्डमानसे स्पर्शादि काल निम्न लिखित है :—

स्पर्श (ग्रहणारम्भ) अर्धरात्रिको १२ बजकर १ मिनट पर। मध्य १।१६ और मोक्ष (ग्रहण समाप्ति) अर्ध-रात्रोत्तर २ बजकर ३५ मिनट पर होगा। सर्व ग्रहण (पर्व काल) २ घंटा ३४ मिनटका है।

ग्रहणका फल —यह ग्रहण श्रवणनक्षत्र और मकर, कुम्भ, मिथुन, कर्क, तुला राशि वाले व्यक्तियों तथा देशोंको पीड़ा भय शोक चिन्तादि अशुभफल कारक है। मेष, वृषभ, कन्या, धनुः राशियोंको मध्यम और मीन, सिंह, वृश्चिक राशि वालोंको शुभफल कारक है। जलयान, वायुयान, रेल्वे, परराष्ट्रीय दूतों और राजकीय महापुरुषोंको यह ग्रहण नेष्ट फलदायी होगा। कहीं-कहीं अतिवृष्टि, नदियोंकी बाढ़से जनधनकी हानि और अन्तस्थ कलह होगा। व्यापारी कर्मचारियोंके लिए भी यह ग्रहण कष्ट प्रद रहेगा। भारतके कुछ उत्पादन केन्द्रोंमें असन्तोष बढ़ेगा। काश्मीर और यवन-देशोंमें आतङ्क बढ़ेगा। पूंजीपति और श्रमिक वर्गमें असन्तोष रहेगा। व्यापारकी स्थिति अनिश्चित सी रहेगी। पहले कई वस्तुओंमें तेजी आकर बादमें मंदी आवेगी। स्थानाभावके कारण यहां विशेष फल नहीं दिया जा सका।

★

श्री श्रीविंशतिकाशास्त्रम् ।

[सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज]

ज्ञातृज्ञानज्ञेयभावो यदायत्तः स्फुरेदयम् । तामात्मशक्तिं वन्देऽहं विज्ञानां महतीं हृदि ॥ १ ॥
स्वतन्त्रं निरपेक्षं यदमृतं ब्रह्म वाग्भवम् । परिपूर्णं शक्तिघनं स्वप्रकाशं तदस्म्यहम् ॥ २ ॥
स्वयंसिद्धा भगवती ब्रह्मशक्तिरहम्महः । इच्छत्यवैति कुरुते निग्रहाऽनुग्रहात्मिका ॥ ३ ॥
शान्तैर्घोरैर्घोरतमैः स्वं रूपैर्नामभिश्च या । निगृह्णात्यनुगृह्णाति पिबन्ती स्वरसाऽऽसवम् ॥ ४ ॥
सृजन्त्यवन्त्यदतीयमात्मनाऽऽत्मानमात्मनि । नित्यं समरसाऽऽनन्दा महाऽनुभवमश्नुते ॥ ५ ॥
कल्पितं पुण्यपापादि नैनां स्पृशति जात्वपि । निर्लेपं सर्वगमपि करकादि वियद्यथा ॥ ६ ॥
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तानि केवले नित्य आत्मनि । स्वकलाकल्पितानीति विलसन्त्यपि सन्ति नो ॥ ७ ॥
विद्यमाने जगति को लाभो नष्टे च का क्षतिः । वन्ध्यासुते जीवति नो लाभो हानिश्च नो मृते ॥८॥
अवद्यमनवद्यं वा कर्म किं साधयेदसत् । शशशृङ्गं धनुर्यद्वदृढं दृढमेव वा ॥ ९ ॥
स्फुरन्तु मा वा स्फुरन्तु विश्वान्यात्मनि किं ततः । आनन्दघनमद्वैतं चकास्त्येव महन्महः ॥१०॥
कुर्वज्ञानंस्तथैवेच्छन्यदात्मानमपह्नुते । सोऽपह्नवोऽप्यलङ्कारः स्वरसे माद्यतः कवेः ॥११॥
स्वप्रकाशं विमृश्याऽयं स्वविमर्शं प्रकाश्य च । विश्वानि कवयंस्तेषु रमते हि रसात्मना ॥१२॥
सभ्यो नटो विभावादिभावा रङ्गः स्वयं भवन् । स्वचरित्राऽनुकारेण स्वमेव भजते रसम् ॥१३॥
रेखा बिन्दुं लिपी रेखां पदानि लिपिमन्तरा । वाक्यं पदानि ग्रन्थोऽपि वाक्यानि न हि विद्यते ॥१४॥
अचिन्त्यया विसर्गाख्यनिजशक्त्या स्वरूपया । बिन्दुरेव शिवो भाति समस्तं वाङ्मयं सदा ॥१५॥
वाच्यवाचकसम्बन्धाल्लक्ष्यलक्षकयोगतः । व्यङ्ग्यव्यञ्जकभावाच्च महार्थः प्रस्फुरेच्छिवः ॥१६॥
वाच्यलक्ष्यव्यङ्ग्यभावविमर्शपरवान्भवन् । सच्चिदानन्दस्वरूपः शिव एव प्रकाशते ॥१७॥
स्फुरन्क्रमेणाऽक्रमेण विक्रमेण च सन्ततम् । स्वस्मिन्नेवोऽरुक्रमोऽयं क्रमते रमतेऽपि च ॥१८॥
स्वरसामममृतां विन्दुविसर्गाढ्यां परः शिवः । लालयंल्ललते नित्यं ललितामात्मनः कलाम् ॥१९॥
विमृश्यैवमशेषेण स्वानन्दरससम्भृतः । निःसङ्गो निर्ममः शान्तो मुनिर्यादृच्छिको भवेत् ॥२०॥

वैराग्यवन्मनुजसेव्यमिदं सदैव हृद्यप्रबोधचतुरं सुमनःशरण्यम् ।
नाऽतः परं किमपि शास्त्रमशेषशोक पाथोऽधिशोषकरणेन शिवाऽनलः स्यात् ॥२१॥
विक्रमतोजननरमितवर्षेऽष्टम्यां सिते कवौ नभसि । श्रीविंशतिकां निरमाच्छ्रीमदमृतवाग्भवाचार्यः ॥२२॥
अत्रिगोत्रसमुद्भूतमिश्रगोविन्दशर्मणः । बोधार्थं निर्मितं शास्त्रमेतज्जानन्तु पण्डिताः ॥२३॥

★

दर्शन लेखमाला—

वैशेषिक दर्शन

(ले०—महामहोपाध्याय श्री पं० परमेश्वरानन्दजी विद्याभास्कर दर्शनाचार्य)

इस लेखके विद्वान् लेखक महोदय ओरियण्टल कालेजके संस्कृत विभागाध्यक्ष श्रद्धेय श्री महामहोपाध्यायजी संस्कृतसाहित्य एवं प्राच्य दर्शनके प्रकाण्ड पंडित हैं। 'श्रीस्वाध्याय' पर आरंभसे ही आपका विशेष स्नेह रहा है। अब आपने 'श्रीस्वाध्याय' के मननशील मुमुक्षु पाठकोंके हितार्थ यह लेखमाला भेजनेकी कृपा की है। इससे जिज्ञासु पाठकों को पर्याप्त लाभ होगा। भविष्यमें 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक अङ्कमें आपके मौलिक दार्शनिक लेख प्रकाशित होते रहेंगे। —सम्पादक]

संसारके समस्त प्राणी सदा सुखकी इच्छा रखते हैं, और चाहते हैं कि हमें कभी दुःख न हो। उनके सारे काम सुख-प्राप्तिके लिए ही होते हैं, भले ही इनके लिये वे काम सुख-दायी होनेकी अपेक्षा दुःखदायी अधिक हों, तथापि उन कामोंको करनेमें उनका प्रधान लक्ष्य सुख-प्राप्ति ही होता है।

प्राणियोंको सुख या आनन्दकी इच्छा होना स्वाभाविक है। क्योंकि संसारके सारे प्राणी चाहे वे किसी भी देश या जातिके हैं, उसी एक अद्वितीय परब्रह्म परमात्माके अंश हैं। गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने कहा है—

"ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः"

'इस जीवलोकमें सारे मेरे ही अंश हैं'। उस परमात्मा को तत्वज्ञानी ऋषियोंने आनन्द-स्वरूप बताया है, 'आनन्दमयोऽभ्यासात्' इस वेदान्तसूत्रका संकेत भी परमात्माकी आनन्द-मयताकी ओर ही है। इसलिए संसारके सकल प्राणियोंका उस आनन्द-स्वरूप या सुख-स्वरूप अपने अंशकी ओर झुकाव होना अत्यन्त स्वाभाविक है। सजातीयकी ओर आकर्षण होना विज्ञानसिद्ध तथ्य है। इसीको अंग्रेजी में 'नेचरल एफिनिट' कहते हैं। पत्थर या मिट्टीके ढेलेको ऊपर फेंकिये, वह कुछ क्षणके बाद पृथ्वीकी ओर ही आकृष्ट होगा, क्योंकि वह पृथ्वीका अंश है। वास्तविक 'पुरुषार्थ' क्या है यह बताते हुए शास्त्रकार लिखते हैं—

"त्रिविधदुःखात्यन्त-निवृत्तिरत्यन्त-पुरुषार्थः"

अर्थात् प्राणियोंके साथ आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ये तीन प्रकारके दुःख लगे हुए हैं। शारीरिक और मानसिक रोग आध्यात्मिक दुःख कहलाते हैं, भूकम्प वज्रपात, महामारी आदि दैवी घटनाओंसे होने वाले क्लेशोंको आधिदैविक दुःख कहते हैं। प्राणियोंमें एकका दूसरेसे सताया जाना ही आधिभौतिक दुःख है। इन तीनों प्रकारके दुःखोंकी अत्यन्त निवृत्तिको ही वास्तविक पुरुषार्थ कहते हैं। 'पुरुषार्थ' शब्द का अर्थ है 'पुरुषके चाहकी वस्तु। दुःख निवृत्ति ही मुख्यतः प्राणियोंके चाहकी वस्तु है। सुख तो चेतन आत्माका स्वरूप ही है, वह तो उसे सदा प्राप्त है, दुःखोंकी निवृत्ति हो जाने पर आत्माकी आनन्दमयता ही शेष रह जाती है, इसलिए सुख प्राप्तिके लिए विशेष यत्न करनेकी आवश्यकता नहीं। किसी बोझा ढोने वालेके सिरसे उसका बोझ उतरवा दीजिये, वह अपनेको हलका और सुखी समझने लगता है, क्या उस समय उसे कोई सुख नामकी बाहरी वस्तु प्राप्त होती है? नहीं, सुख तो उसकी आत्मीय वस्तु है, जो बोझके दुःखसे दबी हुई सी थी, बोझ हटाते ही उसका आभास होने लगता है, और वह कहता है 'मैं सुखी हो गया हूं।'

यद्यपि उपर्युक्त तीनों दुःखोंकी निवृत्तिके लिए लौकिक वैदिक अनेक उपाय भी बताये गये हैं, जैसे शारीरिक मानसिक रोगोंके लिये विभिन्न देशोंके विद्वानोंने आयुर्वेद, ऐलोपैथी, होम्योपैथी, हेड्रोपैथी, प्रकृति चिकित्सा, काम-विज्ञान आदि अनेक प्रकारके उपाय दर्शाये हैं। हैजा, प्लेग आदि महामारियोंको दूर करनेके लिए विविध प्रकारके इंजक्शनस् बन चुके हैं और काममें आ रहे हैं। इसी प्रकार भूकम्प आदि दैवी दुर्घटनाओंसे बचनेके लिए ऐसी विधियोंके आविष्कार हो चुके हैं जिनके कारण मकान हिल नहीं सकते, हिल भी जाएं तो गिर नहीं सकते, बिजली नहीं गिर सकती। आधिभौतिक दुःखोंसे रक्षा प्राप्त करनेके लिये भी अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र अणुबम आदिके आविष्कार हो चुके हैं, हो रहे हैं, और भविष्यमें भी होंगे।

तथापि ये सब उपाय, उपर्युक्त क्लेशोंको निश्चित रूप से दूर कर ही देते हैं, ऐसा नहीं देखा जाता, इसके विपरीत बहुतसे स्थानों पर तो 'मर्ज बढ़ता गया, ज्यों २ दवा की' यह उक्ति चरितार्थ होती है। जहां-कहीं सफलता मिलती भी है वहां भी दृढ़ताके साथ यह नहीं कहा जा सकता कि यह क्लेश अब दुबारा नहीं होगा। एक बार चतुर चिकित्सकके उपचारसे रोग शान्त हो जाता है, परन्तु कालान्तरमें वह फिर घर दबाता है, तात्पर्य यह है कि दुःखोंकी अत्यन्त-निवृत्ति इन लौकिक उपायोंसे नहीं हो सकती। वैदिक उपायोंमें भी अविशुद्धि क्षय, आदि अनेक दोष ईश्वरकृष्णने सांख्य-सिद्धांतका निरूपण करते हुए बताए हैं।

इसलिए स्वभावतः यह जिज्ञासा होती है कि इन दुःखों की अत्यन्त निवृत्तिका रामबांणकी भांति अमोघ उपाय कौन सा है? उपनिषद् शास्त्रने इसका एक अचूक उपाय बताया है—**'तरति शोकम् आत्मवित्'** अर्थात् आत्मज्ञानी सब दुःखोंको पार कर जाता है। जिस पुरुषको आत्म-साक्षात्कार हो जाता है उसके उक्त तीनों ताप नष्ट हो जाते हैं। इसीलिए उपनिषत् शास्त्र संसारके समग्र प्राणियोंको सम्बोधन करके कहता है—

'आत्मा वारे द्रष्टव्यः, श्रोतव्यो
मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः"

हे दुःखी पुरुष! यदि तू सचमुच दुःखकी निवृत्ति चाहता है, तो अपने आपको पहचान, अपनी आत्माके दर्शन कर, विद्वानोंके पास जाकर उनसे आत्माके सम्बन्धमें सुन, सुन कर मनन कर, और एकाग्र चित्तसे उसका ध्यान कर। संक्षेपमें तात्पर्य यह है कि आत्म-दर्शन ही सब दुःखों का एकमात्र उपाय है। इस अत्यन्त सूक्ष्म आत्मतत्वके दर्शन के लिए ही प्रातःस्मरणीय कणाद मुनिने वैशेषिक दर्शन, सिद्धशिरोमणि कपिलने सांख्यदर्शन और आत्म-ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णद्वैपायनने ब्रह्मसूत्र वेदान्तदर्शनका निर्माण किया। ये तीनों दर्शन क्रमशः मनुष्यको उसकी योग्यताके अनुसार आत्म-दर्शन करानेमें सहायक होते हैं।

साधारणतः मनुष्य व्यवहारमें इस स्थूल देह अथवा आंख, कान, नाक आदि इन्द्रियोंके समूहको ही आत्मा समझता है। इसीलिए इसकी पुष्टिमें ही अपनी पुष्टि समझता है, इन इन्द्रियोंकी तृप्तिमें ही अपनी तृप्ति समझता है। इनके विनाशमें ही उसको अपना विनाश दीखता है। इतना ही नहीं इस देहेन्द्रिय-संस्थाके साथ सम्बन्ध रखने वाले या इसके सुखके साधन स्त्री, पुरुष, पुत्र, पौत्र तथा समस्त स्थावर जंगम धन सम्पत्तिमें भी उसे आत्मबुद्धि उत्पन्न हो जाती है। तभी तो वह इन स्त्री, पुत्रादिके विनाशको आत्म-विनाश ही समझता है। उनके वियोगमें दुःखी होकर कहता है 'हाय मैं मारा गया, हाय मैं तो मारा गया'। इनकी रक्षा और समृद्धिमें ही वह आत्म-समृद्धि समझता है। और अपनेको कृतकृत्य मानता है! यहां तक कि इनकी रक्षाके लिए कभी-कभी वह इस शरीरसे हिंसा चोरी आदि कुकर्म भी करता है, वाणीसे झूठ और कठोर बोलता है, मनसे दूसरेका द्रोह करता है, दूसरेके द्रव्यको हथियानेकी इच्छा रखता है। यह सब कुछ वह आत्माके अज्ञानके कारण ही करता है।

कणाद मुनि वैशेषिकदर्शन द्वारा उसको उपदेश देते हैं-यह स्थूल देह पार्थिव है--पृथ्वीका विकार हैं, जैसे घड़ा बनानेमें जल अग्नि आदि वस्तुओंका भी उपयोग होता है वैसे ही इस शरीरके निर्माणमें जल, तेज, वायु आकाशका भी उपयोग हुआ है। इसलिए घट आदिकी भांति यह भी नश्वर है। यह आत्मा नहीं है। इतना ही नहीं यह सारा चराचर संसार भी पृथ्वी, जल तेज आदिके परमाणुओंसे ही बन हुआ है।

और अनित्य है। आत्मा इन भूत भौतिक विकारोंसे अतिरिक्त है, व्यापक है, नित्य है। आंख, कान, नाक, त्वचा, रसना ये पांच बाह्य इन्द्रियां हैं, और भौतिक हैं, मन अन्तरिन्द्रिय है जिसे अन्तःकरण भी कहते हैं, इन छहों इन्द्रियोंके द्वारा आत्मा गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द इन पांच विषयोंका ज्ञान करता है, यही इन्द्रियां इसके सुख दुःखोपभोगके साधन हैं।

यदि यह स्थूल शरीर ही आत्मा होता, तो हम बालक-पनमें देखी हुई वस्तुका बुढ़ापेमें स्मरण न कर सकते। क्योंकि यह नियम है जो अनुभव करता है उसीको स्मरण भी होता है, वस्तुका अनुभव तो मैं करूं और उस अनुभूत वस्तुकी स्मृति किसी दूसरे को हो जाय ऐसा नहीं होता। यदि शरीर ही आत्मा है तो बालकपनके शरीरने जिस वस्तुका अनुभव किया है उसका स्मरण बुढ़ापेके शरीरको नहीं होना चाहिये। क्योंकि बुढ़ापेके शरीरने तो अनुभव किया ही नहीं परन्तु हम बालकपनके अनुभवोंका अति वृद्धावस्थामें भी याद करते हैं-- इसलिए मानना पड़ता है कि बाल्य, कौमार, यौवन वार्धक्य आदि विभिन्न अवस्थाओंके विभिन्न शरीरोंमें इनसे पृथक् एक आत्मा है जो सब अवस्थाओंकी घटनाओंका अनुभव और स्मरण करता है। जैसे मालामें भांति-भांतिके फूल गुथे हुए होते और उन विचित्र फूलोंके बीचमें उनसे पृथक् एक सूत होता है-इसी प्रकार विभिन्न शरीरोंके बीचमें सूत्र-रूप एक आत्मा है, इसी आत्मा-सम्बन्धी अज्ञानके कारण प्राणी बार-बार जन्म-मरणके चक्करमें पड़ता है, जब पुरुषको श्रवण-मनन और निदिध्यासनके द्वारा आत्मज्ञान हो जाता है, तब यह जगत्के नश्वर पदार्थोंसे एक-दम उदासीन हो जाता है, अर्थात् जगत्के पदार्थोंसे न उसे राग होता है न द्वेष, राग-द्वेष-रहित प्रवृत्ति मनुष्योंको कर्म जालमें नहीं बांधती। राग-द्वेष-रहित पुरुष जीवन्मुक्त-हो जाता है। इसी आशयको परमर्षि अक्षपादने न्यायसूत्रमें इस प्रकार लिखा है—

"दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानाम् उत्तरोत्तरा-पाये तदनन्तरापायादपवर्गः॥"

अर्थात् आत्म-विषयक तत्वज्ञानसे मिथ्या ज्ञानका नाश हो जाता है, मिथ्या ज्ञानके नाशसे रागद्वेष आदि दोष नष्ट हो जाते हैं, दोषोंके नाशसे शुभ-अशुभ किसी प्रकार का भी जन्म नहीं होता, जन्म न होनेसे दुःखोंसे छुटकारा मिल जाता है। इसी अवस्थाका नाम मुक्ति या अपवर्ग है। गीता भी इस सिद्धान्तका समर्थन करती है—

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयान् इन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति॥
प्रसादे सर्व-दुःखानां हानिरस्योपजायते।

अर्थात् जिस पुरुषकी इन्द्रियां रागद्वेष-शून्य हो गई हैं, वह प्रत्यक्षमें सांसारिक विषयोंका उपभोग करता हुआ भी, उनमें लिप्त नहीं होता, उनकी प्राप्तिके उद्देश्यसे वह शुभ-अशुभ कोई भी कर्म नहीं करता, उसके सब कार्य लोक-संग्रह के लिए ही होते है। उसको एक प्रकारकी ऐसी निर्मलता प्राप्त हो जाती है कि जिससे उसके सारे दुःख नष्ट हो जाते हैं।

देह इन्द्रिय आदिमें आत्मबुद्धि प्राणीको कबसे हुई यह नहीं बताया जा सकता, अनादि कालसे यह अज्ञान चला आ रहा है। आत्मज्ञानसे ही इस अज्ञान की निवृत्ति हो सकती है। ज्ञान तब तक नहीं हो सकता जब तक जिज्ञासा न हो, आत्मजिज्ञासा तब तक नहीं हो सकती जब तक धर्माचरण न हो—

उपनिषद्में कहा गया है—

"तमेतम् आत्मानं ब्राह्मणा वेदानुवचनेन विविदिषन्ति यज्ञेन तपसाऽनाशकेन"।

अर्थात् वेदाध्ययन, यज्ञ और तपसे ही आत्मजिज्ञासा पैदा होती है। इसलिए श्री कणाद मुनिने वैशेषिक दर्शनमें कहा है—

अर्थात् जिससे लौकिक पारलौकिक अभ्युदय हो और सर्वदुःखनिवृत्ति रूप निःश्रेयस प्राप्त हो वही धर्म है। इसलिए आत्म जिज्ञासाकी उत्पत्तिके लिए—शास्त्रोक्त कर्मोंका अनुष्ठान अहिंसा, सत्य, अस्तेय, पवित्रता इन्द्रियनिग्रह आदि धर्मोंका पालन परमावश्यक है। कणाद मुनिने वैशेषिकदर्शनमें आत्म-साक्षात्कारके प्रसंगसे ही संसारके सकल पदार्थोंका सात पदार्थों में वर्गीकरण किया है। वे सात पदार्थ हैं—द्रव्य, गुण, कर्म,

सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव। द्रव्यके नौ भेद हैं, उन्हींमें आत्मा भी एक द्रव्य है, आत्मा दो प्रकारका है, जीवात्मा और परमात्मा। जीवात्मा अनन्त है और परमात्मा एक है, जीव अल्पज्ञ है और परमात्मा सर्वज्ञ है। रूप रस आदि चौबीस गुण हैं, पांच प्रकार का कर्म है। दो प्रकार का सामान्य है, विशेष नाम के पदार्थ अनन्त हैं, समवाय एक है, जाति-व्यक्तिका, गुण-गुणीका, क्रिया क्रियावान्‌का समवाय सम्बन्ध होता है। इन्हीं पदार्थोंके निरूपणमें—वर्तमानमें प्रचलित समस्त भौतिक विज्ञान, मैटीरियल साइन्स, साउन्ड, हीट, लाइट—अर्थात् शब्द गर्मी और प्रकाशके सिद्धांत अन्तर्गत हो जाते हैं।

"श्रीमदालसाका उपदेशामृत"

धरामरान्पर्वसु तर्पयेथाः समीहितं बन्धुषु पूरयेथाः।
हितं परस्मै हृदि चिन्तयेथाः मनः परस्त्रीषु निवर्त्तयेथाः।
सदा मुरारिं हृदि चिन्तयेथास्तद्ध्यानतोऽन्तःषडरीञ्जयेथाः।
मायां प्रबोधेन निवारयेथा ह्यनित्यतामेव विचिन्तयेथाः॥
अर्थागमाय क्षितिपाञ्जयेथाः यशोऽर्जनायार्थमपि व्ययेथाः।
परापवादश्रवणाद्बिभीथाः विपत्समुद्राज्जनमुद्धरेथाः॥
यज्ञैरनेकैर्विबुधानजस्रमन्नैर्द्विजान्प्रीणय संश्रितांश्च।
स्त्रियश्च कामैरतुलैश्चिराय युद्धैश्चारींस्तोषयितासि वीर॥

—मार्क० पु० २३।५७-६०।

श्री मार्कण्डेय पुराणके २३ वें अध्यायमें मदालसा अपने पुत्र अलर्कके प्रति न केवल अलर्ककी माताके रूपमें अपितु लोकमाताके रूपमें मानवमात्रको उपदेश देती है कि—मनुष्यको प्रत्येक पर्व महापर्व पर समाजको ज्ञानोपदेश द्वारा सन्मार्ग पर लाने वाले पृथ्वीके देवता स्वरूप ब्राह्मणोंको भोजन वस्त्रादि अभीष्ट वस्तुएं देकर हर प्रकारसे सन्तुष्ट करना चाहिए और अपने आश्रित बन्धु बान्धुओंकी मनचाही आवश्यकताओंको पूरा करना चाहिये। अपने स्वार्थ साधनमें ही भूले न रह कर हृदयमें दूसरेके हितकी भी चिन्ता करनी चाहिये। अपनी विवाहिता स्त्रीके अतिरिक्त दूसरी स्त्रियोंमें मातृ बुद्धि रख कर मन का नियन्त्रण करना चाहिये और उसके ध्यान द्वारा अपने अन्तःकरणमें रहने वाले काम, क्रोध, मद, लोभादि छहों शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनी चाहिये। स्वाध्याय तथा ज्ञानके द्वारा मायाको धीरे २ दूर भगाना चाहिये और संसारकी अनित्यताको ध्यान में रखना चाहिये। अर्थकी पूर्तिके लिए राजाओं अर्थात् अन्य देशों पर विजय प्राप्त करना और संसारमें अपना यश सौरभ फैलानेके लिए उत्तम स्थानोंमें धनका निःसंकोच व्यय भी करना चाहिए। दूसरेकी निन्दा करनेसे डरना चाहिये और विपत्ति सागरमें डूबते हुए मनुष्यको किनारे लगाना चाहिये। अपने जीवनकालमें अनेकों यज्ञों द्वारा देवताओंको तथा सुस्वादु अन्न देकर द्विज जाति मात्रको और अपने आश्रित जनोंको सन्तुष्ट करना चाहिए। स्त्रियोंको उनकी अभिलाषाएं पूरी कर तथा शत्रुओंको युद्धमें पराजित कर अपनी वीरता द्वारा प्रसन्न करना चाहिए।

एक अभूतपूर्व तर्क !

[लेखक:—श्रीदीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वत, विद्यावागीश, विद्याभूषण, विद्यानिधि]

उत्तरप्रदेशके भूतपूर्व शिक्षा-मन्त्री श्रीयुत सम्पूर्णानन्दजीने 'ब्राह्मण सावधान' नामक एक पुस्तिका लिख रखी है; इसमें हिन्दु-समाजकी कुछ त्रुटियां अङ्कित की गई हैं, हम इसके तर्कोंकी यदा-तदा 'श्रीस्वाध्याय'में प्रत्यालोचना उपस्थित करेंगे। एक स्थानमें वे एक तर्क उपस्थित करते हैं—

"धृतिकी कमीसे हिन्दू बड़ी जल्दी कातर हो उठता है। उसका धर्म उसको बतलाता है कि—आत्मा अमर है और मरने वालेका फिर जन्म होता, है परन्तु किसीकी मृत्यु पर जितना कुहराम हिन्दुओंके घर मचता है; उतना दूसरोंके यहां नहीं देखा जाता।"

इस तर्क पर कुछ विचार पाठकोंके समक्ष रखा जाता है। मरनेके अवसर पर रोना-चिल्लाना न तो अवैदिक है, न ही अशास्त्रीय है, किन्तु वैदिक, शास्त्रीय एवम् ऐतिहासिक भी है। यह धृतिकी न्यूनताका चिन्ह भी नहीं है। 'धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयम्' (मनु० ६।९२) में धृतिको धर्मके प्रथम अङ्गमें अभिषिक्त करने वाली हिन्दु जाति भला धृति-विरहित कैसे हो सकती है ? मरनेके समय रोना-चिल्लाना आत्माकी अमरता तथा पुनर्जन्ममें अविश्वासका परिचायक भी नहीं है ऐसे कारणमें अत्यन्त रोना-चिल्लाना तो पुनर्जन्म वा आत्माकी अमरता न मानने वाले ईसाई-मुसलमानोंके घरमें होना चाहिए था, इन सिद्धान्तोंके मानने वाले हिन्दुओंके घर नहीं !

वस्तुतः इसका कारण यह है कि—हिन्दूजाति एक प्रेममयी वा अत्यन्त प्रेम करने वाली जाति है अतः मरणावसर पर उसमें रोना-चिल्लाना अपने हार्दिक प्रेमके कारण होता है। इसी आत्यन्तिक प्रेमके कारण ही इस जातिमें तीन पीढ़ी तक मृतकश्राद्ध भी प्रचलित है। इससे बढकर मृतकके लिए प्रेमका परिचय अन्य कहां से मिलेगा ? यह तो मरना है, जिसमें आत्यन्तिक वियोग हो जाता है; पर जीवनमें भी वियोग होने पर— कन्याका पितृकुलसे वियोग होने पर— उसके माता-पिता आदि रोते हैं, कन्या भी रोती है। इसमें वेदका भी अनुग्रह है। कन्याके रोनेके समय वर 'जीवं रुदन्ति' (ऋ० सं० १०।४०।१०) इस वेदमन्त्रको पढता है, इस पर स्वा० दयानन्दजीकी 'संस्कार-विधि' का १६६ पृष्ठ देखा जा सकता है, 'आश्वलायन गृह्यसूत्र (१।८।४) भी। इससे विलाप कर रहे हुओंका धृति-विरह कोई नहीं मानता, न ही 'वेदाद् धर्मोहि निर्बभौ' (मनु० ५।४४) इस प्रकार धर्मोपदेष्टा वेद धृति छुड़वाकर स्वयं धर्मत्याग का उपदेश ही देता है। सीताके वियोगके समय मर्यादा पुरुषोत्तमका विलाप—

दृष्ट्वा शून्योटजस्थानं विललाप पुनः पुनः।
(वाल्मी० ३।६०।७)

प्रसिद्ध ही हैं। रामके वनवासके समय कौशल्याका विलाप (अयोध्या० २० सर्ग), और अन्तःपुरकी स्त्रियोंका विलाप (४१ सर्ग में) महाराज दशरथका भी (४२ सर्ग में) विलाप प्रसिद्ध है।

कुन्तीके वन जानेके समय युधिष्ठिर आदियोंका विलापभी (महाभारत १५।१८।२) प्रसिद्ध ही है। श्री युधिष्ठिर में धृतिकी न्यूनता नहीं थी। जब जीवनमें भी वियोग में प्रेमवश इस प्रकार विलाप होता है; तब आत्यन्तिक वियोगमें आत्यन्तिक विलाप, रोना-चिल्लाना छाती-सिर-पीटना स्वाभाविक ही है। शोकाग्निका पुटपाक

की भांति भीतर रखना ठीक भी नहीं है। वह हृदयको हानि पहुंचाता है। बाहिर निकाला हुआ शोकका आवेग स्वास्थ्यको हानि नहीं पहुंचा सकता। 'उत्तर रामचरित'में ठीक ही कहा है—

पूरोत्पीडे तडागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते (३।२६)
तदद्याप्युच्छ्वासो भवति ननु लाभो हि रुदितम् (३।३०)

(तालावका प्रवाह कुछ २ निकलता रहे, तो ठीक होता है, नहीं तो उसका पानी एक दम बाहर निकल आता है।

तो इस शोकसे हिन्दू जातिका आत्माकी अमरता वा पुनर्जन्ममें अविश्वास सिद्ध नहीं हो सकता। नहीं तो फिर इस प्रकारके रोने-चिल्लानेका वर्णन कर रहा हुआ वेद तथा इतिहास आदि शास्त्र भी आत्माकी अमरता तथा पुनर्जन्मके अविश्वासी सिद्ध हो जाएं। पर आक्षेप्ता महाशय भी कदाचित् ऐसा कहनेका साहस न कर सकेंगे। मरनेमें रोना-चिल्लाना तथा स्त्रियोंका छाती पीटना जहां वैदिक है, वहां ऐतिहासिक भी है। इस विषयमें आक्षेप्ता महाशय तथा 'श्रीस्वाध्याय'के पाठकगण में दिङ्मात्र देखें।

श्री स्वा० दयानन्दजीकी 'संस्कारविधि'में विवाह प्रकरणमें **मा ते गृहेषु निशि घोष उत्थाद् अन्यत्र त्वद् रुदत्यः संविशन्तु। मा त्वं रुदती उर आवधिष्ठाः; जीवपत्नी पतिलोके विराज।**

यह मन्त्र लिखा है, यह 'मन्त्रब्राह्मण' (१।१।१-३) में तथा 'गोभिलगृह्यसूत्र' (२।१।२३-२६) में भी आया है। 'काठकगृह्यसूत्र'में भी 'मा त्वं विकेशी उर आवधिष्ठाः'(२८।४) यह मन्त्र आया है। यहां पर विधवा हो जाने पर रातको स्त्रीका दहाड़ मार कर रोना तथा छाती पीटना सूचित किया गया है। इस प्रकार—

'उत्वां मृत्योरपीपरं ''मा त्वा व्यस्तकेश्यो
मा त्वाऽघरुदो रुदन्' (अथर्व० स० ८।१।१९)

इस मन्त्रमें भी मरणके अवसर पर स्त्रियोंका बाल खोल कर रोना वर्णित किया गया है। 'रघुवंश' में—

'तत्र हूणावरोधानां भर्तृषु व्यक्तविक्रमम्।
कपोल-पाटलादेशि' (४।६८)

यहां पर पति के मरने पर हूणदेशकी स्त्रियोंके गाल पीटनेसे हो गई लालिमाका वर्णन बताया गया है।

इस प्रकार 'बोधायनगृह्यसूत्र'में भी 'मा त्वं विकेशी उर आवधिष्ठा जीवपत्नी' (१।४।२२) इस वरसे कहे मन्त्रमें विपरीतत सेसिद्ध होता है कि स्त्री पतिकी मृत्युमें सिर मुण्डवाए और छाती पीटे। गृह्यसूत्रोंमें यह उन-उन संहिताओंके मन्त्र हैं। आजकलकी वेदसंहिताओंमें भी यह बात स्पष्ट मिलती है—

प्रतिघ्नाना अश्रुमुखी कृधुकर्णी च क्रोशतु।
विकेशी पुरुषे हते' (अथर्व वेद--शौनक सं. ११।९ ७)
प्रतिघ्नाना संधावन्तु उरः पटूरावाघ्नानाः।
अघारिणीर्विकेश्यो रुदत्यः पुरुषे हते।
(अथर्व. सं. ११।९।१४)

यहां पर भी पुरुषकी मृत्युमें स्त्रियोंका छाती पीटना, चिल्लाना, सिर मुंडवाना, तथा कानके भूषण उतार देने और तेल न लगाने आदिका वर्णन भी आया है। जब इस प्रकारसे वेदमें भी वर्णन आया है, तो श्री सम्पूर्णानंद जी इससे हिन्दु जातिको क्यों कोस रहे हैं, इससे ब्राह्मणोंको कैसे सावधान कर रहे हैं ?

अब यह विषय इतिहासमें भी देखने योग्य है। 'महाभारत' में दुर्योधनके मरनेके समय उसकी मां गन्धारीका मुंह ढक कर रोनेका वर्णन आया है। जैसेकि आजकल की हिंदु स्त्रियां करती हैं। 'श्री स्वाध्याय' के पाठक गण देखें—

एतावदुक्त्वा वचनं मुखं प्रच्छाद्य वाससा।
पुत्र शोकाभिसन्तप्ता गान्धारी प्ररुरोद ह ॥
(शल्य पर्व ६३।६८)

इस प्रकार कुन्ती वा धृतराष्ट्र आदिके मरनेके समय युधिष्ठिर आदि पुरुषोंका विलाप भी प्रसिद्ध है। देखिये—

एतच्छ्रुत्वा च सर्वेषां पाण्डवानां महात्मनाम्।
निर्वाणं (मरणं) धृतराष्ट्रस्य शोकः समभवन्महान् ॥
(आश्रम वासिक पर्व ३७।३१)
अन्तःपुराणां च तदा महान् आर्तस्वरोऽभवत्।
पौराणां च महाराज! श्रुत्वा राज्ञस्तथागतिम् ॥
(३७।४०)

अहो ! धिगिति राजा तु विक्रुश्य भृशदुःखितः ।
ऊर्ध्व-बाहुः स्मरन्मातुः प्ररुरोद युधिष्ठिरः ॥
भीमसेन-पुरोगाश्च भ्रातरः सर्व एव ते (४२)
अन्तःपुरेषु च तदा सुमहान् रुदितस्वनः ।
प्रादुरासीन्महाराज ! पृथां कुन्तीं तथागताम् ॥
(मृताम्) (३७।४३)

इस प्रकार 'महाभारत' शल्यपर्वमें
ततस्ता योषितो राजन् ! रुदत्यो वै मुहुर्मुहुः ।
कुर्य्य इव शब्देन नादयन्त्यो महीतलम् ।
आजघ्नुः करजैश्चापि पाणिभिश्च शिरांस्युत ।
(२९।६-७-८)

यहां पर भी मरनेके समय रोना-चिल्लाना और सिर पीटना आदि वर्णित किया गया है ।

अब इस विषयमें महाभारतसे पूर्वके रामायण कालमें भी दृष्टि डालनी चाहिए । वाल्मीकि रामायण में
एवमुक्ता प्रदुद्राव रुदती शोकमूर्च्छिता ।
शिरश्चोरश्च बाहुभ्यां दुःखेन समभिघ्नती ॥
(४।१९।२०)

यहां बालीके मरनेके समय उसकी पत्नीका रोना, चिल्लाना, दोनों हाथोंसे छाती तथा सिर पीटना वर्णन किया गया है । इस प्रकार मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र द्वारा राजा दशरथका शोक भी द्रष्टव्य है—
तां श्रुत्वा करुणां वाचं पितुर्मरण-संहिताम् ।
राघवो भरतेनोक्तां बभूव गत-चेतनः ॥
(२।१०३।१)
प्रागृह्य रामो बाहू वै पुष्पिताङ्ग इव द्रुमः ।
वने परशुना कृत्तस्तथा भुवि पपात ह ॥ (३)
भ्रातरस्ते महेष्वासं सर्वतः शोककर्शितम् ।
रुदन्तः सह वैदेह्या सिषिचुः सलिलेन वै ॥ (५)
स तु संज्ञां पुनर्लब्ध्वा नेत्राभ्यामश्रुमुत्सृजन् ।
उपक्रामत काकुत्स्थः कृपणं बहु भाषितुम् ॥ (६)

यहां पर राम आदि सब भाइयोंका सीताके साथ विलाप प्रत्यक्ष है ।

इससे पूर्व अन्तःपुरके शोकका आदर्श भी दिङ्मात्र द्रष्टव्य है ।

हा भर्तेति परिक्रुश्य पेततुर्धरणीतले । (२।६५।२२)
ताभिः स बलवान् नादः क्रोशन्तीभिरुद्गतः ।
येन स्फीतीकृतो भूयस्तद्गृहं समनादयत् ॥ (२३)
यशस्विनं तं परिवार्य पत्न्यः
भृशं रुदत्यः करुणं सुदुःखिताः ।
प्रागृह्य बाहू व्यलपन्ननाथवत् ॥ (२।६५।२९)

यहां पर राजा दशरथकी पत्नियोंका एक-दूसरेकी बाहु पकड़ कर विलाप दिखलाया गया है जिसका आज भी अनुकरण किया जाता है । 'दिशं याम्यामभिमुखो रुदन् वचनमब्रवीत्' (२।१०३।२७) इस प्रकार मृत दशरथके जलदानके समय श्री रामका रोना दिखलाया गया है । यहां श्री राम युधिष्ठिर आदि को धृतिसे रहित, तथा आत्माकी अमरता एवं पुनर्जन्मादिमें अविश्वासी क्या माना जासकता है ? श्री परशुरामका २१ बार पृथ्वीको निःक्षत्रिय करना इस लिए था कि उसकी माताने अपने पतिकी मृत्युमें २१ बार छाती पीटी थी ।

इस विषयमें आदिमें वेदका प्रमाण दिया है, अब अन्तमें भी वेदका प्रमाण दिया जाता है । पाठक गण देखें—शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा, शोचमानाय स्वाहा, शोकाय स्वाहा, (यजुः वा० सं० ३९।११) 'यमाय स्वाहा, अन्तकाय स्वाहा, मृत्यवे स्वाहा, (१३) अन्त्येष्टि के इन मन्त्रोंमें मरनेसे शोक तथा शोक करने वालोंका सम्बन्ध बताया गया है । इसीके अनुकूल 'मनुस्मृति' ने
'अन्तर्गतशवे ग्रामे···रुद्यमाने समवाये जनस्य च'
(४।१०८)

यहां मरनेके समय लोगोंका रोना संकेतित किया गया है । इससे धर्म प्रवर्तक वेदादिशास्त्रों तथा धर्मलक्षणोंमें धृतिको आदिमें रखने वाले मनु महाराजको कोई धृतिकी न्यूनता करानेवाला मान सकता है ? इसी प्रकार 'इमा नारीरविधवा···अनश्रवः (ऋ० सं० १०।१८।७) इस वेद मन्त्रमें विधवाओंके 'साऽश्रु' कहनेसे मरनेके समय रोना वैदिक सिद्ध हुआ ।

अब या तो सभी शास्त्र भूले, या श्री सम्पूर्णानन्दजी ही भूले । यदि वे भूले, तो स्पष्ट हैकि अवशिष्ट स्थानोंमें भी

श्रीराष्ट्रालोकावलोकनम्

[अवलोककः—श्री पं० रमानन्द सारस्वत शास्त्री साहित्यरत्न]

(गताङ्क से आगे)

अब उसी शासनके आधार भूत विषय राष्ट्रकी परिभाषा प्रकृत श्लोकमें इस अवलोकनकी आरम्भिक पंक्तियोंमें व्यक्त की जा चुकी हैं। उसका सार यह है कि एक ऐसा भू भाग जिसमें बराबर संस्कृति वाले पुरुष रहते हों, और उस भू भागको अपनी पितृ-भूमि एवं पुण्य-भूमि भी मानते हों, 'राष्ट्र' कहलाता है। यही बात नागरिक शास्त्रके पण्डित भी मानते हैं। किंतु राष्ट्रके बारेमें जो आदिम मूल भावना थी वह (Divine Right Theory) अर्थात् 'ईश्वर दत्त अधिकार मत' की थी जिसके अनुसार कोई व्यक्ति विशेष ईश्वर द्वारा राजा रूपमें चुना जाता है, और ऐसे व्यक्ति विशेषका आज्ञा पालन सर्वसाधारणका धर्म हो जाता है। योरपके निर्बल राजाओंने जिनमें 'स्टूआर्ट्स' और 'बोर्बोन' तथा हालमें 'होहनजालर्न' राजवंशोंने इस मतसे बड़ा लाभ उठाया और शक्ति न होते हुए भी बहुत दिनों तक राज्य किया। किंतु अब इस मतको प्रायः विज्ञ स्वीकार नहीं करते और संसारके किसी भी भागमें जहां तक ज्ञान-रश्मियों का प्रकाश फैला है, कोई भी राजाको ईश्वरका प्रतिनिधि स्वीकार नहीं करता। इससे कुछ अधिक पुष्ट राष्ट्र सम्बन्धी मत (Social Contract) 'सामाजिक निर्णय' या समझौता माना जाता है। जिसके अनुसार राज्यके व्यक्तियों

उन्होंने वेदादिशास्त्रविरोधी तर्क करके ब्राह्मणों पर आक्षेप किया है। वस्तुतः आजकलके सुधारक अपने ज्ञानके अभिमानसे वेदादिशास्त्रोंको बिना देखे ही उनसे विरुद्ध एतदादिक तर्कवादोंको वर्तमान क्रान्तिप्रिय जनतामें स्थान पाने के लिए ही उपस्थित कर दिया करते हैं। तब वे वैदिकधर्मको कैसे जान सकते हैं ? इसलिए मनुजीने भी कहा है—

> आर्षं धर्मोपदेशं च वेदशास्त्राऽ विरोधिना
> यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः' (१२।१०६)
> योवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विजः
> स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेद-निन्दकः'
> (२।११)

काक आदि पक्षियोंका भी मरनेके समय शोकप्रकाशन प्रत्यक्ष है, पशु-पक्षियोंमें मनुष्यसदृश विकास नहीं होता, अतः उनमें न आनन्दकी मात्रा प्रस्फुट होती है, न शोककी तथापि उनमें भी—

> 'ददर्श भगवान् (वाल्मीकिः) तत्र।
> क्रौञ्चयोश्चारुनिस्वनम्' (वाल्मी १।२।६)
> तस्मातु मिथुनादेकं पुमांसं पापनिश्चयः।
> जघान वैर निलयो निषादस्तस्य पश्यतः।(२।१०)
> तं शोणित-परीताङ्गं चेष्टमानं महीतले।
> भार्या तु निहतं दृष्ट्वा रुराव करुणां गिरम्'
> (१।२।११)

एतदादि रूपमें क्रन्दन दिखाई पड़ा है, तो विकास वाले मनुष्योंमें यदि अति मात्रामें मरणावसरमें शोक होता है, इसमें जहां शास्त्रीयता है, वैदिकता है, वहां ऐतिहासिकता भी है, प्राकृतिकता भी है। तब प्रकृतिका अनुसरण करने वाली हिन्दु जातिमें इस पर कैसे आक्षेप हो सकता है ? इसमें हिन्दु जातिका प्रेममयी होना ही मुख्य कारण है, धृतिरहित होना मुख्य कारण नहीं। इससे उनको भी उत्तर मिल गया जो मरनेके समय स्यापा प्रथाको भी अवैदिकता वा अशास्त्रीयता कहनेका साहस करते हैं, वा इसे बन्द करवानेकी चेष्टा करते हैं।

के स्वेच्छा पूर्ण समझौता या सम्मत किसी विधानको स्वीकार किये जाने का फल ही 'राष्ट्र' माना जाता है। इस मतको हाब्स, लाक और रूसो जैसे महापुरुषोंने भी माना है। अर्थात् इस मतके अनुसार यह माना जाता है कि मनुष्यों को पारस्परिक विरुद्ध मतोंका किसी एक व्यवस्थित रूप देनेके हेतु कुछ नियम बनाने पड़े और उनको चालू करनेके हेतु किसी समितिका निर्माण करना पड़ा होगा और इस प्रकार क्रमशः पारस्परिक समझौते या सामाजिकता की भावना ही 'राष्ट्रवाद' की जननी रही है। जिस प्रकार स्विट्जरलैंडके छोटे-छोटे राज्य और अमेरिकाके उपनिवेश मिलकर एक राष्ट्रमें परिणत होगये उसी प्रकार ऐसी ही सामाजिक निर्णयकी भावना 'राष्ट्रवाद' की प्रसविनी रही है, ऐसा इस मतका आशय है। किंतु विचार करने पर यह बात ठीक नहीं जंचती क्योंकि पूर्व कालीन राष्ट्र निर्माणकी स्थितिमें क्या मनुष्यकी भावनाएं इतनी उच्च थीं? जो वे संघ बद्ध ऐसा विधान बना डालते? अवश्य ही सामाजिकताका भाव धीरे धीरे लोगोंमें उदित हुआ होगा। तब यह कहा जा सकता है कि आजकलके से राष्ट्रोंके निर्माणकी स्थितिमें या मनुष्यके प्रज्ञोन्मेषके पश्चात् सामाजिकताकी भावना राष्ट्र निर्माणमें बहुत अंशोंमें प्रभावशालिनी रही है और निर्माण-मूल अनेक कारणोंमें यह भी अन्यतम रहा है। परन्तु पूर्वोक्त विप्रतिपत्तियोंसे यही प्रमुख कारण नहीं माना जा सकता।

एक मत यह भी है कि राष्ट्र निर्माण जाति-संघर्षका फल है जिसके सबसे प्रमुख प्रचारक प्रो० वार्ड थे। उनके मतका सार यह है कि—

(१) जिस प्रकार आज की श्रेणियोंमें बिखरे मानव मिलते हैं, आदिकाल में इसी प्रकार टोलियोंमें वे इधर से उधर घूमते थे; परस्पर सम्पर्क स्थापित करनेमें किसी दलको वे शत्रु और मित्र मान लेते थे और शत्रु पक्षका विनाश एवं मित्र पक्षकी रक्षाका भाव नैसर्गिक रूपमें उदित हुआ। परिणाम स्वरूप युद्ध आरम्भ हुए और जब एक दल पराजित होता तो दूसरा विजयीका दास बन जाता इस प्रकार दास-प्रथा प्रारम्भ हुई।

(२) जब दास प्रथा कुछ भार-रूप सी प्रतीत हुई तब दासके स्थान पर विजितोंसे कर लेनेकी भावना उत्पन्न हुई और पराजितोंके राजनैतिक अधिकार छीनना एवं उन्हें नीच माननेका भाव उत्पन्न हुआ, इस प्रकार क्रमशः वर्ग-भेद और सामान्य एवं असामान्य सुविधाओंके कारण जाति-भेद की सृष्टि हुई।

(३) यद्यपि जाति-भेद आज तक चलता रहा है किंतु इसी बीचमें एक तृतीय श्रेणि मध्यम श्रेणि उत्पन्न हुई जो मुख्यतः व्यापार करती थी। धीरे-धीरे दोनों दलोंके साथ रहने से कुछ द्वेष कम हुआ और विजयी पराजितोंकी कन्याओंसे विवाह भी करने लगे और उन्हें भी मनुष्य मानने लगे। यहींसे लोगोंमें न्याय—प्रियताका भाव उत्पन्न हुआ।

(४) चौथी श्रेणिके आरम्भ होते ही धन सम्बन्धी एवं राजस्व सम्बन्धी नियमों और व्यवस्थाका निर्माण हुआ एवं निम्न दल वालोंको भी कुछ अधिकार प्राप्त हुए।

(५) जब संगठन इस प्रकार बढ़ने लगा तो सामाजिकता की सृष्टि हुई और आत्मीयताका भाव उत्पन्न हुआ, वही आगे 'राष्ट्र' रूपमें परिणत हुआ और ऐसे संघटन को राष्ट्र कहा जाने लगा। क्रमशः यह आवश्यकता हुई कि कुछ ऐसे व्यक्ति या कोई ऐसी संस्था हो जो सर्व साधारणको नियमों का पालन करा सकें। फल-स्वरूप शासन-पद्धतिका जन्म हुआ साधारणतया पद्धतिने जब 'एक व्यक्तिके निरंकुश शासन' का रूप धारण किया और यह परम्परा पैतृक सी समझी जाने लगी तब इसका विरोध एवं विभिन्न रूपों में विस्तार होने लगा और अनेक पद्धतियां उत्पन्न हो गईं।

(६) क्रमशः जाति द्वेष के न्यून होने, साथ रहने, आर्थिक हितोंकी समानताएं होने पर सद्गुणों या धर्म की प्रतिष्ठा हुई। प्रत्येक जातिको विशेष गुण बनाये रखनेका अवसर प्राप्त हुआ। इस प्रकार जातीय मूल तत्व मिलकर मिश्रित प्रथाएं हुईं।

(७) जब शत्रु आक्रमण प्रभृति कोई भारी संकट आता जातियोंमें विशेष भाव देशके प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाता जिसे देशभक्ति कहते हैं इस प्रकार संकटके समयमें भिन्न

जातियां मिलकर राष्ट्रका रूप धारण कर लेती थीं यही इस मतका सारांश है।

यद्यपि यह मत भी राष्ट्र-निर्माणमें बहुत अंशों तक माना जा सकता है किंतु इसे भी सार्वत्रिक नहीं कहा जा सकता। क्योंकि बहुतसे राष्ट्र भिन्न-भिन्न कारणोंसे भी बने हैं यद्यपि अधिकांश राष्ट्र (Struggle) संघर्ष अथवा (Competition) स्पर्धाके आधार पर बनते हैं, तथापि केवल मात्र जाति संघर्ष बहुत ही सङ्कीर्ण मत है।

इनके अतिरिक्त राष्ट्र निर्माणमें एक यह भी मत माना जाता है कि राष्ट्रकी उत्पत्ति पितृसत्ता वंश (जिसमें जीवन पर्यन्त पिता वंशका स्वामी होता है) अथवा मनुष्य परिवारसे हुई है, जिसमें क्रमसे पिता एवं ज्येष्ठ पुत्र शासक होता जाता है, और इसी प्रकार घरसे परिवार, परिवारसे कुटुम्ब और कुटुम्ब से जाति और जाति से राष्ट्र बन जाते हैं। प्रसिद्ध विद्वान् मार्गनने इस मतको पुष्ट करते हुए अमेरिकाके इराक्वील और अटजी जातिके आदिम निवासियों और पूर्वकाल के ग्रीस और रोमके निवासियोंका उदाहरण दिया है, यद्यपि यह मत भी किन्हीं अंशोंमें माना जा सकता है तथापि सार्वत्रिक इसे भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि बहुत से राष्ट्रोंमें यह कारण मिलता ही नहीं।

साधारणतया राजनीतिज्ञ राष्ट्र निर्माणमें जिस मत को मानते हैं वह ऐतिहासिक अथवा (Evolutionary Theory) विकासवादी मत कहलाता है। और यही इन सबसे कहीं अधिक सुन्दर मत भी है। इस मतका भाव यह है कि हम किसी विशेष या निश्चित स्रोतसे राष्ट्र निर्माणका दृढ़ सम्बन्ध नहीं लगा सकते। राष्ट्र संस्था न तो किसी अन्वेषणका फल है और न दैवयोगसे अकस्मात् प्राप्त वस्तु ही यह क्रमशः बनी है और जिस रूपमें आज मिलती है यह रूप इसे बहुत परिवर्तनोंके पश्चात् मिला है। इस रूपके पूर्ण होनेमें देश कालके अनुसार भिन्न-भिन्न शक्तियोंने योग दिया है। केवल जाति संघर्ष, रक्त सम्बन्ध, या संरक्षणकी आवश्यकताने ही इसे जन्म नहीं दिया प्रत्युत इसमें धर्म, जल-वायु, भौगोलिक स्थिति, सांस्कृतिकता तथा कला-कौशलकी उन्नति आदिने भी अपने-अपने ढङ्गसे इस पर प्रभाव डाला है। सारांश यह है कि समाज द्वारा राष्ट्रका जन्म हुआ और समाज की उन्नतिके साथ-साथ राष्ट्रकी समुन्नति एवं वृद्धि हुई। स्थितिकी अनुकूलतासे राष्ट्र कहीं दृढ़ बन गया और कहीं निर्बल ही रहा; अर्थात् राष्ट्र निर्माणमें स्थान और परिस्थितियां भी बड़ा महत्व रखती हैं। यदि राष्ट्र निर्माता शिक्षित एवं सभ्य हुए तथा वहां की जलवायु अनुकूल हुई और विशेष क्रांतियां न हुईं तो राष्ट्र सभी बातों में शीघ्र उन्नति करेगा। साथ ही पड़ौसियोंकी स्थिति भी राष्ट्रमें बहुत परिवर्तन लाती है जैसे पड़ौसी योद्धा हुआ तो राष्ट्रको भी सुरक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करना पड़ेगा और शक्ति केंद्रित होगी वा राज तन्त्रका जन्म होगा; यही बात प्राकृतिक साधनोंके पक्षमें भी है। ऐसा राष्ट्र या तो विजित या विजयी होगा अतः भौगोलिक साधन उसके रूप-परिवर्तनमें बहुत कुछ कारण होते हैं। इसके अतिरिक्त धन सम्पत्तिके कारण जहां सम्पत्ति पर व्यक्तिगत अधिकार स्वीकृत हुआ, उसके संरक्षणके साधन स्वामित्वके नियम आदि बनाये जाते हैं और उसके अधिपति या राज्य संगठन की प्रेरणा मिलती है, भूमिके परम्परागत अधिकारी बन कर सामन्तवाद जैसी शोषक प्रवृत्तियोंका जन्म होता है। यदि अर्थका विकेन्द्रीकरण हो जाता है तो राज्यका रूप प्रजावादी होता है। जहां पर उद्योग की अधिक वृद्धि होती है और वह कुछ व्यक्तियों तक सीमित रहता है तो वहां धनी राज्य पर प्रभुत्व जमाने का यत्न करते हैं। चरवाहों के जीवनने पितृसत्तावाद का रूप लिया, फल स्वरूप दासता का जन्म हुआ, इसी प्रकार कृषि करने वालों, शिकार, मछली मारने वालों, मजदूरों आदि की समाज श्रेणियां होनेसे भिन्न-भिन्न वर्ग एवं वादों पूंजीपति एवं मजदूरों आदिके दलोंका निर्माण होता गया जिनका आधार सम्पत्तिका स्वामित्व है।

इस प्रकार राष्ट्र-निर्माणमें सभी प्रवृत्तियां सहायक होती हैं। रोमन कैथोलिक धर्म, इस्लाम, इंग्लैण्डकी धार्मिक संस्था तथा प्योरिटन धर्म आदि भी राष्ट्र निर्माणके अङ्ग रहे हैं, यही नहीं; बहुत समयसे राष्ट्र धर्मका पर्यायवाची भी रहा है। इसके अतिरिक्त विजयाकांक्षाएं सैन्यस्थिति आदि भी राष्ट्र विस्तार में सहायक रही हैं—कभी-कभी तो ऐसे भी राष्ट्र बने हैं जो

निर्माण कर्ताकी मृत्युके बाद ही केन्द्रीय शक्ति शिथिल होनेसे ध्वस्त हो गये हैं जैसे सिकन्दरके बाद उसका राष्ट्र नष्ट हो गया। स्पेनके विजित देश स्वतन्त्र हो गये और महान् रोम साम्राज्य चूर-चूर हो गया।

इस प्रकार वस्तुतः राष्ट्र निर्माणका कोई एक ही हेतु नहीं बतलाया जा सकता और न हो ही सकता है फिर भी यह अवश्य है कि जिस जन-समूहमें भाषा, धर्म, संस्कृति, परम्परासे आदि समान हों, जिसमें भावों या हृदय की एकता हो, जो स्वतन्त्र हो, या स्वतन्त्र होनेकी उत्कट इच्छा रखता हो, परम्परा ऐसी सहानुभूतिसे आबद्ध हो जैसी अन्य किसी वर्ग या दलसे न हो, अथवा परस्पर ऐसा सहयोगी हो जैसे अन्योंसे न हो, एक ही शासन जो उसका अपना हो—में रहनेका इच्छुक हो—इन बातोंसे युक्त जन समूह 'राष्ट्र' कहलाता है। ऐसी समान भाषा-भूषा त्योहार आदि मनाने वाले व्यक्ति चाहे जिस देशमें हों 'राष्ट्र' कहलायेंगे। ऐसे जन समूह का जिस भूमिके प्रति उत्कट महत्त्व हो, चाहे धार्मिक कारणों चाहे भौगोलिक, वह भूमि उनकी 'राष्ट्र भूमि' मानी जाती है विद्वानोंका मत है।

यही सब संक्षेपमें, सार एवं सुन्दर सूत्र रूपमें प्रकृत ग्रन्थकार श्रीमदाचार्यचरणने व्यक्त किया है, जिसका अवलोकन पूर्व किया जा चुका है, वही प्रसङ्ग परिपुष्टिके हेतु पुनः दुहरा कर अग्रिम श्लोकाऽवलोकनारम्भ किया जाता है—

'समान-संस्कृतिमतां यावती पितृ-पुण्य-भूः।
तावतीं भुवमावृत्य 'राष्ट्र' मेकन्निगद्यते ॥'
(रा० ३)

अर्थात् समान संस्कृति वाले लोगों की जितनी अपनी पितृ भूमि, पुण्य भूमि होती है, वह (उतनी) सारी भूमि मिल कर 'एक राष्ट्र' कहलाती है ॥

एवमवलोकनेस्मिन् हि 'राष्ट्र रूपा' ऽवलोकनम्।
पितृ पुण्य भुवे तस्मै 'स्वराष्ट्राय' निवेदनम् ॥ शमिति॥

(क्रमशः)

★

आधुनिक विज्ञान और सनातनधर्म

[लेखकः—श्री १०८ शङ्कराचार्य श्रीसदानन्दगिरिजी महाराज]

[गताङ्क से आगे]

धर्म की आवश्यकताके विषयमें बृहदारण्यकोपनिषद्में एक मंत्र मिलता है, जिसका तात्पर्य है—प्रथम सृष्टि-कालमें सब ब्राह्मण थे; अन्य वर्ण नहीं थे। जब केवल ब्राह्मणोंसे काम न चला तब परमात्माने पालनादि कार्यके लिये क्षत्रिय वर्णकी उत्पत्ति की। ये भूलोकमें क्षत्रिय कहे गये और दैवजगत्में इन्द्र सोम, वरुण, रुद्र, पर्जन्य यम, मृत्यु और ईशान आदि नामों से अभिहित किये गये। फिर भी, केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय-वर्णसे अभीष्ट-सिद्धि न हुई क्योंकि रक्षार्थ अर्थोपार्जनकी आवश्यकता प्रतीत हुई; अतः परमात्माने वैश्य वर्णकी उत्पत्ति की; ये मानव लोकमें वैश्य कहलाते हैं और दैव-जगत्में गण नाम से पुकारे जाते में। देवताओंमें वैश्य हैं—अष्ट वसु, एकादश रुद्र, द्वादश, आदित्य, त्रयोदश विश्वदेव, उनचास मरुद्गण। तदनन्तर जब इनसे भी सबका काम न चला; तब सेवाके लिए परमात्माने शूद्र वर्णकी उत्पत्ति की। दैवजगत्में पोषणकारिणी

पृथ्वी इस वर्णके अन्तर्गत है और मानव-लोकमें शूद्र जाति है। इस प्रकार चार वर्णोंकी सृष्टि करने पर भी व्यवस्था नहीं चली। यथेष्ट वृत्ति सबमें बनी रही। कोई किसीका संचालक नहीं रहा। क्षत्रिय प्रबल होकर अन्य दुर्बल जातियोंको पीड़ित करने लगे तथा अन्य जातियोंमें यथेच्छाचार फैलने लगा। तब प्रभुने चतुर्वर्ण-संचालिका धर्मरूपी महाशक्तिकी स्थापना की, जिसकी आधीनतामें चारों वर्ण अनुशासित और सुनियन्त्रित हो गये।

इस प्रकार श्रुतिने विश्वसंचालकके रूपमें धर्मकी महत्ता का प्रतिपादन किया है। आर्य-शास्त्रमें मनुष्य जीवनके चार पुरुषार्थके लक्ष्य बताये जाते हैं—काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष। वास्तवमें मनुष्य संसारमें उत्पन्न होकर जो कुछ करता है; सभीका लक्ष्य इन चारोंमें कोई न कोई होता है। इसी कारण आर्य-शास्त्रमें साधनाके सभी अधिकारानुसार यही चार लक्ष्य बताये गये हैं। कोई साधक धर्मका लक्ष्य करके भगवान् की उपासना करता है, कोई अर्थ प्राप्तिके लिए उनकी पूजा में निमग्न होता है। कोई कामना-सिद्धिके लिये श्री भगवद् भक्त बनता है और कोई मोक्ष प्राप्तिके अर्थ प्रभुकी आराधना में रत रहता है। भगवान् अपने चारों हाथोंसे अपने चारों आर्त, अर्थार्थी आदि सभी प्रकारके भक्तोंको चतुर्वर्ग प्रदान करता हैं। धर्म अर्थ-काम-मोक्षरूपी चतुर्वर्गके प्रदानके लिये ही उनके चार हाथ हैं। उनका चक्रयुक्त हस्त धर्मका देनेवाला है, शंखयुक्त हाथ मोक्षदाता, गदायुक्त हाथ अर्थदायक और कमल-युक्त हाथ कामका देने वाला है।

इसी प्रकार शिवरूपमें भी 'परशु मृगवराभीति' हस्तोंसे भगवान् चतुर्वर्ग देते हैं। परशुधारी हस्त अर्थप्रद, मृगयुक्त हस्त कामका प्रदाता, वर-मुद्रायुक्त हस्त वर्णीय धर्मका देने वाला और अभय-मुद्रायुक्त हस्तसे भवभयनाशक मोक्षोपलब्धि होती है। अतः सिद्ध हुआ, कि जगत्‌में चतुर्वर्ग ही सकल जीवोंके सकल पुरुषार्थका लक्ष्य होता है। कर्म तथा अधिकार के तारतम्यानुसार लक्ष्यमें भी तारतम्य होता है। यही कारण है, कि कोई व्यक्ति या जाति अर्थ या कामको लक्ष्यकर और कोई व्यक्ति जाति या धर्म और मोक्ष का लक्ष्यकर पुरुषार्थ करती है। उपनिषद्‌में लिखा है—

'यदा वै करोति सुखमेव लब्ध्वा करोति नासुखं लब्ध्वा करोति, सुखमेव लब्ध्वा करोति'

अर्थात् सुख को ही लक्ष्यकर जीवनकी समस्त चेष्टायें होती हैं; दुःखके लिए किसी की कोई चेष्टा नहीं होती अतः धर्मार्थ काममोक्षादि किसी वर्गमें प्रवृत्ति सुखके लिए होती है। अर्थ-काम-लक्ष्य-परायण जाति अर्थ-काममें ही परम सुख मानकर उसीके लिये पुरुषार्थ करती है। धर्म-मोक्ष-लक्ष्यपरायण जाति धर्म-मोक्षमें ही आत्यन्तिक सुख जानकर उसीके लिए पुरुषार्थमें प्रवृत्त होती है। सुख-लाभका लक्ष्य सभीका है। केवल अधिकार तथा विचार-तारतम्यानुसार ही पुरुषार्थ-प्रवृत्तिमें तारतम्य दृष्टिगोचर होता है। दूरदर्शी प्राचीन ऋषि-महर्षियोंने विशेष विचारकर अर्थ-कामकी अपेक्षा धर्म-मोक्षको ही श्रेष्ठतर लक्ष्य माना है और इसीलिए आर्य-जातिके आत्यन्तिक सुख-साधन तथा जातीय लक्ष्य रूपसे धर्म-मोक्षको निर्णीत किया है। उन्होंने अर्थ-कामके प्रति उपेक्षा का उद्देश नहीं किया। वेदके संहिता तथा ब्राह्मण-भागमें अर्थ-काम-प्रधान प्रवृत्ति मार्गका इसलिए वर्णन है। महर्षियों ने केवल अर्थकामके लिये ही अर्थ-कामकी सेवा न कर धर्मानुकूल अर्थ-कामकी सेवा करनेको कहा है, जिससे अधर्म-मूलक अर्थ-कामके दुष्परिणामोंसे बचकर जीव धर्मानुकूल अर्थ-कामका सम्पादन कर अन्तमें आनन्दमय मोक्ष-पद पर प्रतिष्ठित हो। यही ऋषि-महर्षियोंके उपदेशका गम्भीर और सत्यनिष्ठ तात्पर्य है। अतः अर्थ-कामके लक्ष्यपर धीरतापूर्वक थोड़ा विचार करनेसे ही पता लग जायेगा।

अर्थ-काम जीवके चित्तमें विषय-वासनाका जन्म देता है। जीव अर्थ-कामका दास होकर इंद्रिय-सुखके लिये उन्मत्त हो जाता है। विषय वासनाका स्वरूप यह है—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्ण-वर्त्मेव, भूय एवाभिवर्धते ॥

(मनुसंहिता—अ० २ ॥)

विषय भोगके द्वारा विषय-वासना निवृत्त नहीं होती; किंतु घृत पुष्ट अग्निकी भांति उत्तरोत्तर वृद्धिंगत ही होती रहती है। इसलिये जिस जातिमें अर्थ-काम ही लक्ष्य है; धर्मानुकूल अर्थ-काम नहीं है; वह जाति वासनाका दास बन जाती है

और उसकी तृप्तिके लिये वह किसी प्रकारका भी अधर्माचरण करनेमें संकोच नहीं करती। कञ्चनमें आसक्त जीव मिथ्या, प्रतारणा, चोरी, छल कपट, हत्या, आदि सभी पाप-कर्मों द्वारा अर्थ संग्रहमें रात-दिन व्यग्र रहता है। कामासक्त जीव उससे भी अधिक पशुभाव धारणकर लेता है; क्योंकि एक तो काम सेवाके द्वारा कामाग्नि बढ़ती ही रहती है; दूसरे काम-सुखका अभिमान मात्र होनेसे नई योग्य-वस्तुओंमें कामुक स्त्री पुरुषों को अधिक सुखानुभूति हुआ करती है। अतः जिस जातिमें धर्महीन कामका ही लक्ष्य है; उसके स्त्री-पुरुषोंमें व्यभिचारका विस्तार होना स्वतः सिद्ध है। इसीसे विचार-वान् पुरुष समझ सकते हैं, कि धर्महीन अर्थ-कामपरायण जातिकी अंतिम दशा क्या होगी। अर्थ-लोलुपता बढ़ने पर प्रवंचना, ठगी, चोरी-छीना-झपटीकी ओर स्वभावतः प्रवृत्ति होगी और अपनी अर्थ-सिद्धिके बिना कुछ भी दिखाई न देगा। इससे अन्तर्विवाद, कलह, द्वेष और युद्धकी स्थिति सदा बनी रहती है और यह दोष जब समस्त जातिके अन्दर फैल जाता है; तब वह बल-पूर्वक दूसरेकी सम्पत्ति छीननेकी चेष्टा करती है, जिससे युद्ध और कलह का उदय होता है। और प्रेम तथा शांति कोसों दूर भाग जाते हैं।

युरोपीय युद्ध इसी अर्थ-कामपरताका विषाक्त परिणाम था और जब तक समग्र संसार धर्ममूलक अर्थ-काम-संग्रहकी ओर प्रवृत्त न होगा; तबतक इस प्रकारके संग्राम अपरिहार्य ही होंगे। कुरुक्षेत्रका महासमर—जिसकी तीव्र ज्वालामें चिर-कालके लिए भारतीय वीरता भस्मीभूत हो गई—भी कौरवों की अर्थ-कामपरायणताका ही चरम परिणाम था। अर्थ-काम तथा राज्यशक्तिके मदमें उन्मत्त होकर दुर्योधनने जब धर्मकी कुछ भी परवाह नहीं की और कपट, प्रवंचना तथा अधर्मका आश्रय लेकर धर्म-प्राण पाण्डवोंको अनन्त दुःख दिये, तभी कुरुक्षेत्रके महासमरका प्रारम्भ हुआ था। इसी प्रकार जगत्-प्रसिद्ध प्राचीन रोमन जातिका विनाश धर्म-हीन अर्थ-काम लिप्सा से हुआ था। यूरोपके नाना देशों-पर अधिकार-विस्तार तथा सम्पत्ति और प्रभुताके मदमें अत्यन्त उन्मत्त होकर रोमन जातिमें विषय-लालसा बहुत बढ़ गई थी। अति घृणित रूपसे काम सेवा, व्यभिचार, पशुतकके साथ भी अप्राकृतिक इंद्रिय संसर्ग ये सब उनके सामाजिक आचारमें परिगणित तथा निर्दोष आनन्दके उपादान माने जाने लग गये थे। थियेटर आदिमें प्रकाश्य रूपमें स्त्री-पुरुष मिलकर इन सब बीभत्स नारकीय दृश्योंको करने और देखने लग गये थे। तभी पापके गुरुभारसे वसुन्धरा कांप उठी और भीषण भूकम्पसे इटलीके अधिकांश भूभागका ध्वंस हो गया। तत्पश्चात् इसी अर्थमूलक पापके फलसे रोमन जातिकी स्वाधीनताका लोप हो गया और वह विदेशी जातियोंसे पददलित होकर नष्ट हो गई। यही सब धर्म हीन अर्थ-कामपरायणताका अवश्यम्भावी कुपरिणाम है। इसी कारण दूरदर्शी प्राचीन ऋषि-महर्षियोंने आर्य-जातिको अर्थ-काम न बताकर आत्माको मुख्य लक्ष्य बताया है और धर्मानुकूल अर्थ-कामकी सेवाकर अंतमें आत्माराम-अवस्था-प्राप्तिका उपदेश किया है।

पहले ही कहा गया है,—

'सुखार्थाः खलु भूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः।

अर्थात् जीवकी यावत् चेष्टायें सुख-लाभके लिये ही होती हैं; अतः अदूरदर्शी जीव अर्थ-कामकी सेवा सुख-लाभके लिए ही करता है। किन्तु उपरिलिखित वर्णनोंसे स्पष्ट होगा, कि अर्थ-काम जीवको वास्तविक सुख न देकर अन्तमें घोर दुःख कालमें ही दग्ध करते हैं। शास्त्रमें त्रिगुण-भेदसे जो तीन प्रकारके सुख बताये गये हैं; उसमें अर्थ-काम-जन्य सुख राजस है, जिसकी अमृतमयी अनुभूति होनेपर भी वह परिणाममें विषवत् दुःखदाई-प्राणघातक है! महर्षि पतंजलिने भी विषय सुखके साथ परिणाम दुःख, ताप दुःख, संस्कार-दुःख आदि अनेक प्रकारके दुःखोंका सम्पर्क बताया है और चित्त शांतिको ही सच्चा सुख कहा है! क्योंकि अर्थ-कामके सेवन में निरन्तर लगे रहने पर भी जीवकी तृप्ति नहीं होती तथा अतृप्त विषयी जीव अत्यन्त दुःखके साथ संसारको छोड़कर परलोकमें जाता है! विषयके उन्मादमें अनुष्ठित अधर्माचरणका स्मरणकर अनुतापके अनलमें दग्ध होने लगता है। वासनाके केन्द्र स्त्री-पुरुष-परिवारको सामने विलाप करते देखकर उसका हृदय विदीर्ण होने लगता है और इस प्रकार मुग्ध-भावसे जीवको मरणानन्तर निश्चय ही प्रेत-योनिप्राप्त होती है। प्रेत-योनिमें, वासना-विदग्ध जीवको दारुण दुःख भोगना पड़ता है। उसको उस योनिमें एक क्षणके लिये भी शांति नहीं मिलती। प्रेत-योनिके बाद ऐसे जीवको नरकमें भी विविध कष्ट भोगने पड़ते

चरक संहिता में आत्मविवेचना

[लेखकः—श्री० पं० नन्दकिशोरजी आयुर्वेदाचार्य]

चरक-संहितामें' में पठित श्लोक 'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्' यथार्थ है। उपनिषद्, दर्शनशास्त्र तथा अन्य शास्त्रोंमें वर्णित मूल सिद्धान्तोंका व्याख्यान इस संहिता में किसी न किसी रूपमें कर ही दिया है। आज विद्वान् पाठकोंके मनोरंजनार्थ संहितामें व्याख्यात आत्मविषयक कुछ श्लोक उद्धृत करता हूं :—

खादयश्चेतना षष्ठा धातवः पुरुषः स्मृतः।
चेतना धातुरप्येकः स्मृतः पुरुष-संज्ञकः ॥च शा.१-१६॥

पृथिवी—जल-अग्नि-वायु-आकाश और चेतनाका आधार मनसहित आत्मा यह पुरुष अर्थात् आत्मा नामसे कहे जाते हैं। और केवल चैतन्य शक्ति भी पुरुष आत्मा नामसे ही कही जाती है। आयुर्वेदकी दृष्टिमें यह दोनों ही लक्षण निर्दोष हैं। इनमेंसे ऊपर का लक्षण भौतिक चिकित्सामें अधिकृत पुरुष है यह आत्मा-जीवात्मा नामसे प्रसिद्ध नित्य और अनेक माने गये हैं। वैशेषिक दर्शनका भी यही सिद्धांत है। दूसरा लक्षण सांख्य तथा योगशास्त्र के अनुसार आत्म-तत्व का वर्णन करता है। जब प्राणी जन्म-मरण-भूख-प्यास आदि सहज व्याधियोंसे छुटकारा पाना चाहता है तो नैष्ठिकी चिकित्साके आधारभूत शुद्ध आत्म-तत्व का ज्ञान होना ही आवश्यक होता है और इस आत्मतत्वके विषयमें ही यह विवेचन है यह आत्मा स्वतःसिद्ध-प्रत्यक्षादि प्रमाणोंसे अज्ञेय और स्वतः प्रकाशमान है इस आत्माका वर्णन करते हुए महर्षि आत्रेय पुनर्वसुजी कहते हैं।

निर्विकारः परस्त्वात्मा सत्वभूत गुणेंद्रियैः
चैतन्ये कारणं नित्यो द्रष्टा पश्यति हि क्रियाः(च.सू.१-५६)॥

आत्मा—अतति व्याप्नोति सकलं चराचरं चिन्त्याचिन्त्यं वा स आत्मा) जो सर्वत्र स्थावर जंगम जगत्में तथा मन बुद्धि के चिन्त्य तथा अन्य भावोंमें भी जो व्याप्त है जैसा कि:—

.........तद् दूरे तद्वन्तिके
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्य बाह्यतः॥

ईशोपनिषद् ४में कहा है अर्थात् वह आत्मा दूर तक जहां तक देश और काल की कल्पना की जा सकती है वहां तक व्याप्त है वह आत्मा समीप अर्थात् देश और काल का व्यवधान न्यून होते-होते नष्ट ही हो जाता है वहां पर व्याप्त है अर्थात् वर्तमान क्षणमें भी आंख या इन्द्रियों के समीप ही नहीं अपितु इनके गोलकोंमें भी उपस्थित है सभी पदार्थों के भीतर और बाहर एक जैसा ही स्थित है इसलिये ही किसी कविने कहा है

रोम रोममें रम रहा रमापति राम।
अणु अणुमें दीखता मनमोहन घनश्याम॥

हैं और तदनन्तर वह पूर्वजन्मके कर्मानुसार हीन-योनि और अर्थोपार्जनकारी दरिद्र घरमें जन्म लेता है और आजीवन दुःख भोगता है।

इस प्रकार अर्थ-काम-वासना द्वारा नयेनये संस्कार उत्पन्न होकर जीवको जन्म-मरणके चक्रमें घुमाया करते हैं। क्षणभंगुर अर्थ-काम-मूलक विषयका परिणाम दुःखदायी होनेसे ही दूरदर्शी ऋषि-महर्षियोंने आर्य-जातिके लिए अर्थ-कामको जीवनका लक्ष्य न बनाकर आत्माको ही जीवनका लक्ष्य बताया है। और धर्मावलम्बन द्वारा मोक्ष-मार्ग-पर अग्रसर होकर उसी नित्यानन्दमय आत्माकी उपलब्धिका ही अत्यन्तिक लक्ष्यके रूपमें वर्णन किया है। यही मानव जीवन में अभ्युदय और निःश्रेयसप्रद धर्मकी आवश्यकता है, जिसका अनुभव कर लेनेपर जीव अशेष कल्याणका अधिकारी हो सकता है।

———

ऐसा वह पुरुष-संज्ञक आत्मा—निर्विकारः——जन्म- — मरणसे रहित निरवयव और निर्गुण होनेसे स्वरूप—तथा गुण संबन्धी वृद्धि तथा क्षयसे रहित है इस विषय का विस्तृत वर्णन 'न जायते-म्रियते वा० इत्यादि श्लोकों से गीतामें बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है

परः—सूक्ष्मः,—अत्यन्त सूक्ष्म होनेसे अतीन्द्रिय है। अथवा परः—अन्य अर्थात् जो-जो भी पदार्थ हमें दिखाई देता है उनसे परे-उनसे भिन्न और उनसे विलक्षण है 'नेति नेति०' शब्दों द्वारा इससे आत्मतत्वका निर्देश है परः—श्रेयान् अत्यन्त कल्याणमय—सुन्दर और प्रशस्य है।

अर्थात्—इन्द्रियाणि पराण्याहु रिन्द्रिये भ्यः परंमनः।
मनसस्तु परा बुद्धिः—यो बुद्धेः परतस्तु सः॥ गी०

शेष द्रव्योंमें से चक्षु आदि इन्द्रियोंमें—इन्द्रियोंसे मन-मन से बुद्धि और बुद्धियां अपेक्षा भी वह आत्मा ही श्रेष्ठ है। अथवा उत्तरोत्तर अधिक शक्ति वाले हैं अथवा उत्तरोत्तरका आश्रय लेकर ही पूर्वके कार्य कर सकते हैं।

सत्वभूत-गुणेन्द्रियैश्चैतन्ये कारणम्—वह आत्मा, मन आकाशादि पांच महाभूतों और इनके शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गंध इन गुणोंसे श्रोत्र-त्वचा-नेत्र-रसना-नासिका-गुदा-उपस्थ-हस्त-पाद इन इन्द्रियोंके संयोगसे ही चेतनता प्रकट करता है जैसे काष्ठादिमें अग्नि और मेघ या दूसरे जलों में विद्युत् उपस्थित होने पर भी बिना घर्षण या आघात के प्रकट नहीं होते हैं वैसे ही प्रत्येक कण-कण में व्याप्त आत्माकी चैतन्य शक्ति का प्रकाश, मन-भूत तथा उनके गुण और इन्द्रियोंके संयोग द्वारा ही होता है।

नित्य—अविनाशी है और नित्यत्वात् सर्वगतः—सर्वगतत्वात् स्थाणुः—स्थाणुत्वाद्-अचलः—अतः सनातनः—न कारणात्कुतश्चित् निष्पन्नः—अभिनव इत्यर्थः। यह दार्शनिक सिद्धांत है जिससे सर्वव्यापी—अविनाशी—निर्विकार-सनातन आत्मा सिद्ध होताहै इस आत्मातत्वका वर्णन श्री पूज्यपाद अमृत वाग्भटाचार्य जीने भी बड़े रोचक ढंगसे किया है।

अभिनव रमणीयं सच्चिदानन्द कन्दं
स्वनव नव विलासोल्लासनैक प्रवीणम्।
अनुभव सुरहस्यं मंगलं मंगलाना—
मधिहृदि परमेशं मौनमेवाश्रये ऽहम्॥ (आत्म १॥)

द्रष्टा पश्यति हि क्रियाः—वह साक्षी रूप से स्थित है निष्क्रय है कर्ता न होनेसे सुख दुःखादिक-भोक्ता भी नहीं है अतएव शांत रूप से स्थित होकर संपूर्ण जगत्की समस्त क्रियाओं—कार्यों—चेष्टाओंको प्रतिक्षण स्थाणु की भांति खड़ा रहकर देखता है। इसलिये ही 'साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च, ऐसा श्वेता श्वतरोपनिषद् में कहा गया है जब आत्मा का साक्षात्कार हो जाता है तब मनुष्यकी द्रष्टा रूपसे ही स्थिति होती है।

तदा द्रष्टुः स्वरूपे ऽवस्थानम् (॥यो० ८०॥)

क्रमशः

श्री रामपंचाशिका

❀ प्रणेता:—पं० छज्जूरामजी शास्त्री विद्यासागर ❀

पर ब्रह्म श्रीराम सकल सृष्टिके कर्ता।
स्थावर जङ्गम निखिल जगत्के हैं वे भर्ता ॥१
पितृवाक्यकारी उससदृश हुआ न कोई होगा।
चक्रवर्ती साम्राज्य छोड़ जो वन का कष्ट सहेगा ॥२

स्ववचन कारी दशरथसे भी बढकर हुआ न कोई।
प्राण त्याग किया पर उसने रघुकुल रीति न खोई ॥३
घोर तपस्याका फल उसकी पुत्र हुए श्रीराम।
ब्रह्मादिक जिसको करते हैं नित्यमेव हि प्रणाम ॥४

दिग्दिगन्त के वीरों से जब नहीं उठा हरचाप।
विस्मित हो वहां खड़े हुए थे लक्ष्मण युत भी आप ॥५
'निर्वीरा अब हुई धरा' सुन जनकोक्ति प्रचण्ड।
भग्न किया श्रीरामने क्षणमें हर को दण्ड ॥६

कहा जनकने विनयसे हे वीरोत्तम राम
लो सीता मम प्रिय सुता तव पत्नी अभिराम ॥७
जिसने अपने चरण स्पर्शसे तारी गोतमनारी।
भिलनीके भी वेर खाय हो गए मुदित अतिभारी ॥८

यह है सत्य प्रेमकी रीति ही न्यारी।
इसीलिए श्रीरामभद्र को प्रेम भक्ति है प्यारी ॥९
ब्रह्मज्ञान भी है ऊंचा, पर है खाण्डेकी धारा।
कहते हैं श्रीराम मुझे ज्ञानीसे प्रेमी प्यारा ॥१०

स्त्री गौरव रक्षाहित उसने प्रति वन सीता खोजी।
मर्यादा पुरुषोत्तम थे वे कभी न की मन मौजी ॥११
बिन लंका जीते ही उसने किया विभीषण लंकेश्वर।
इससे जाना जाता है श्रीरामचन्द्र थे जगदीश्वर ॥१२

महाबली बाली भी उसने एक बाण से मारा।
त्रिभुवनजेता रावण को सब कुल समेत संहारा ॥१३
धन्यवादका पात्र जटायु जिसने अपने तनको।
प्रमुदित दे अनुपम यश पाया चकित किया रावणको ॥१४

बोले राम लक्ष्मण यह गृध्र कितना उदार था मनमें ।
जिसने मम हित निज प्राण तजे रावणसे लड़ कर रणमें ।।
तिर्यग् योनी में भी ऐसे होते हैं धर्म प्राणी ।
परहित प्राणों को भी दे निज जाती करते मानी ।।१६

हे गृध्रराज, मम आज्ञासे जा स्वर्ग लोकमें पा सम्मान ।
इसका अनुमोदन सभी करेंगे देव धर्मराज श्रीमान् ।।१७
जिस प्रकार श्री तातचरण हमसे हैं पूज्य और मान्य ।
उसी प्रकार तुम भी हो हमसे पूजनीय और मान्य ।।१८

श्रीतात-चरणसे तू न कहना रावणसे सीताका हरण ।
कुल समेत मुझसे हत होकर स्वयं कहेगा वह रावण ।।१६
भ्राताभक्त भरतके सदृश हुआ न यह है सत्य ।
रामाज्ञापालन और जिसने करी तपस्या नित्य ।।२०

भ्राता लक्ष्मणके भी गुणका क्या हो सकता लेखा ।
बारह वर्ष साथ रह कर भी सीता मुख नहीं देखा ।।२१
धन्य धन्य सुग्रीव इसीसे मिले राम भी आकर ।
ऐहिक आमुष्मिक सुखभोग रामाश्रय को पाकर ।।२२

अंगद भी विख्यात हुए श्रीरामाज्ञा----पालन से ।
नल और नील हुए प्रख्यात सागर पुल बन्धनसे ।।२३
धन्यवादका पात्र विभीषण, राक्षस कुल में होकर ।
रामाश्रयसे हुआ अजर अमर वह और बना लंकेश्वर ।।२४

पतिव्रता सीता सी जगमें कोई नहीं हुई ।
खान पान जो छोड़ राजसी. प्रिय सह विपिन गई ।।२५
जगविद्रावण रावणने जब सोताको हर स्ववश किया ।
सामुदाम और दण्ड भेदसे बहु प्रकारसमझाय लिया ।।२६

तृणान्तरित हो निर्भय सीता बोली सुन हे रावण ।
इस क्षणभङ्गुर मम तनुका तू बन्धन कर अथवा मारण ।।२७
मैं दशरथ की हूं स्नुषा रामकी अति प्रिया भार्या ।
तेरेसे स्पृश्य नहीं हूं शूद्रसे यथा वेदि यज्ञीया ।।२८

सुनकर निर्भय वाक्य सती सीताके राक्षसराज ।
चला गया त्रिजटा को सौंपकर समझानेका काज ।।२६
धन्य पिता माता सीताके धन्य सखी परिवार ।
जगद्वीर रावण को डाटा दे दे कर धिक्कार ।।३०

लङ्कासे आने पर मारुति को पूछत भगवान।
क्या सीता मम हृदय जीविता जीवित है हनुमान् ॥३१
मारुति बोले, जीवित है तव मिलनतृषासे पूर्ण।
नाथ, करो अब रक्षा चलकर माता की अतितूर्ण ॥३२

बार बार अश्रू को पोंछ वह स्वल्प कथा कह पाई।
एक मास जाने की अवधी माताने बतलाई ॥३३
हे हनुमन, सीता दर्शन से तत्सन्देश दानसे तात।
हम सबकी रक्षा की तूने गात्रस्पर्श कर मुझ से भ्रात ॥३४

इस प्रकार कह कर मारुतिको परिष्वङ्ग दे किया कृतार्थ।
इससे बढकर दासजनोंका क्या हो सकता है परमार्थ ॥३५
लंकामें जाने पर सबका हुआ परस्पर युद्ध।
अंगदसे लागा लड़ने वह मेघनाद हो क्रुद्ध ॥३६

बालिपुत्र अंगद से निर्जित मेघनादने रणमें।
अदृश्य होकर नागपाशसे बद्ध किया सबको क्षणमें ॥३७
वैनतेयने आकर सबका नागपाश किया छिन्न।
लक्ष्मण बोला, मेघनाद, आ तुझे करूं मैं भिन्न ॥३८

क्या छिपकर वीरोंका लड़ना किसी शास्त्रमें आया।
बश जान लिया छिप कर ही तूने इन्द्रजीत पद पाया ॥३९
मेघनाद बोला रे मूरख, तव भ्राताने छिपकर।
महाबली बाली को मारा लज्जित न तू कहकर ॥४०

लक्ष्मण बोला, वाली-वधमें यह दूषण नहीं आता।
वाली को यह वर था जो सम्मुख होता मर जाता ॥४१
अति क्रुद्ध हो लक्ष्मणने फिर एक बाण ऐसा छोड़ा।
लगते ही, उसने मेघनादका सकल मनोरथ तोड़ा ॥४२

भक्षण करता कपि--सेना को कुम्भकर्ण भी आया।
रामभद्र ने उसको भी यमराज नगर पहुंचाया ॥४३
सुनकर राक्षस राज, सभी वृत्तान्त हुआ अतिक्रुद्ध।
रणमें आ उसने लक्ष्मणसे शुरू कर दिया युद्ध ॥४४

बोला रे लक्ष्मण, दुर्लक्षण, अब होजा हुशियार।
यह कह रावण ने उस पर किया अद्भुत शक्तिप्रहार ॥४५
उससे में लड़ना चाहता हूं जिससे भय खाकर सागर।
आकर गिरा स्वयं चरणोंमें बन्धवाया पुल अपने पर ॥४६

खरदूषण त्रिशिराका हन्ता कहां है अब वह राम।
अभी मार कर पहुंचाता हूं उसको यमके धाम।।४७
आए, राम रावणके सम्मुख, बोले सुन हे राक्षसराज।
सब तेरे दुष्कर्मोंका फल देता हूं मैं आज।।४८

यह कह कर भगवान् रामने एक वाण ऐसा मारा।
रावणका काम तमाम हुआ होगया प्रसन्न जगत् सारा।।४९
वाल्मीकी, रामायण लिखकर हुए ब्रह्मके तुल्य।
तुलसीदास जगत्में अपना रखते हैं बहु मूल्य।।५०।।

★

'मारक निर्णय सह लग्नेश फल'

(ले० राजवैद्य डाक्टर श्री अमरदत्तजी मिश्र, एल. एम. ए., एच. एम. डी. एस., "सी. एण्ड. एफ. ए.")

ज्योतिषशास्त्र मानवको प्रत्येक अवस्थामें भावि-संकटों की सूचना देने वाला एक महान् प्राचीन विज्ञान है जिसके सतत अध्ययन और पूर्ण शास्त्रीय ज्ञानके बल पर मृत्यु जैसी भयंकर काल कराल और मानवीय क्या, प्राणी मात्रको आत्मसात् करने वाली शक्तिके आक्रमणका निश्चित समय इस ज्योतिष विज्ञान द्वारा होता है। इस विज्ञानके ज्ञाता ग्रहस्थिति परसे निश्चित कर लेते हैं कि इस प्राणीको पूर्ण, मध्यम और अल्प आयु है तथा बालारिष्ट है—इसी संबंधमें ज्योतिष शास्त्रका आधार पाठकोंके लाभार्थ 'श्रीस्वाध्याय' की भेंट करता हूं जो आवश्यक है।

(१) ज्योतिषशास्त्रमें आयुर्निर्णयार्थ महर्षियोंने बड़े उत्तम सिद्धान्तों की रचना की है, सर्व प्रथम आयु जानने के विषयको तीन प्रकार विभक्त किया है—और प्रत्येक प्रकारकी निर्णय से पूर्ण, मध्यम और अल्प आयुका निर्णय हो जाता है।

(अ) प्रारम्भिक आयुर्ज्ञानार्थ निम्न पद्धति का आधार मान कर विचार करें इसे हम प्रारम्भिक (Primary dete nunattas of life a death) इस पद्धतिमें तीसरा भवन (मातृभवन) और अष्टम स्थान (मृति) यह (३।८) दोनों स्थान जीवनके हैं और दूसरा और सातवां स्थान मृत्यु का है।

(आ) दूसरे स्थानका स्वामी और ७ वें स्थानका स्वामी मृत्यु सूचक हैं, अगर इन दोनों स्थानोंके स्वामी पाप ग्रह हैं और पाप ग्रहोंके साथ सम्बन्ध करते हों या पाप ग्रह इन स्थानों में हों तो यह मृत्यु कारक होते हैं तथा ३।८ स्थानोंके स्वामी भी पाप ग्रहोंसे सम्बन्ध करते हैं। और पाप ग्रह उक्त स्थानोंमें बैठते हैं। तो सबसे बलवान् पाप ग्रहकी दशामें अथवा सबसे निर्बल पाप ग्रहकी उपदशामें मृत्यु होती है।

(२) उपरोक्त प्रकरणमें पाप ग्रहोंका सम्बन्ध २।७ के स्वामियोंके साथ बतला कर आयुका निर्णय किया है उसी आधार पर इस द्वितीय प्रकरणमें भी हम विशेषतया (Special death inflicting planets) मृत्युकारक ग्रहों को जाननेका प्रकार बतलाते हैं।

(इ) शुभ ग्रह २।७ स्थानके स्वामियोंके साथमें तथा ३।८ स्थानके स्वामियोंके साथ तथा २।७ के स्वामी ३।८

स्थानके स्वामियोंके साथ बैठें तो वही मृत्यु कारक होते हैं।

(३) पूर्व प्रकाशित पद्धति के आधार पर मारक ग्रह को यदि शनि देखता है या उस मारक ग्रहके साथ शनि बैठता है तो यह उग्र मारक योग बनता है। तथा ६।८ स्थानों के स्वामी उक्त मारक ग्रहके साथ दृष्टि सम्बन्ध या सह सम्बन्ध करते हों तो यह भी मारक योग बनता है। किन्तु उक्त संबंध पाप ग्रहोंका तथा शनिका या ६।८ के स्वामियों का जन्म कुण्डली में सबसे निर्बलग्रह से यदि होता है तो यह उग्र मारक योग बन जाता है।

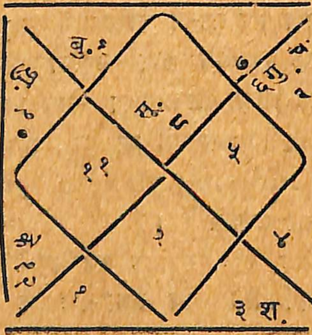
(४) यहां बताना है कि सूर्य और चन्द्र यह दोनों ग्रह मृत्यु कारक नहीं हैं और न उपरोक्त योगोंमें आने पर ही मृत्यु करते हैं एवं नवमेश भी। किन्तु यह सिद्धांत अनुभवमें सही सिद्ध नहीं हुआ है।

(५) अब प्रत्येक लग्नके मारक ग्रहोंका विवेचन किया जावेगा जिससे मारकका ज्ञान करके उपरोक्त सिद्धांतोंसे जांच कर देखें कि यह सही मारक हैं या नहीं, यहां प्रत्येक लग्नके मारक ग्रह उपरोक्त सिद्धान्त आधार पर ही लिखे जाते हैं :—

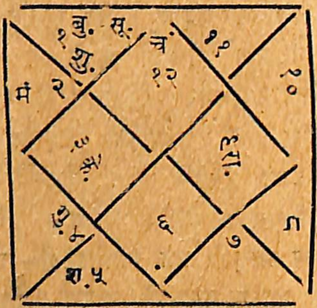
मेष—शुक्र, बुध	तुला—मंगल गुरु
वृष—मंगल गुरु	वृश्चिक—बुध शुक्र
मिथुन—मंगल गुरु	धनुः—बुध शनि
कर्क—शनि बुध	मकर—मंगल गुरु
सिंह—बुध शनि	कुम्भ—गुरु मंगल
कन्या—मंगल गुरु	मीन—बुध शुक्र शनि

उदाहरण

एक व्यक्तिका जन्म १।१२।१८८५ ई० को १ घ-३० पर हुवा है जिसकी ग्रह स्थिति निम्न है।



इस लग्न के मारकग्रह बुध और शुक्र हैं और शनि इसकी मृत्यु शनिकी दशामें राहुके अन्तर में हुई है अतः उपरोक्त सिद्धान्तानुसार शनि तृतीयेश है और अष्टममें बैठा है और अष्टमके स्वामी बुधसे दृष्ट है इसी प्रकार पाठक गण उपरोक्त सिद्धान्तानुसार अन्य लग्नोंका भी ग्रह-स्थितिसे जानें। जहां सूर्य और चन्द्रमा पाप ग्रहोंके साथ होवे तथा पाप ग्रहोंसे आक्रान्त होवे वहां पर यदि पूर्ण बली शुभ ग्रहकी दृष्टि होवे तब ही वह बालक जीवित रहता है अन्यथा आशु मृत्यु होती है। अतः प्रत्येक आयुर्दाय योगमें यदि लग्न और चन्द्रमा और सूर्य पापग्रहोंकी दृष्टिमें न होवें तथा न पाप ग्रह इनके साथ होवें तब उस बालकके जीवनकी आशा समझें अन्यथा बालक पञ्चत्वको चला जाता है। ज्योतिष सिद्धांतकी पूर्ण परीक्षा करके ही देशका कल्याण इस विज्ञानके द्वारा हो सकता है किन्तु शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करना महान् आवश्यक है, यथा एक व्यक्तिका ६।४।१८६१ ई० को ४६घ.३०प. पर जन्म होता है मीन लग्नमें ग्रह स्थिति निम्न है।



यह कुण्डली बड़ी विचारणीय है। इस लग्नके मारक ग्रह बुध. शुक्र-शनि यह तीनों हैं-लग्नेश उच्चका होकर पञ्चममें बैठा है न इसे कोई पाप ग्रह देखता न अन्य पाप ग्रहोंका ही सम्बन्ध है अतः यह सिद्ध होता है कि इसकी पूर्णायु है-ग्रह-चक्र इस कुण्डली वालेके बलवान् हैं अतः मारक ग्रह मृत्यु नहीं कर सकते अतः ऐसे योगोंको भी जानना आवश्यक है। गोचरका भी ध्यान रखना आयुर्दायके प्रश्नके लिये आवश्यक है। जब शनि जन्मके चन्द्रमासे गोचर

में व्यवस्थ होता है और मारकेशकी दशा चालू रहती है तब मरण होता है, यह भी ध्यानमें रखनेका है एक तीसरे व्यक्ति का जन्म ता० १८।३।१८६६ ई० मध्यान्हमें मिथुन लग्नमें हुआ। ग्रह स्थितिसे पता चलता है कि मिथुन लग्नके मारक ग्रह मंगल और गुरु हैं किन्तु यहां शनि रिक्तमें है और चन्द्रमासे भी सप्तममें है अतः शनि ही प्रबल मारक बना है यहां पर 'आ' में वर्णित आधारसे शनि उग्र मारक बना है इसी प्रकार प्रत्येक लग्नमें इस आधारसे मारक निर्णय करें। अब केवल पाठकोंके लाभार्थ-लग्नेशका द्वादश भावोक्त फल लिख देते हैं किन्तु साथ ही भावफल जाननेका विधान भी बतला देना ठीक होगा जिसके आधारसे भावोक्त फल कहनेमें सुविधा मिल सकती है। जिस भावको देखना तथा जिस भाव की विशेषता जानना है तो निम्न विषयों पर ध्यान देवें।

(१) प्रत्येक भावेशका दृष्टि सम्बन्ध, बल, सह संबंध, जानना आवश्यक है

(२) भावबल जानना भी आवश्यक है (३) भावकी स्वाभाविक स्थिति और भावेशकी तथा उस भावमें बैठे हुए ग्रहकी तथा उस भावको जो देखता है उसकी और ध्यान देकर जिस प्रकारका भी सम्बन्ध है उसे जानकर उसका बल जानकर फल लक्ष्यमें रखना।

(३) अन्य भावोक्त फलोंकी परिवर्तन करने वाले योगोंको भी लक्ष्यमें रखना चाहिये जो किसी भावेश की दृष्टिसे स्थानसे सम्बन्ध द्वारा होता है।

(४) ग्रहकी अन्य नीच मूल त्रिकोण स्थिति भावानुसार जानना आवश्यक है कि इस भावका ग्रह उच्चका है या नीचका या मूल त्रिकोणी।

(५) प्रत्येक भावके और अशुभ ग्रहों सह उस भावेशके नवांशकी ओर भी ध्यान देना आवश्यक है।

(६) प्रत्येक लग्नके आधारसे भावके लिये शुभाशुभ ग्रहोंकी भी जानना आवश्यक है तथा शुभ अशुभ ग्रहोंका भाव और भावेश के साथ कैसा संबंध है यह जानना भी आवश्यक है।

"लग्नेशका द्वादश भावस्थ फल"

(१) लग्नेश प्रथम भावमें होवें तो दो स्त्रियां स्वतंत्र व्यवसाई एक स्त्री पाणिग्रहीती और दूसरीसे प्रेम सम्बन्ध।

(२) लग्नेश दूसरे भावमें होवे तो, अधिक धन प्राप्त करने वाला शत्रुओंसे दुःखी सच्चरित्रवान नम्र, शौर्यवान होता है

(३) लग्नेश तीसरे भावमें होवे तो-बड़ा प्रतापी साहसी, भाग्यवान् प्रतिष्ठित-दो पत्नियां-बुद्धिमान और प्रसन्न होता है।

(४) लग्नेश चतुर्थ भावमें हो तो मातृ सुखसे प्रसन्न बहुत भाईयों वाला सुन्दर और अच्छे व्यवहार वाला होता है

(५) लग्नेश पञ्चम होवे तो प्रथम संतान नहीं जीती है और न सन्तान पक्षसे न विशेष प्रसन्न ही रहता है। छोटे दिमाग वाला और नौकरी पैसा वाला होता है।

(६) लग्नेश षष्ठमें होतो तृतीयेशवत् फल समझें किन्तु लग्नाधिपतिकी दशामें ऋणसे मुक्त हो जाता है।

(७) लग्नेश सप्तम भावमें है तो एक पत्नी होगी किन्तु वह अधिक काल तक जीवित नहीं रहेगी जीवनके अन्तमें संसारसे घृणा होगी और संतके समान जीवन व्यतीत करेगा।

(८) अष्टममें लग्नेश होवे तो जुवारी, पठित, गुप्तविद्याके ज्ञाता, और संकीर्ण और मलीन प्रकृति का होता है।

(९) नवममें लग्नेश होवे तो भाग्यशाली-दूसरों की रक्षा करने वाला, धार्मिक स्त्री लक्ष्मी संतान पक्षमें सुखी होगा।

(१०) लग्नेश दशममें हो तो चतुर्थवत् फल होगा किन्तु राज्य सम्मान प्रतिष्ठा और सफलता वाला है और लग्नेशके गुणोंके अनुसार उस विषयका विशेषज्ञ होता है।

(११) एकादशमें लग्नेश हो तो दूसरे भावके समान फल होगा व्यवसायमें उन्नति करने वाला होता है।

(१२) लग्नेश द्वादश भावमें हो तो अष्टमवत् फल जाने किन्तु तीर्थ स्थानों की यात्रामें उसका अधिक धन व्यय होगा और व्यापारमें कभी भी लाभ नहीं होगा।

★

अनुभूत-योग-माला

[लेखक—राजगुरु ज्योतिषालंकार श्री पं० तारादत्तजी राजज्योतिषी]

१. जिसकी जन्म कुण्डलीमें द्वितीय स्थानका स्वामी बली होता है और बुध केन्द्र एकादश वा त्रिकोणमें होता है वह ज्योतिर्विदोंमें श्रेष्ठ होता है। द्वितीय स्थानमें मिथुन राशिका बुध हो तो भी गणितज्ञ दैवज्ञ होता है।

धनेशे बलिनि केन्द्राय कोणे ज्ञे ज्योतिर्विदां श्रेष्ठः।
(जातकतत्व)

२. जिसकी जन्म-कुण्डलीमें बृहस्पति-शुक्र बुधके नवांशमें होते हैं, वह धर्माध्यक्ष होता है।

जीवाच्छौ ज्ञांशे धर्माध्यक्षः (जातकतत्व)

१. उपपत्तिः—बुध हस्तका अधिष्ठाता है।

करोति सौम्य चरणे च पाणौ। (जातकाभरण)

मिथुन राशि हस्तराशि है उसका स्वामी भी बुध है। हस्तकी अंगुलियोंके पर्वोंसे गणना करते हैं हस्तके अंगुलि पर्व नैसर्गिक-अङ्करूप हैं। इसलिए बुध अङ्क विद्याका अधिष्ठाता है। ज्योतिः शास्त्रमें अंकविद्याका प्राधान्य है। अतएव बुधका ज्योतिः शास्त्रका अधिष्ठातृत्व सिद्ध होता है।

द्वितीय स्थान नेत्र स्थान है।

कौटुम्बाद् भर्तव्यान् मुखं च दक्षिणाक्षि पूर्वार्थान् विद्याभुक्ति विशेषान्। (सर्वार्थ चिन्तामणि)

सूर्य त्रयी तनु है। सूर्यके नैसर्गिक स्थान सिंहसे नेत्रस्थान का स्वामी होनेसे भी बुधका वेद-नेत्र रूप ज्योतिः शास्त्रका अधिष्ठातृत्व सिद्ध होता है।

"ज्योतिर्विद्या मातुल गणित कार्यनर्तनवैद्य हास भी श्री शिल्पविद्यादि कारको बुधः। (बृहत्पाराशर होरा)

इस सूत्रमें बुधका ज्योतिःशास्त्रका अधिष्ठातृत्व स्पष्टरूपसे है द्वितीय स्थान वाणी और विद्याका स्थानभी है। ज्योतिःशास्त्र वाणी रूप और विद्या रूप भी है। इसलिए वाम नेत्रका अधिष्ठाता व्यय स्थान यहां नहीं लिया है। बुध केन्द्र-त्रिकोण-एकादशमें शुभफल देने वाला होता है।

इसलिए बुधके केन्द्र-त्रिकोण-एकादशमें होने पर ज्योतिः शास्त्रका ज्ञान सिद्ध हुआ।

उष्णजल सामान्य रूपसे सर्वत्र पाचन-कार्यमें उपयोगी है। परन्तु स्नेहके पाचन-कार्यमें उसकी विशेष रूपसे उपयोगिता है।

"स्नेहस्याजीर्णशङ्कायां पिबेदुष्णोदकं नरः

इसी प्रकार यहां बुधके केन्द्रादि स्थान बलकी विशेष रूपसे उपयोगिता है।

द्वितीय स्थान नेत्र स्थान और वाणी स्थान भी है। ज्योतिः-शास्त्र कर्मफल दर्शक होनेसे नेत्र रूप है। यह वाङ्मयभी है। इसलिए द्वितीयेशके बली होनेसे ज्योतिःशास्त्र का ज्ञान सिद्ध होता है। त्रयी तनु सूर्य लग्न-कारक है।

सूर्यो गुरुः कुजः सौम्य·· (बृहतपाराशर होरा)

इसलिए लग्नसे द्वितीय स्थान वेद-नेत्र रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार भी द्वितीयेशके बली होनेसे ज्योतिःशास्त्रका ज्ञान सिद्ध होता है।

द्वितीय स्थान वाणी-स्थान है। बुध वाणी-कारक है।

बुधो वाणी-प्रदायकः (बृहतपाराशर होरा)

इस प्रकार बुध-सादृश्यसे भी ज्योतिः शास्त्रका ज्ञान द्वितीयेशसे सूचित होता है।

इसलिए धनेशके बलवान् होनेसे और बुधके केन्द्र-त्रिकोण एकादशमें होनेसे ज्योतिः शास्त्रका पूर्ण ज्ञान सिद्ध होता है।

(२) बृहस्पति देव गुरु होनेसे और शुक्र दैत्य गुरु होनेसे धर्मका अधिष्ठाता है। बुध लिपि और वाणीका अधिष्ठाता है। इसलिए बृहस्पति और शुक्रको धर्मोपदेश और धर्म-

फलित ज्योतिष का प्रत्यक्ष अनुभव

जन्म-कुण्डली द्वारा रोग-ज्ञानका सहज उपाय

[लेखक—श्री पं० देवशरणजी मिश्र 'विमल' ज्योतिषाचार्य]

चन्द्रमासे आगे (घरमें) शनि पीछे मङ्गल हो या आगे मंगल पीछे शनि हो, और दोनों घर पाप ग्रहोंकी राशि हों तो जातकको सप्त यक्ष्मामें कोई अवश्य हो।

२. रवि केतु अग्नि राशि (१,५,९)के होकर लग्न या उसमें नवमांश में, चन्द्र, राहु सप्तम या उनके नवमांशमें हो कर परस्पर दृष्ट हों तो चेचकसे सौन्दर्य नष्टहो जाता है। तथा सर्पके काटनेसे कर्ण बधिर हो जाता है।

(३) रवि और राहु कीट राशि (४,८,१०,१२) या इनके नवमांशमें होकर अष्टम स्थानमें हो, तो उसे सर्प अवश्य डसेगा। पाप ग्रह उसे देखे तो मृत्यु हो, शुभ ग्रह देखें तो बच जाय।

(४) वायुराशि (३,६,७)का रवि और केतु अष्टममें हों या इन राशियोंके नवमांशमें हों, मंगल या शनि इन्हें देखे तो अर्शरोग (बवासीर) अवश्य होती है।

(५) रवि, राहु, शनि अथवा गुरु, शनि, राहुका योग कुण्डलीमें चतुर्थ भाव या उस राशिके नवमांशमें पड़े तो उसे वात व्याधि अवश्य हो। यदि इन सबका योग वायु-राशिका हो एवं जल (४,८,१२,१०)राशिस्थ पापग्रह देखें तो पक्षा घात तक होता है।

(६) अग्निराशिका मंगल शिर रोग पैदा करता है। विस्फोट (८) राशिका मंगल रक्त-पित्त प्रधान करता है।

(७) अष्टममें रविचन्द्र योग कफ रोग या जल-भय देता है!

(८) छठे स्थानमें बुध-शनि योग जल-राशिका हो तो फाइलेरिया, हाइड्रोसील पैदा करता है।

(९) जिसके अष्टममें बुध-शनि योग जल राशिमें हो, उसे वायु-राशिका मंगल देखे तो ग्रहणी, पेचिश, आंवरोग उत्पन्न करता है।

(१०) अष्टममें शनि-मंगलका योग हो, उसे चन्द्रमा देखे तो काला ज्वर, टाइफाइड आदि रोग होता है।

(११) अष्टम स्थानमें शुक्र राहुका योग हो, तथा जल राशि केतु उसे देखे तो दमा या खांसीकी बीमारी होती है।

(१२) अष्टममें बृहस्पति-शनि-योग हो, तथा जलस्थ राशि देखे तो कालरा (हैजा) होता है।

(१३) अष्टममें शुक्र, चन्द्र, राहु, योग हो तो बीर्यक्षय रोग होता है।

★

लिपिके लिए बुधकी शक्तिका अंश आवश्यक है! अतएव बृहस्पति और शुक्रके बुधके नवांशरूप प्रधान अंशमें होनेसे धर्माध्यक्ष योग सिद्ध होता है।

इस लेखके साररूप स्वनिर्मित श्लोकः—

ज्योतिः शास्त्र स्वामी ज्ञो धनपो यतश्च नेत्रेशः।
धनेशे बलिनि केन्द्राय कोणगे ज्ञे ज्योतिर्विदां श्रेष्ठः॥
लिपि वाणी नाथोज्ञः सुरदैत्यगुरू यतश्च धर्मेशौ।
यदि जीवाच्छौ ज्ञांशे धर्माध्यक्षस्तदा भवति॥

★

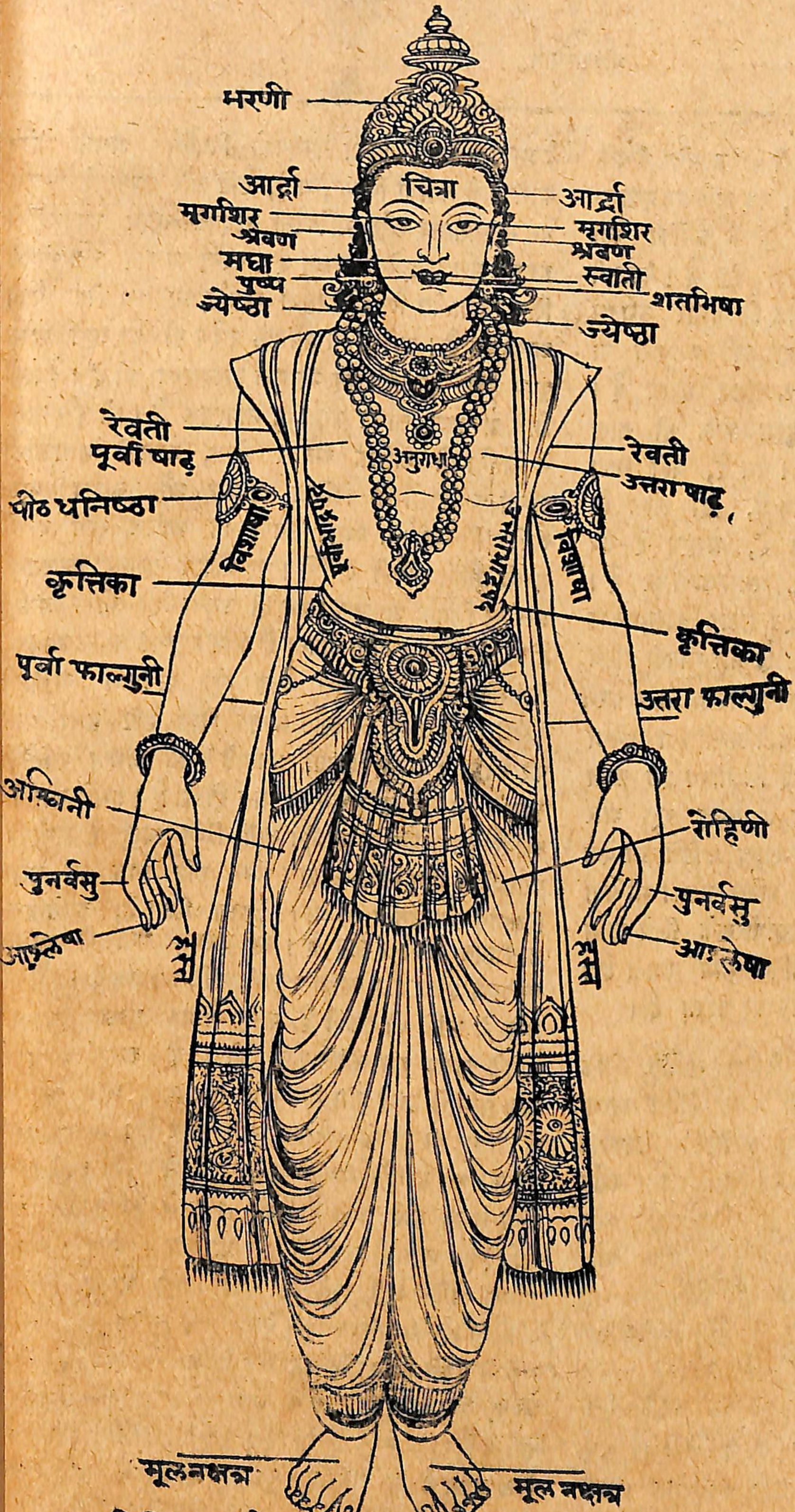
सामुद्रिकमें जीवन रेखा

(ले० राजवैद्य श्री डा० अमरदत्तजी मिश्र, एच० एम० डी० एस०, एस्ट्रोलोजर)

जीवन रेखा अंगुष्ठ मूलके नीचे मंगलके क्षेत्रसे गुरुके स्थानके नीचेसे चल कर मणिबंधकी ओर जाती है, यह रेखा समूचे शुक्र पर्वतको घेर लेती है तर्जनी और अंगुष्ठके बीचसे निकल कर यह रेखा मणिबंधकी ओर जाती है। इसे नवीन मतावलम्बी लोग जीवन रेखा पितृ-रेखा कहते हैं किन्तु प्राचीन सामुद्रिकविदोंने कनिष्ठिकासे चल कर अर्थात् बुधके पर्वके नीचेसे चलकर तर्जनीकी और गुरु पर्वतकी ओर जो जाती है उसे 'हृदय रेखा' जीवन रेखा माना है। अब पाठकों के लाभार्थ इस रेखाकी यथाशक्य स्थितियोंका वर्णन किया जाता है जिन्हें पढ़कर अपने हाथसे जीवन सम्बन्धि ज्ञान आप सरलतासे प्राप्त कर सकते हैं।

(१) जो जीवन रेखा शुक्रके पर्वतको घेर कर मणिबंध की प्रथम रेखा तक हो और इसका झुकाव दाहिनी तरफ हो तो वर्ष १०० की आयु होती है परन्तु रेखा स्पष्ट-सुन्दर-अखण्डित न चौड़ी न गहरी हो तब १०० वर्ष ही आयु समझे (२) जीवन रेखा यदि दोनों हाथोंमें खण्डित है तो अनेक कष्ट भोगने वाला है परन्तु मंगल रेखा, 'सहायक रेखा कहलाती है' जो टूटी न हो तो भयानक मौतसे भी बचा देती है। (३) जीवन रेखा बिगड़ी हुई हो या थोड़ी हो तो बारम्बार रोग भोगनेकी सूचना देती है। (४) जीवन रेखाके द्वारा दाहिनें हाथ से रोग सम्बन्धी ज्ञान और बांये हाथके द्वारा जीवन रेखा से शरीर रचनाका ज्ञान होता है—किन्तु रोग सम्बन्धी ज्ञान और बांये हाथके द्वारा जीवन रेखासे शरीर रचनाका ज्ञान होता है—किन्तु रोग सम्बन्धी जानकारी में दोनों हाथोंको मिलाकर परिणाम कहना चाहिये। (५) जीवन रेखा पूरी होवे तो पितृ-सुख पूर्ण होता है (६) जीवन रेखा चल कर कुछ दूरी तक साधारण सी हो और फिर घूमकर चन्द्र पर्वत पर नीचे जावे तो भार्या सम्बन्धि दुःखको बतलाती है—यदि यह रेखा स्त्री के हाथमें हो तो गर्भाशय विकार या गर्भपात आदिकी सूचक होती है (७) टूटी हुई जीवन रेखा भयंकर रोग सूचक है। यदि एक हाथमें ही टूटी है तो रोगसे बचनेकी सूचक दोनोंमें होनेसे मृत्यु-सूचक है। (८) काले रंगकी चौड़ी जीवन रेखा बेईमान, चिड़चिड़ा, डाही, दुर्बलकी सूचक है। (९) जीवन रेखा साफ कटी न हो तो दीर्घायु-शुद्ध स्वभाव वाला, सुन्दर और दृढ़ देह वाला होता है। (१०) जीवन रेखा जंजीरकी तरह या जगह जुड़ी हो तो खराब स्वास्थ्य सूचक होती है। (११) जिस २ भागमें जंजीरनुमा हो उस उस अवस्थामें खराब स्वास्थ्यकी सूचक होती है। (१२) मोटी और पतली जीवन रेखा कभी स्वस्थ कभी रोगीकी सूचक है। (१३) जीवन रेखा बड़ा घेरा बना कर लगभग चन्द्र पर्वत तक आ जावे तो पूर्ण दीर्घायु होनेकी सूचक है। (१४) जीवन रेखा एक वर्ग क्षेत्रमें टूटी हैं तो भयंकर व्याधिसे बचनेकी सूचक है और यह चिन्ह देशान्तरमें भ्रमण करानेका भी सूचक है। (१५) जीवन रेखा हृदय रेखा और मस्तक रेखासे मिल जाये तो सहसा मृत्यु की सूचक है। (१६) जीवन रेखा यदि गुरुके पर्वत पर किसी आड़ी रेखा से छेदित हो तो उन्नतिमें बाधा होनेकी सूचक है तथा निराशाके कारण मनोवसाद सूचक है (१७) जीवन रेखा से एक साख निकल कर गुरुपर्वत पर जाये तो मनोभिलाषायें पूर्ण होनेके लक्षण हैं और यशस्वी बनानेका भी चिन्ह हैं। (१८) यदि जीवन रेखा टूटी फूटी न होवे तो अपने परिवारमें प्रधान और सबको सुख देने वाला होता है। (१९) जहां दो जीवन रेखा हो वहां भीतर वालीको मंगलकी रेखा (सहायक रेखा) कहते हैं, यह रेखा स्वास्थ्य लाभ और आनन्द देने वाली है और कभी कभी किसी स्त्रीके द्वारा थोड़ी जायदाद पानेकी सूचना है—यदि यह मंगल रेखा तलवारके समान हो तो कष्टोंसे बचाने वाली होती है ऐसी रेखा वाला व्यक्ति अधिक सहनशील होता है। स्त्रीके हाथमें मंगल रेखाका होना शुद्ध चरित्रका लक्षण है (२०) जीवन रेखा अंगूठेके पाससे निकल कर शुक्रके स्थानको टुकड़ा देवे तो सन्तान रहित होनेकी

(शेष पृष्ठ ३७ पर)



अखिल पूर्णरूप श्री विष्णु नक्षत्र पुरुष

काल और श्री विष्णु नक्षत्र पुरुष पर अध्यात्म दृष्टि

•

लेखक—
रा. ज्यो० श्री पं. लक्ष्मीनारायणजी त्रिपाठी ज्योतिषाचार्य

•

संसारमें प्रत्येक वस्तु अकारण नहीं होती। वस्तु मात्रका कोई न कोई कारक अवश्य होता है। अतः संसारका भी कोई कारण अवश्य है। उसीका नाम परब्रह्म है। वही इच्छा करता है कि "एको ऽहं बहु स्याम्" तब सृष्टि होती है। वही काल पुरुष है, जो मन्वन्तर युगसे लेकर अहर्गण तक अनेक भेदोंमें विभक्त हो, संसार उत्पन्न करता, उसका पालन करता और अन्तमें अपनेमें उसे समा लेता है। इस प्रकार भारतीय संस्कृतिमें ब्रह्म स्वरूप काल ही जगदाधार है। जगत् उसकी उपेक्षा कर क्षण भर भी ठहर नहीं सकता।

हम जिस जगत्में रहते हैं, उसका नियामक काल सूर्य रूपसे अपनी कलाका विस्तार करता है। ग्रह - उपग्रहोंकी सृष्टि करके

उनमें नाना प्रकारके प्राणधारियोंकी उत्पत्ति स्थिति और विनाशकी लीला-रचनामें रत हुआ, वह अतिशय प्रकाशमान हो रहा है। प्रजाको उत्पन्न कर उसके कर्मोंका वही द्रष्टा है और वही उन कर्मोंके परिपाकका हेतु है! कालकी कृतिको देखकर सभी हैरान हैं! यहां तक कि हमारे उच्चतम नेता भी जो कि भारतीय संस्कृतिकी बड़ी-बड़ी व्याख्या या डींग हांकते हैं वे भी कालकी गतिसे अत्यधिक हैरान हैं। अच्छे बुरे जीवन का निर्माण करता हुआ काल ही काल लीला कर रहा है। काल ही मृत्यु है। यम है, वही ब्रह्मा है, विष्णु है और वही महाकाल शिव है, वही लोक है; पर लोक है, सत्य है, असत्य है; शून्य है, अशून्य है—सब कुछ है। कालकी महिमा अनन्त है, अगम-अगोचर है। उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इस प्रकार कालमानका क्षेत्र अन्य क्षेत्रोंकी अपेक्षा बहुत ही श्रेष्ठ है और मानवी दृष्टिमें परिणत कर मनुष्यको भौतिक कार्य कलापमें प्रेरणा प्रदान करने वाली दिव्यज्योतिर्मय शक्तियोंकी गतिविधिकी आलोचना करनेका मार्ग प्रशस्त करता है। यह सत्य ही है कि मानव इस काल के वर्तमान रूपको तो देखता ही रहता है, किन्तु भूत और भविष्य उसकी दृष्टिसे परे है। बेचारा स्थूल दृष्टिसे उसे देख नहीं सकता। यद्यपि योगी जन योगज ज्ञानसे उसका भी पता पा जाते हैं। फिर भी वह मार्ग सर्व साधारणके लिये सुगम नहीं। अतएव भारतीय वाङ्मयमें ज्योतिष मार्ग बनाया है। मानव उससे बहुत कुछ भूत-भविष्यको जान सकता है।

हमारा यह ज्योतिष मार्ग अन्य विविध मार्गोंसे जोकि बुद्धिके विलास मात्र हैं, बुद्धि-कालकी कला होनेके कारण कालगत पूर्वापर सम्बन्ध ही कार्य कारणकी भावनाका उत्पादक या स्वरूप है। और यही समस्त विज्ञान और दर्शन का हेतु है। यही क्यों सारी विद्यायें सारी गवेषणायें और सबप्रकार की खोजमें कार्य कारण सम्बन्ध ही प्रबल और प्रथम हेतु होता है। बुद्धिवृत्ति भी कार्य कारणमय ही होती है। अतएव कालकी एक कलामें ही सारी ज्ञान लीलायें होती हैं। इसलिए काल ज्ञान यदि मनुष्यकी राष्ट्र अथवा विश्वकी विद्या-बुद्धि, धर्म-अधर्म, उत्थान-पतन, सुख-दुःख, आदिका निर्देश ज्योति लोक ग्रह-उपग्रहादि के प्रकाशके अनुसार करता है! तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं। सच्चे दैवज्ञ इस जगत्के क्रिया कलापको नियन्त्रित अथवा प्रेरित करने वाले ग्रहोंकी स्थिति, गति, दृष्टि और सम्बन्धके आधार पर भूत-वर्तमान और भविष्यकी सूक्ष्मसे सूक्ष्म घटनाओंको हस्ता मलकवत् देख सकता है। परन्तु कालका द्रष्टा होनेके लिए कालातीत स्थितिमें रहना अर्थात् आत्मस्थ होना परम आवश्यक है। अनेकानेक प्रपंचमें सदैव ही रत रहने वाला पुरुष दैवज्ञ कहलाये यह भी एक हास्यास्पद ही है। दैवज्ञके लिये अध्यात्म साधन करना परमावश्यक है! जो इस मार्ग में जितना ही अधिक अग्रसर होगा, कालकी कलाओंकी लीला, ज्योतिर्लोकके विभिन्न प्रकाश और उनका पारस्परिक मिश्रण तथा प्रभाव उतना ही अधिक स्पष्ट रूपसे उसके सामने दीखने लगेंगे। यह विज्ञान इतना प्रशस्त है इस पर जितना अभ्यास, मनन हो उतना ही थोड़ा प्रतीत होता है! कारण काल अनन्त है और मनुष्यके प्रपंच अधिक, फिर भी गुरु—कृपा द्वारा दैवज्ञ सूक्ष्म अध्यात्म अभ्यासी कर्मठी, ज्योतिर्लोकका दर्शन गणित दिव्य दृष्टि द्वारा प्राप्त कर सकता है। वह दिव्यता साधनाके बलसे अथवा शक्तिकी कृपासे इन चर्म चक्षुओंमें ही प्राप्त होती है। हमारे भारतीय ज्योतिर्लोकका आधार दूरबीन नहीं, दिव्य चक्षु हैं। महर्षि पतञ्जलिने योग साधनके द्वारा दिव्य दृष्टि प्राप्त कर नक्षत्र विज्ञानके अध्ययनका जो मार्ग प्रशस्त किया है, उसके द्वारा प्राप्त ज्ञान निर्भ्रान्त ज्ञान है। वह प्रत्यक्ष प्रमाणके आधार पर प्राप्त होता है। वह प्रत्यक्ष भी यौगिक प्रत्यक्ष है। लौकिक प्रत्यक्षमें भ्रांति हो सकती है, परन्तु यौगिक प्रत्यक्ष तत्वदर्शी होनेके कारण सदा भ्रांति-शून्य होता है। आधुनिक दूरवीक्षण यन्त्रोंके द्वारा प्राप्त ज्ञान लौकिक प्रत्यक्ष और अनुमान के आधार पर होनेके कारण अनाप्त होता है। अतएव इसमें भ्रांति होती है और अगले अन्वेषण अपने पूर्वके अन्वेषणोंके लिये बाधक होते जाते हैं। इस प्रकारके संशय ग्रस्त और अनिश्चित ज्ञान योगजदृष्टिके द्वारा प्राप्त आर्ष ज्ञानके सम्मुख प्रमाण कोटिमें नहीं रक्खे जा सकते। इस कारण भारतीय ज्योतिर्विज्ञानकी महिमा निर्विवाद सिद्ध होती है। यौगिक संयमसे केवल आकाशीय-ग्रहों नक्षत्रों आदिका ज्ञान ही नहीं होता, बल्कि तद्-द्वारा होने वाले जीवन-जगत्के शुभाशुभ कर्म फलोंका ज्ञानभी होता है। इतना विवेचन करने पर सिद्ध होता है कि भारतका उच्चतम सुस्वाध्याय दृष्टि कोण

आध्यात्मिक होनेके कारण सर्वत्र, यहां तक कि ज्योतिर्लोकोंमें भी धर्म-तत्वकी ही चमक दिखलाई पड़ती है—यही कारण है कि चिरकालसे दृष्ट और अनुभूत होनेके कारण हमारा दैवी विज्ञान सर्वथा स्वाध्यायपूर्ण है, अतएव भारतीय ज्योतिष-शास्त्रमें भगवान् श्री विष्णुके शरीरांगोंसे अभिजित् सहित अश्विन्यादि अठ्ठाइस नक्षत्रों की उत्पत्ति मानी गई है। भगवान्ने उन्हें उत्पन्न कर कृपावश अपने शरीरमें तत्तत् अंगोंमें निवासार्थ स्थान भी दिया। उस श्री विष्णु दैवत मूल पुरुषके किस किस अंगसे कौन कौन नक्षत्र उत्पन्न हुआ और उसका शरीरमें कहां कहां निवास है, (यह चित्रसे स्पष्ट है।

श्री भगवान विष्णुकी दिव्य छवि नक्षत्र स्थिति निम्न लिखित है—दोनों पैरोंसे मूल नक्षत्रकी उत्पत्ति हुई जहांसे जो नक्षत्र उत्पन्न हुआ उसका निवास उसी अंगमें माना गया है! इस प्रकार (१) पैरोंमें मूल नक्षत्र, (२-३) अश्विनी रोहिणी दोनो जंघाओंमें (४-५) पूर्वाषाढा उत्तराषाढा दोनों उक्त स्थानोंमें, (६-७) पूर्वा फाल्गुनी-उत्तरा फाल्गुनी दोनों गुह्य स्थानोंमें (८) कृत्तिका कमरमें (९-१०) पूर्वा भाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा पार्श्वमें, (११) रेवती कुक्षिमें (१२) अनुराधा वक्षः स्थलमें (१३) धनिष्ठा-पृष्ठमें (१४) विशाखा दोनों भुजाओं में (१५) हस्त, दोनों हाथों में (१६) पुनर्वसु-अंगुलियोंमें (१७) अश्लेषा-नखोंमें (१८) ज्येष्ठा-ग्रीवामें (१९) श्रवण कर्णोंमें (२०) पुष्य मुखमें (२१) स्वाति दन्तोंमें (२२) शतभिषा हास्यमें (२३) मघा-नासिकामें (२४) मृगशिरा नेत्रोंमें (२५) चित्रा-कपालमें (२६) भरणी मस्तकमें (२७) आर्द्रा-शिरके केशोंमें और (२८) अभिजित् सम्पूर्ण अंगमें इस प्रकार नक्षत्रोंका निवास दिया है।

चैत्रमास (पूर्णिमान्त मास) की कृष्णअष्टमीको जब चन्द्रमा मूल नक्षत्र पर हो, तबसे एक वर्ष तक भगवान् विष्णु पैरसे लेकर शिर पर्यन्तके नक्षत्रोंमें रमण करते है। उसका प्रभाव प्रत्येक मनुष्यके अंगों पर अंशों द्वारा पड़ता है। वृहत्-संहितामें वराह मिहिरने इसका विस्तार पूर्वक उल्लेख किया है, जिसका निष्कर्ष यही है कि मनुष्य शरीर रूपी पिण्डाण्ड ही विशाल ब्रह्माण्डकी प्रति मूर्ति है। जितनी शक्तियां इस विश्वका परिचालन करती हैं, वे सब इस नर-देह में ही विद्यमान है। यही कारण है कि स्थान स्थान पर इस मनुष्य शरीरकी इतनी महिमा कही गयी है! भगवान् विष्णु के कटि देशके ऊपर सप्त लोक और नीचे सप्त लोक हैं। जिस प्रकार भूमण्डल का आधार मेरु पर्वत वर्णित है उसी प्रकार मनुष्य शरीरका मेरुदण्ड (कृत्तिका नक्षत्र) है! मेरुदण्ड तैंतीस अस्थि खण्डोंके योगसे बना है—(सम्भव है इस तेतीस की संख्याका सम्बन्ध तैंतीस कोटी देवताओं से हो) प्रजापति, इन्द्र, आठवसु द्वादश आदित्य और एकादशरुद्र मिलकर ३३ अस्थियोंके स्वामी होते हैं! भीतरसे मेरुदण्ड खोखला है! इसका निचला भाग नुकीला और छोटा होता है! इस नुकीले स्थानके आस पासका भाग 'कन्द' कहलाता है। और इसी कन्दमें जगदाधारभूता महाशक्ति की प्रतिमूर्ति 'कुण्डलिनी' का निवास है। इसीको कृत्तिका नक्षत्र कहते है। इस शरीरमें बहत्तर हजार नाड़ियोंकी संख्यामें स्थिति कही गयी है। इनमें से मुख्य नाड़ियोंकी संख्या १४ है। वे ही चौदह लोक है। इनमेंसे भी प्रधान तीन है, इडा-पिंगला तथा सुषुम्णा। इडा नाड़ी मेरुदण्डके बाहर बांयी ओरसे और पिंगला दाहिनी ओरसे लिपटी है। सुषुम्णा नाडी मेरुदण्डके भीतर कृत्तिका कन्द भागसे आरम्भ हो कपालमें स्थित सहस्रदल तक जाती है! इसीके भीतर तीन नाड़ियां वज्रा चित्रणी तथा ब्रह्मनाड़ी है जो तीन तीन नक्षत्रों द्वारा सप्त लोकोंमें स्थित है। योग क्रियाओं द्वारा जागरित कुण्डलिनी शक्ति ब्रह्मनाड़ीके द्वारा कपाल-स्थित ब्रह्मरंध्र तक जाकर पुनः लौट आती है! मेरुदण्डके भीतर ब्रह्मनाड़ीमें पिरोये हुए छः कमलोंकी कल्पना की जाती है! ये छः कमल शरीरके जिन अवयवोंके सामने मेरुदण्ड स्थित है उन्हीं अवयवोंके नामसे नक्षत्र सहित पुकारे जाते हैं। जिसका पूर्ण विवरण निम्नलिखित होता है।

(१) मूलाधार चक्र—इसमें निम्नलिखित सात नक्षत्र स्थित हैं। मूल, अश्विनी, रोहिणी, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, पूर्वाफाल्गुनी, और उत्तरा फल्गुनी इस चक्रकी स्थिति रीढ की हड्डीके नीचे कन्द प्रदेशसे लगे गुदा और लिंगके मध्य भागमें है। इस चक्रका कमल-रक्त वर्ण है और चार दल वाला है। इन दलों पर वं, सं, षं, शं, अक्षरोंकी स्थिति मानी गयी है। इसका यंत्र पृथ्वी तत्वका द्योतक है, जो चतुष्कोण है। यंत्रका रंग पीला है, बी जल है और बीजका

वाहन ऐरावत हाथी है। यंत्र के देव और शक्ति ब्रह्मा और डाकिनी हैं। इस यन्त्रके मध्यमें स्वयंभूलिंग है जिसके चारों ओर साढे तीन फेरेमें लिपटी सर्पाकार अपनी पोंछ अपने मुखमें दबाकर कुंडलिनी शक्ति विराजमान है। योग क्रियाओं से जागरित होकर यह शक्ति बिजलीके समान मेरुदण्डके भीतर ब्रह्मनाड़ीमें प्रविष्ट होकर ऊपरको चलती है। जिस मनुष्यके उपर्युक्त नक्षत्र इसी चक्रमें जन्म समयमें पड़े हों वह वक्ता, मानव श्रेष्ठ, सर्वविद्यासम्पन्न, विनोदी, नीरोग, आनन्दी, काव्य प्रवन्धमें समर्थ और मूलाधार चक्रको सिद्ध करने में भी समर्थ होता है।

(२) स्वाधिष्ठान चक्र—इस चक्रमें निम्नलिखित चार नक्षत्र स्थित है। कृत्तिका पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, रेवती इसकी स्थिति लिंग स्थानके ऊपर है। इसका कमल सिन्दूर वर्ण और छः दलों वाला है। दलों पर वं, भं, मं, यं, रं, लं, की स्थिति है। यह जल तत्व का द्योतक है जो अर्द्धचन्द्राकार है। इस यंत्रका रंग चन्द्रवत् शुभ्र है; बीज वं है और बीजका वाहन मकर है। देव और शक्ति विष्णु और शाकिनी है। जिस मनुष्यका जन्म नक्षत्र इसी चक्र पर पड़े, वह निरहंकार योगियोंमें श्रेष्ठ, मोहरहित और गद्य-पद्य की रचना करनेमें कुशल होता है। तथा इस चक्रको सिद्ध कर लेता है।

(३) मणिपूर चक्र—इस चक्रमें निम्नलिखित चार नक्षत्र स्थित है; अनुराधा, धनिष्ठा, विशाखा और हस्त इसकी स्थिति नाभि प्रदेशके सामने मेरुदण्डके भीतर है! इसका कमल नील वर्ण और दश दलों वाला है। इन दलों पर डं, ढं, णं, तं, थं, दं, धं, नं, पं, फं, अक्षरोंकी स्थिति मानी है, इस चक्रका यंत्र त्रिकोण है जो अग्नितत्वका द्योतक है। इसके तीनों पार्श्वमें छींटके समान तीन स्वस्तिक है। यंत्रका रंग लाल रवि सदृश है। देव देवी बृहस्पति तथा वाकिनी शक्ति है। यंत्रका बीज 'रं' है। इस चक्रके उक्त नक्षत्रोंमें जन्म लेने वाला संहार पालनमें समर्थ और सिद्ध वचन होता है। उसकी जिह्वा पर सरस्वती निवास करती है। वह रचनामें चतुर होता है तथा उक्त चक्रको सिद्ध करनेमें सफल भी होता है।

(४) अनाहत चक्र—इस चक्रमें निम्न लिखित चार नक्षत्र स्थित है, पुनर्वसु, आश्लेषा, ज्येष्ठा, और श्रवण; इसकी

स्थिति हृदय प्रदेशके सामने है यह अरुण वर्ण द्वादश दल कमल युक्त है। इन दसों पर कं, खं, गं, घं, ङं, छं, जं, झं, ञं, टं, ठं, अक्षरोंकी स्थिति है। यंत्रका बीज यं और वाहन मृग है। देव देवी ईशान रुद्र तथा काकिणी शक्ति है। इस चक्रके मध्य शक्ति त्रिकोण यंत्र है जिसमें बिजलीका प्रकाश व्याप्त है। इस त्रिकोण से सम्बद्ध 'वाण' नाम वाला स्वर्णमय शिवलिंग है; जिसके ऊपर एक छिद्र है और छिद्र से लगा अष्टदल वाला 'हृत्पुण्डरीक' नामक कमल है। इसी चक्रके नक्षत्रोंमें जन्म लेने वाला मनुष्य ईशत्व सिद्धि प्राप्त, योगीश्वर, ज्ञानवान् जितेन्द्रिय, काव्य शक्ति सम्पन्न और परकाया प्रवेशमें समर्थ होता तथा इस चक्रकी सिद्धिको प्राप्त करता है।

[५] विशुद्ध चक्र – इस चक्रमें निम्नलिखित चार नक्षत्र स्थित है पुष्य, स्वाति, शतभिषा और मघा इसकी स्थिति कण्ठ प्रदेशमें है। इसका कमल दल धूम्रवर्ण और सोलह दलों वाला हैं। इन दलों पर अं. आं. इं, ईं, उं, ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं, ओं औं अं, अः, सोलह स्वरों की स्थिति है। चक्र का यंत्र पूर्ण चन्द्राकार है और पूर्ण चन्द्रकी प्रभासे देदीप्यमान है। जो शून्य या आकाशतत्वका द्योतक है। यंत्रका बीज हं है और बीजका वाहन हस्ती, देवी देव शाकिनी और पंचवक्त्र सदाशिव है। इस चक्रके नक्षत्रोंमें जन्म लेने वाला, शांत चित्त, काव्य रचना कुशल, त्रिकालदर्शी सर्व हितकारी, निरोग, चिरंजीवी और तेजस्वी होकर इस चक्रकी सिद्धि करनेमें सिद्धहस्त होता है।

[६] आज्ञा चक्र—इसमें निम्नलिखित चार नक्षत्र स्थित हैं, मृगशिरा, चित्रा, भरणी और आर्द्रा। इसकी स्थिति भ्रूमध्यके सामने मेरु दण्डके भीतरके ब्रह्मनाड़ीमें है। इसका कमल दो दलों वाला और श्वेत वर्ण है। इन दलों पर हं, क्षं, की स्थिति है। चक्रका यंत्र विद्युत्प्रभायुक्त "उत्तर" नामक अर्द्ध नारीश्वरका लिंग है और जो महत्वका है यंत्रका बीच "ॐ" प्रणव है और बीजका वाहन नाद है इसके ऊपर बिन्दु भी स्थित है देव देवी इतर लिंग और डाकिनी शक्ति है। इसकी सिद्धिसे वाक् सिद्धि होती है। इस चक्रके नक्षत्रोंमें जन्म लेने वाला कुशल कर्मशीलसत्य वाला, दयालु और परोपकारी होता है।

(पृष्ठ ३२ का शेष)

सूचना है। लहरदार-द्वीपयुक्त रोगको बतलाती है, जीवन रेखा का आरम्भ और अंत भाग सूर्यकी जिह्वाके समान होना ठीक नहीं। (२१) अन्त में दो शाखा हो तो वृद्धावस्थामें शरीर की कमजोरी और धनकी कमीकी सूचक है। (२२) जीवन रेखाका अन्तिम भाग दो शाखा वाला होवे और एक शाखा अधिक चौड़ी होवे तो गठिया और विदेशमें गरीबी अवस्थामें जीवन बितानेकी सूचक है। यदि यही शाखा चन्द्र पर्वत तक चले तो लम्बी समुद्र यात्राकी सूचक है और इस रेखासे शाखा निकल कर मस्तक रेखासे मिले तो धन और यश देने वाली है (२३) जीवन रेखा पर श्याम-नीले धब्बे मंगल रेखाकी ओर हों तो अपने निकट सम्बन्धी द्वारा विष देनेकी सूचक है यदि ऐसा चिन्ह दोनों हाथों पर हो तो मृत्यु सूचक है। (२४) जीवन रेखासे कोई शाखा चलकर शुक्र पर्वत पर जाने वाली स्थल यात्रा सूचक है। एवं जीवन रेखाके बीचसे साफ सुथरी एक शाखा शुक्र स्थानको जावे वह सब देशोंकी यात्रा सूचक होती है। (२५) जीवन रेखा मस्तक रेखासे मिले तो स्त्री पुरुषों में प्रेम होता है जिसके हाथमें यह चिन्ह होगा उन्हें परस्पर प्रेमी ही जानें। [क्रमशः]

★

उपरोक्त छः दलोंके बाद मेरुदण्डके ऊपरी सिरे पर अभिजित् नक्षत्रसे स्थित पूर्ण पुरुष सहस्र दल वाला सहस्रारचक्र है जहां परमशिव विराजमान है। इसके हजार दलों पर बीस-बीस बार प्रत्येक स्वर व्यंजनोंकी स्थिति मानी गयी है परमशिवसे कुंडलिनीका संयोग, लययोगका ध्येय है। विषय अत्यन्त गहन है। मूल पुरुषके शारीरांग मनुष्योंको समझकर डिंभ चक्र द्वारा जोकि दैवज्ञ-भवन प्रकाशन नरसिंहगढ म. भा. द्वारा प्रकाशित पुस्तक "सामुद्रिक-दीपिका"—भाग प्रथमके प्रकरण पंचममें दिया गया है निर्णय कर लेना उचित होगा। जैसे जब कृत्तिका नक्षत्र जागरित होकर सब चक्रों को पार करके चित्रा नक्षत्रमें प्रवेश करता है तब उसका नाम "मारुत" होता है। इन नक्षत्रोंके योगोंमें उत्पन्न होने वाले पुरुष योगीश्वर होते हैं जो इन चक्रोंको जागरित कर जीव स्वयं ही बीज रूपको प्राप्त होकर सुख रूप हो जाता है। परमार्थ

योगार्णव :

अथ तृतीयाध्याय:

रज्जुयोग

रज्जुश्चरेषु सर्वेषु ग्रहाः सर्वे यदा स्थिताः

चरराशि (मेष, कर्क; तुला और मकर) राशियोंमें सब ग्रह हों तो रज्जु नामका योग होता है।

रज्जुयोगका फल

अध्व-श्रांतो दरिद्रश्च मत्सरी जन वल्लभः
रज्जुयोगे पुमान् जातो मध्यमायुश्चविंदति

रज्जुयोग जिस मनुष्यके जन्ममें होता है वह मनुष्य मार्ग चलनेसे थक जाता है और दरिद्री और मत्सरग्रस्त लोगोंको प्रिय तथा मध्यायु वाला होता है।

मुसलयोग

स्थिरेषु मुसलोयोग:

स्थिरराशि (वृषभ, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ) राशियोंमें सब ग्रह होवे तो मुसल नामका योग होता है।

मुसलयोगका फल

मुसले सत्व संपन्नो दारपुत्र धनैर्युतः
पूर्वं फलंविंभोक्ताच ज्ञानवान् स्वजनप्रियः

जिस मनुष्यका जन्म पूर्ण मुसल नामक योग पर होता है वह बलवान् स्त्री, पुत्र और मनसे युक्त रहता है। आयुके पहिले तिहाई भागमें योगका फल भोगता है और ज्ञानवान् स्वजनों को [कुटुम्बियोंको] प्रिय होता है।

साधनमें नक्षत्रोंका स्वाध्याय एवं ज्ञान एक ऐसा साधन है जिससे आध्यात्मिक लाभके साथ साधनको भौतिक [लाभ भी होता है। इस नक्षत्रांगका सम्पूर्ण ज्ञान "नक्षत्र दीपिका" पुस्तकमें जोकि सं. २००६ के अन्त तक जनताके समक्ष आजा वेगी, उसमें रूपसे मनुष्यके सुख, दुःख लाभ हानि, जीवन, मरणका ज्ञान नक्षत्रों द्वारा द्वादश भावोंमें उदाहरणों सहित बतलाया जायगा।

★

नलयोग

उभयेषु नलस्तथा

द्विभाव राशि (मिथुन, कन्या धनुः और मीन राशियोंमें सब ग्रह हों तो नल नामका योग होता है।

नलयोग का फल

नलयोगोद्भवो धीमान् विकलांगोल्पसंततिः
अंते सुखी धनाढयाश्च मध्यमायुश्चजीवति

जिस मनुष्यका जन्म नल योगसे हो वह मनुष्य बुद्धिमान; दुर्बल शरीर, थोड़ी संतान वाला आयुके तीसरे भागमें सुखी धनवान् और मध्यायु वाला होता है।

मालायोग

सौम्यग्रहैः केन्द्रगतैः मालायोगः सउच्यते

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भत्रह बुध, गुरु, शुक्र और पूर्णचन्द्र ये केन्द्र १-४-७-१० स्थानोंमें हो तो मालायोग होता है। अन्य ग्रंथकार इसे चतुःसागर योग भी कहते हैं।

मालायोगका फल

मालायोगे समुत्पन्नो ज्ञानवानर्थवान् भवेत्

मालायोगमें जिस मनुष्यका जन्म हो वह बड़ा ज्ञानी और धनवान होता है।

सर्पयोगः

क्रूरैः केन्द्रगतैः सर्वैः सर्पयोग इतिस्मृतः

सब पाप ग्रह सूर्य, मंगल, पाप ग्रहसे युक्त बुध, क्षीण चन्द्रमा, शनि, राहु और केतु ये केन्द्रमें हों तो सर्प नामक योग होता है।

सर्पयोगका फल

परक्लेशैश्च संतुष्टः स्वल्पायुर्भुजगोद्भवः

दूसरोंके कष्टमें आप प्रसन्न होता है और अल्पायु होता है।

मंगल कारकयोग

लग्नकेन्द्रगतैः सर्वैर्योगो मंगलकारकः

प्रथम केन्द्र (जन्म लग्न) में सब ग्रह होवें तो मंगल कारकयोग होता है। कोई पंडित इसको गोलयोग भी कहते हैं।

मंगल कारकयोगका फल

मंगलाख्ये नरो जातो नित्यकल्याणकारकः
वाग्मी प्रजावान् धीमांश्च दीर्घमायुश्च विंदति

जिस मनुष्यका जन्म मंगल नामक योग पर हो तो उस मनुष्यका सदा कल्याण (आनन्द मंगल) होता है और उत्तम प्रकारका बोलने वाला, पुत्र कन्या संतानोंसे युक्त और दीर्घायु वाला होता है।

मत्स्ययोग

मध्यकेन्द्रस्थितैः सर्वैर्मत्स्ययोग उदाहृतः।
मत्स्ययोगे प्रवासी च बन्धुक्लेशभयावहः

दशम केन्द्रमें सब ग्रह होवें तो मत्स्य नामक योग होता है।

मत्स्ययोगका फल

मत्स्ययोगे प्रवासी च बन्धुक्लेश-भयावहः
अस्थिरार्थोऽल्पपुत्रश्च दुष्टमार्गौंघमानसः

जिस मनुष्यका जन्म मत्स्ययोगमें हो तो वह मनुष्य सदा परदेशमें घूमने वाला भाई कष्टसे दुःखी रहे और कष्ट, धन स्थिर नहीं रहे। संतान पुत्र थोड़े हो, दुष्टमार्ग और पापी कर्ममें प्रवृत्ति रहे।

क्लीबयोग

आपोक्लिमिगतैः सर्वैःक्लीबयोग उदाहृतः

जिस मनुष्यके जन्म लग्नसे आपोक्लिम ३-६-९-१२ स्थानोमें रव्यादि सब ग्रह हों तो क्लीव नामका योग होता है।

क्लीबयोगका फल

क्लीवे दुःखी प्रवासी च नीचः स्त्रीकलहप्रियः।
अल्पायुरल्पबुद्धिश्च प्रायो देशांतरे मृतिः॥

जिस मनुष्यके जन्म कालमें क्लीव नामक योग हो वह दुःखी होता है सदा प्रवासमें रहे, नीच वृत्तिका स्त्रीसे कलह करने वाला अल्पायुः, मंदबुद्धि वाला और बहुत करके उसकी मृत्यु परदेशमें ही होती है।

षट्पदयोगः

लग्नादि षड्भवनगेहैः षट्पद उच्यते।

जन्म लग्नसे षष्ठस्थान तक सूर्यादि सब ग्रह होवें तो षट्पद नामका योग होता है।

षट्पद योगका फल

तत्रोद्भवो धनाध्यक्षः सर्वेभ्यः सारसंग्रही।

जिस मनुष्यका जन्म षट्पद नामक योगमें होवे वह धनका स्वामी (खजांची) होता है सम्पूर्ण वस्तु मात्रका जो सार है (निचोड़) उसका संग्रह करने वाला होता है।

वराहयोगः

उदयात्मजबंधुरथैर्वाराहो योग उच्यते।

जन्म लग्न पंचमस्थान और चतुर्थ स्थानमें रव्यादि सब ग्रह होवें तो वराह नामका योग होता है।

वराह योगका फल

क्षेत्रं वित्त सुखं ज्ञानंलभतेनात्र संशयः

जो मनुष्य वराह संज्ञक योगमें उत्पन्न होता है उसको क्षेत्र भूमि आदिका लाभ होवे धनका लाभ और शरीरको सुख लोभ और ज्ञानवान होवें।

कंटकयोग

द्वित्रि बन्धुगतैः सर्वैर्ग्रहैः कंटक उच्यते।

जन्म लग्नसे दूसरे स्थानमें तीसरे स्थानमें और चतुर्थ स्थानमें रव्यादि सब ग्रह होवें तो कंटक नामका योग होता है।

कण्टकयोगका फल

तत्रजातोधनी विद्वान्मध्यमायुर्नसंशयः।

जिस मनुष्यके जन्म कालमें कंटक नामक योग हो तो वह मनुष्य धनवान् विद्यावान और मध्यायु वाला होता है इसमें संशय नहीं।

हलयोग

लग्न व्ययस्थैर्हलयोगमाहुः।

जन्म लग्नमें और द्वादश स्थानमें संपूर्ण ग्रह हों तो हल संज्ञक योग होता है।

हलयोगका फल

हलोद्भवः क्रोधपरोतिनिःस्वो हीनांगजीवीच कृषीवलश्च

जो मनुष्य हल योगमें उत्पन्न हो वह क्रोधी और दरिद्री होता है शरीर का कोई अंग भंग होता है तथा अल्पायु वाला और खेती करने वाला होता है। क्रमशः

पर्वतीय प्रदेश

[श्री शमी शर्मा]

★★

उच्च गिरि मालाएँ और उनकी गगन चुम्बी शृङ्ग शृंखलाओं को अधः प्रकृति निधि, विधाता की सर्वोत्कृष्ट रचना तथा प्रकृति निरीक्षक विशेषज्ञों का एक मात्र अवलम्बन यह पावन प्रदेश दूरसे ही सहृदय लोगोंको आकर्षित करता है। विमुग्धकारी कलकल करते मंजु झरने, फेन युक्त ऊंचे नीचे जल प्रपात और उनके साथ प्रवाहित होने वाली सरिताएं शीतल सघन चील देवदारु के वृक्ष, लता, गुल्म—सम्पूर्ण प्रदेशमें कितने सुन्दर दृश्य मिलते हैं। अतीत कालकी स्मृतियां, साहित्य कलाका सामान, जनता में सद्व्यवहार, धर्म परायणता दूसरेके प्रति सद्भावना, सभ्यता, शिष्टाचार पहाड़ी जनता में कूट-कूट कर भरा हुआ है।

वास्तवमें हमारे उच्च साहित्य का सृजन यही प्रदेश करता है। इस प्रकृतिमें उच्च स्थान प्राप्त करने वाले पर्वतीय दृश्य ही तो, इस बीज रूपा प्रकृतिको, सजीव रूप प्रदान करने वाले महान् कलाकारोंका भोज्य रहा है। यह शैलमाला मूक नहीं। पता नहीं कैसे अनश्वर स्वरोंमें स्वरालाप करती हुई यह उनसे क्या बोलती है। हिम प्रपातसे सुशोभित देवदारु द्रुमसे मानों इस धराने रजत कंठे पहन लिये हैं। अहा उनके उर पर कौन सी अमिट रेखाओंके भाव अंकित कर जाते हैं। चीलोंकी सां सां किस विरह वेदनाके लम्बे-लम्बे श्वांसोंको छोड़ती और प्रकृति उपासक मन्त्र मुग्ध हो जाता है। वह निजको भूलकर इस प्रदेशके ऊंचे नीचे चढाव उतराव, लहरनूपुर पहने मन्द मधुर गतिसे प्रवाहित सरिताओंकी ओर सजल दृगसे निहारता और पता नहीं कौनसे अव्यक्त भाव उसके मनमें आते। प्रकृति-सौन्दर्यको देखते हुए उस को शेष किसीके सहयोगकी आवश्यकता नहीं रहती। जैसे जैसे वह अपनेको इसमें समावेश करता जाता वैसे यह उस को नये रूप रूपान्तरोंमें मिलती।

उपत्यकामें भोली-भाली ग्रामीण जनताके बांसों तथा पादप झुरमुटोंमें निस्सहायता एवं निर्धनताके नमूने कच्चे तृण अथवा सलेटोंसे आच्छादित गृह मानों वन देवताके पुजारियोंका विधाताने रचना करते समय ही निर्माण किया हो। साधुताकी प्रतीक जनता केवल वाणीमात्र या देखनेसे ही श्रांत पथिकका भ्रम नहीं हर लेगी अपितु वह तो उसको स्व कुटीरमें कमसे कम एक रात्रि व्यतीत करनेके लिए बाध्य करेगी। उनके हरित पीत सरसों और यव नीवार क्षेत्र लह लहाते हुए पता नहीं कौनसे दूर क्षितिजके पार लोगोंको मनोविनोदके हेतु बुला रहे हों। कलकल करते मंजु निर्झर जिनका शीतल जल कितनेही लोगोंको आधि व्याधिके लिए प्राकृतिक औषधि बन कर अविरल प्रवाहित हो रहा है और उनके सहोदर, सहोदराएं पादप, लता, वितान झुण्डोंके झुण्ड उनकी सहायतामें अपनी बन्धुताका कर्तव्य निभा रहे हैं। शुष्क घाससे आच्छादित पहाड़ियोंकी झाड़ियोंमें वन चिड़ियों का मधुर स्वर कहीं ताल मृदंग और लय युक्त गीतोंके श्रवण करनेसे ऊपर हैं। मन्द मधुर छटपट करता समीर तो मानों इन प्रदेशोंका प्राण ही है। सर सर और सां सांकी ध्वनिसे चेतन वनस्थली मनुष्यको चैतन्य करनेमें कितनी समर्थ हुई है, यह विषय केवल अनुभव का है।

संसारकी कन्दनाओं और यातनाओंमे पीड़ित मनुष्यका यह एकान्त शांत निर्जन स्थान यथाविधि उपचार करते और अपनी उस पीड़ा-मुक्त देहसे वह सुखका श्वास लेता। अतः उसही प्रकारसे विश्वके भिन्न भिन्न स्थानोंने भी जर्जरित होकर इन पर्वतीय प्रदेशोंमें ही शरण ली हो ऐसा कुछ अनुमान लगता। शैल-तनुजाके तट पर पादपोंका पंक्तिबद्ध खड़ा होना और कूलके जलसे उनके मूलको धोना पता नहीं यह पारस्परिक समझौते कबके हो चुके हैं। उन सुरम्य स्थानों के पास पड़े हुए अस्त-व्यस्त पत्थर उन्हें और भी सुरम्य बनाते हैं। शोषित दलित वर्ग की पुकारें, जनाकीर्ण जन पथों की भीड़ और दैनिक कार्य में निरत लोगों के अस्पष्ट कोलाहल से मुक्त यह प्रदेश पता नहीं किस अनादि काल से शाश्वत उस स्रष्टाके यशोगान गा रहे हों—या उसके ध्यान में लीन हों। सम्पूर्ण विश्व भरमें इन पर्वतीय स्थानोंमें एक जैसी विजनता पाई जाती है जो कि एक प्रभु भक्त को अपेक्षित है जैसे कि देवता के मन्दिर में लोग दर्शन करते हैं और

प्रभाकर परीक्षोपयोगी

शुक्ल और द्विवेदी

[ले० श्री पं० चन्द्रकान्तजी 'वाली' शास्त्री हिन्दी प्रभाकर]

[श्रीवाली जी हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् हैं। आप हिन्दीके बहुतसे छात्र वा छात्राओं को उच्च परीक्षाओंमें उत्तीर्ण करवा चुके हैं उन्होंने हिन्दी परीक्षार्थियोंके लाभार्थ प्रश्नोत्तरके प्रकारसे यह निबन्ध लिखा है। इसमें आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा पं० रामचन्द्र शुक्ल । सब दृष्टियोंसे परिचय दिया गया है। आशा है—हिन्दी प्रभाकरके परीक्षार्थी इससे लाभ उठाएंगे। शास्त्रीजी 'श्रीस्वाध्याय' पर भविष्यमें इसी प्रकार कृपा करते रहेंगे—यह हम आशा करते हैं।

प्रश्न—आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीका परिचय देकर उनका स्थान निर्धारित कीजिए ।

उत्तर—आचार्य एक राजविद्रोही सिपाहीके पुत्र थे। आपका जन्म स० १९२७ और देहावसान १९९५ में हुआ। १८५७ के गदरमें आपके पिता विद्रोही बन बैठे और पकड़े जानेके डरसे सतलजमें छलांग लगादी और सैंकड़ों मील दूर जा निकले। आपका पठन-पाठन घरमें हुआ । १३ वर्षकी आयुमें रायबरेली जिला स्कूलमें आप प्रविष्ट हुए। अंग्रेजी-फारसी एक वर्ष पढ़कर पुरवा, फतेहपुर और उन्नावमें क्रमशः पढ़कर स्कूली शिक्षा समाप्त की। इसके बाद आप १५) मासिक वृत्ति पर रेलवेमें तार बाबू बन कर चले गए। श्रम, ईमानदारीसे काम करके अफसरोंकी कृपा दृष्टि और कृपा दृष्टिके बल पर उन्नति आपने प्राप्त की। 'व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षया प्नोति दक्षिणाम्' । अपने अफसरकी अनुचित आज्ञाओंसे विवश होकर आपने त्याग पत्र दे दिया । एक वर्ष व्यतीत कर आप सरस्वतीके सम्पादनके लिए बुलाए गए। अर्थात् मणिके चूड़ा पर स्थान मिल गया। १७ वर्ष निरन्तर वहीं रहकर भाषा, गद्य, कवि, लेखक, आलोचकोंके निर्माणमें अपूर्व साधना की।

आपका निधन—

आपका साहित्यमें स्थान दो दृष्टियोंसे आंका जा सकता है। साहित्यकी दृष्टिसे और इतिहासकी दृष्टिसे । साहित्यकी सूक्ष्म दृष्टि रखने पर भी वे दूसरे-निर्माण-सम्बन्धी क्षेत्रमें

यात्रा करके लौटते हैं उसी ही प्रकारसे इन प्रदेशोंमें मानव यात्रा के रूप में आता है । यह स्थान एक ऐसे मन्दिर हैं जिनमें से एक सजीव मूर्ति खड़ी है और उस भगवान्‌की आत्मा हमारी आत्माओं से स्पर्श करती हैं जिससे एक विशेष अनुभूति होती है । इस अनुभूति का पता हमें पर्याप्त काल पश्चात् उस दृश्य को पुनः स्मरण करने पर लगता है । शरीर में एक रोमांच और हृदय में एक तल्लीनता आती है । अतः इन दृश्यों को साक्षात् देखने से साधारण मनुष्य के उर में आनन्द का पारावार नहीं और वह मुग्ध होकर अहा ! करने लगता है तो एक प्रकृति-उपासक रसिक साहित्यकार के विषय में क्या कहें ।

★

उतरे। पहिला श्रप-श्रेय भाषाको मिला। प्रो० नगेन्द्रके शब्दों में—'हिन्दीको बाह्य प्रभावोंसे निर्मुक्त कर उसको अपना विशेष स्वरूप प्रदान करनेके लिए, उन्होंने व्याकरणकी शुद्धि पर अधिक ध्यान दिया और भाषाके अनियमित प्रयोगोंको अक्षम्य अपराध ठहराया' । दूसरा आचार्य द्विवेदी लेखकोंके ब्रह्मा बन बैठे। श्री नगेन्द्र फिर लिखते हैं—'कितने ही नवयुवक कवियों और लेखकों की प्रतिभाको वे प्रकाशमें लाए। और वांछित किन्तु समुचित प्रोत्साहन देकर उनका विकास-विवर्धन किया। उन्होंने लेखकों की प्रवृत्ति को पहचाना और उनकी अस्वस्थ प्रवृत्तियोंको कुचलनेमें कभी विलम्ब नहीं किया'। अगर उनकी सृष्टिमें जाकर किसीसे पूछें तो वे एक ही उत्तर देंगे कि—वह चाहे बनावें, वह चाहें बिगाड़ें, हम आखिर उन्हींके बनाए हुए हैं।

एक संकेत मात्रसे दिशा पलटनेकी क्षमता रखने वाले श्री द्विवेदी ने पर्याप्त ऐतिहासिक गौरव अर्जित किया। साहित्य-नियंतृत्व, भावुकता, भाषाकी शुद्धि आत्मविश्वास, स्वच्छन्दताओंका दमन आदि गुण ऐसे है, जिन्हें आंकते समय डा० जानसनका ध्यान आता है। द्विवेदी हिन्दीके जानसन हैं। भाषा और सम्पादन विधिमें क्षमताके कारण वे आचार्य हैं।

प्रश्न—द्विवेदी जीने गद्य-साहित्यको अधिक प्रांजल और व्यवस्थित बनाया तथा निर्देशककी भांति उसकी गतिविधि का मार्ग बनाया' इस कथनकी पुष्टि कीजिए।

—(पंजाब विश्वविद्यालय, प्रभाकर १९५१)

उत्तर—जब 'एक' भ्रम छा जाता है तो भूलों का आना अनिवार्य होता है। भारतेन्दुसे पूर्व और सम-सामयिक लोगों में यह धारणा थी कि सौन्दर्य केवल कविताकी निजी सम्पदा है। गद्यसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं। अतः द्विवेदीके अभ्युदय कालसे पूर्व तक गद्य मात्रामें भारी-भरकम होने पर भी, इसका कोई निश्चित रूप न था। "रानी केतकीकी कहानी" "प्रेमसागर" को एक-साथ पढ़िये, मानो विभिन्न भाषाओं के अलग-अलग दो प्रतीक हों। इतने विशाल गद्य-साहित्यमें निम्न भूलें प्रचलित थीं। (क) लेखकोंको अपने तौर पर प्रांतीय शब्दों, संस्कृत अरबी-फारसी शब्दोंके प्रयोगकी खुली छूट थी। (ख) वाक्य रचना शिथिल और अस्त-व्यस्त थी। (ग) अंग्रेजीके मुहावरे तथा पारिभाषिक शब्दोंका हिन्दीकी प्रकृतिका अतिक्रमण करके अनुवाद होता था। (घ) गद्यका कोई रूप न था।

इस विषम-स्थितिमें महावीर प्रसाद द्विवेदी वरदान बनकर आए। 'सरस्वती'का सम्पादन करके लेखकों और कवियों पर अधिक कृपा दृष्टि रखी। डा० अमरनाथ झा के शब्दोंमें—"उन्होंने कितने ही युवकोंको हिन्दीमें लेख लिखनेको प्रोत्साहित कर लेखक बना दिया; अपनी समालोचनाओंसे हिन्दीके उच्च रूप देनेमें आपने बड़ी सहायता दी"। श्री टण्डनजीके शब्दोंमें—द्विवेदी जीने कठोर परिश्रम करके हिन्दी गद्य-शैलीमें एक निश्चित शैलीका स्थापन किया और नवीन शैलीकी कविताओंका भी प्रचार किया"।—द्विवेदी जीकी निर्माण प्रवृत्तिकी पुष्टि होती है। व्याकरण सम्मत गद्यको रूप दिया। विराम चिन्होंका यथा-युक्त प्रयोग सिखलाया। पुस्तकोंकी निधड़क कड़ी-से कड़ी (भाषा विषयक) आलोचना की, जिससे गद्य एक निश्चित शैली पकड़े।

आचार्य द्विवेदी न केवल आलोचनासे गद्यको प्रांजल बना रहे थे, अपितु निर्दिष्ट शैली देकर मार्ग प्रदर्शन भी कर रहे थे। उनकी शैलियां ये हैं —

१ मिश्रित शैली—जिसमें सभी भाषाओं के सरल शब्दोंका समावेश है।

२ व्यंग्य और हास्य सम्पृक्त गद्य उपर्युक्त शब्दोंमें अभिव्यक्त करते थे।

३ अत्यन्त परिष्कृत शैली गूढ़ भावना और संस्कृत शब्दोंसे अतिरंजित गद्य

किसी ने ठीक कहा है—"आजकल हिन्दीमें जो कुछ नवीन स्फूर्ति दिखलाई देती है, इसका अधिक श्रेय द्विवेदी को ही है।

प्र१ —सम्पादकाचार्य श्री द्विवेदीकी 'कला' विश्लेषण करके उस पर एक निबन्ध लिखो।

आचार्य द्विवेदी १९०६ संवत् से १९७५ तक सरस्वतीके सम्पादक रहे। इस कालमें हिन्दी-साहित्य और हिन्दी पत्रकारिता कुछ-से-कुछ हो गई। उसका परिवर्तन तीन दृष्टिकोणों से परखा जा सकता है। यथा—

(क) लेखकोंका निर्माण। आजतक जितने सम्पादक आए हैं, वे मानों लेखकोंके संसारसे दूरवर्ती प्राणी रहे हैं। लेखक भू-लोकवासी हैं, सम्पादक देवलोकके सर्व श्रेष्ठ व्यक्ति। यह विषमता लेखकोंके विषयमें घातक है ही, सम्पादकके लिए भी हितकर नहीं है। नए लेखक प्रायः इसी दशामें से गुजर रहे हैं। द्विवेदी-युग इस दृष्टिसे कितना सुन्दर था। द्विवेदीने—"अन्तर हाथ सहार दे, बाहर मारे चोट" सैकड़ों लोगोंको ठोंक-पीटकर वैद्यराज—लेखक बना दिया था। श्री नवीनजीके शब्दों में—"वह एक चलता-फिरता पुनीत अश्वत्थ वृक्ष था, जिसकी डाल-डाल पर हिन्दीके प्रभातके कई मुखर द्विज-वृन्द आश्रय पाते रहे" —ऐसे थे श्री द्विवेदीजी, जिन्होंने उदात्त-वृत्तिको लेकर सम्पादन कलामें प्रवेश किया।

(ख) 'सरस्वती' द्वितीय उत्थानकी पत्रिका है। उससे पूर्व—'उदंत मार्तंड' 'अल्मोड़ा अखबार' हिन्दी-प्रदीप' 'भारत-मित्र' 'आनन्द कादम्बिनी' 'ब्राह्मण' 'मित्र-विलाप' प्रभृति अनेक पत्र निकल चुके थे। पर पत्रकार-कला से मानो उनका कोई सम्बन्ध ही न था, व्यंग्य, हलके-अर्थ हीन समाचार, अव्यवस्थित शीर्षक, प्राचीन ढर्रेके निबन्ध (घूरेके लत्ता बिनै कनातनके ढोल बांधै) उनमें बहुतायतसे रहते थे। श्रीपराड़कर जीके शब्दोंमें—"पर सच्चा सम्पादक एक प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञकी तरह समयकी गतिमें भी कुछ परिवर्तन कर ही जाता है। यह बात हम आचार्य द्विवेदीमें पाते हैं" तथा एक मासिक पत्रिकाके सम्पादकके लिये यह कम गौरवकी बात नहीं कि वह एक शैलीकार भी हो।" सरस्वतीके द्वारा श्री द्विवेदी पत्रकारिताका शृंगार कर सके और उसे निश्चित शैली दे गए।

(ग) तीसरी बात 'भाषा-मार्जन' की है। यह गुण उनका अत्यधिक प्रसिद्धि कर रहा है। श्रीपराड़कर जीने ठीक कहा है —'आचार्य द्विवेदी जी निर्दयताके साथ सम्पादन किया करते थे'। डाक्टर राजकुमारने भी ठीक कहा है—'भाषाके प्रति किसी प्रकारकी भी उपेक्षा सहन करनेमें वे एकान्त असमर्थ थे' यह है उनकी विशेषता।

'सरस्वती' पत्रिका एक मध्यरेखाका काम करती है। सरस्वतीसे पूर्व सम्पादन कला शैलीहीन और दिशाहीन थी; बादमें उसमें व्यवस्था और प्रगति होसकी ऐसा ऊंचा व्यक्तित्व था श्री द्विवेदी जीका, जिसका प्रभाव आज भी अचूक नजर आता है।

प्रश्न—आचार्य द्विवेदी 'आलोचनाकला'के 'प्रकाश-स्तम्भ माने जाते हैं, इसे सप्रमाण सिद्ध करो।

उत्तर—एक व्यक्ति निबन्धलेखक है तो वह संभवतः आलोचक भी हो सकता है, 'सम्पादक' और 'आलोचक' दो भिन्न-भिन्न विशेषताएं हैं, कदाचित् ही एकत्र हों; पर आचार्य द्विवेदी एक साथ निबन्धकार, आलोचक और सम्पादक हैं। यही कारण है कि श्री द्विवेदी आलोचकोंमें ऊंचा स्थान रखते हैं।

श्री द्विवेदी आलोचकोंके लिए एक निर्देशककी भांति हैं, यह समझनेके लिए हमें अपने विषयको तीन भागोंमें बांट लेना चाहिये। (क) आलोचना सम्बन्धी विचार। (ख) आलोचनाएं। (ग) आलोचकोंमें उनका स्थान।

(क) व्याकरण पर अधिक ध्यान देकर द्विवेदीजी 'कुछ' लोगोंके विचारमें केवल दोष-दर्शक अथवा भारतेन्दु युगीन-आलोचनाके प्रतीकमात्र रह जाते हैं। पर वास्तवमें बात कुछ दूसरी है। इसका उत्तर द्विवेदी जीकी पंक्तियोंमें देखिए—'छन्द, अलंकार, व्याकरण आदि तो गौण बातें हुई, इन्हीं पर जोर देना अविवेकता प्रदर्शनके सिवा और कुछ नहीं······ किसी पुस्तकमें क्या लिखा गया है ? किस ढंगसे लिखा गया है, वह विषय उपयोगी है या नहीं,—यही विचारणीय विषय हैं। समालोचकको प्रधानतः इन्हीं बातों पर विचार करना चाहिये'। कितना स्पष्ट है। द्विवेदी दोष-दर्शनको किनारे रखकर विषयकी तलैटी तक जाना चाहते हैं।

(ख) द्विवेदी जीकी रचनाएं अनुवादित भी है, मौलिक भी। निबन्धकार भी हैं, पुस्तककार भी। अंग्रेजी-बंगला-मराठीमें संस्कृत-विषयक आलोचनाओंका अनुवाद किया। मानो हिन्दी-आलोचनाको मार्ग मिल गया 'कालीदासकी निरंकुशता'में शास्त्रीय विवेचना है। 'विक्रमांकदेव चर्चा'में व्याख्यात्मक शैली है। 'सौन्दरानन्द' में अश्वघोष-कालिदास की तुलना दी गई है। द्विवेदी जीके छोटे-मोटे आलोचनात्मक नोट या लेख 'आलोचनाञ्जलि'में संग्रहीत हैं। इनकी समालोचनाएं जहां लेखकका ज्ञान बढ़ाती हैं, वहां सम्पादकका यश-विस्तार भी करती हैं।

भारतेन्दु युगमें केवल एक पत्रिकामें एक आलोचना-छपी थी। वह आलोचना न थी, दोषोंकी बृहत्कलेवर सूची मात्र थी। द्विवेदीयुगमें पहुँचकर आलोचनाने अपना वास्तविक रूप ग्रहण किया।

श्री द्विवेदीका स्थान (श्री गुलाबरायके शब्दोंमें) इस प्रकार है। यथा-गुण दोष विवेचनके सम्बन्धमें आचार्य द्विवेदी मिश्रबन्धुके सम-कक्ष ठहरते हैं। दूसरोंकी हंसी उड़ानेमें वे पद्मसिंह शर्माके समान हैं, शुक्ल जीकी तरह भारतीय पद्धति ग्रहण करते नजर आते हैं। कहीं अध्यापककी तरह, कहीं मित्र की तरह, कहीं भक्तकी तरह आलोचना करके आचार्य द्विवेदी जो कुछ दे गए हैं, उसके लिए हिन्दी साहित्य और हिन्दी लेखक उनके चिरऋणी रहेंगे।

प्रश्न—निबन्धकार द्विवेदी को अभिलक्ष्य करके एक निबन्ध लिखो!

उत्तर—भारतेन्दु-युगमें या तो नाटकों का प्राधान्य रहा, या फिर निबन्धों का। उस समय निबन्धकलाने कोई विशेष उन्नति कर ली होगी, ऐसी कोई बात नहीं। उनके विषय ये रहे—मकुआ कौन कौन है, धूरेके लता बिनै कनातनके ढोल बांधै, होली, दशहरा इत्यादि। भाषाकी दशा चिन्तनीय थी ही, गद्य पद्य के समक्ष हेय भावना से देखा जाता था।

द्विवेदी-युग आया, देखते देखते निबन्धकलाने उन्नति की। पं० पद्मसिंह शर्मा, मिश्रबन्धु, पूर्णसिंह, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी प्रभृति निबन्ध-लेखक कार्य-भूमिमें उतर आए। इनमें आचार्य द्विवेदीका व्यक्तित्व सर्वोपरि रहा।

आ० द्विवेदी पत्रकार थे अतः अपने पाठकों के लिए उनकी लेखनी अजस्र निबन्ध प्रस्रवण करती रहती थी। पाठकोंकी ज्ञान वृद्धिका ध्यान सदैव उनके सामने रहता। आप के निबन्ध संग्रह—रसज्ञरंजन, साहित्य संदर्भ, साहित्य सीकर, विचार विमर्श अति प्रसिद्ध हैं। आपके निबन्धोंका वर्गीकरण इस प्रकारहो सकता है। (क) साहित्यिक (ख) ऐतिहासिक (ग) वैज्ञानिक (घ) आध्यात्मिक (ङ) जीवन सम्बन्धी।

१. द्विवेदीजीकी रचनामें व्यक्तित्वका प्रकाशन वैसा नहीं, जैसा कि निबन्धोंमें अपेक्षित रहता है, क्योंकि लेखक आत्म प्रकाशनके लिए नहीं, भाव प्रकाशन चाहता है। २. द्विवेदी जी अपने विचारोंको बहुत सीधे-सादे शब्दोंमें तारकर रख देते थे, मानो कम बुद्धि वालोंके लिए लिख रहे हों। ३. कहीं-कहीं उनके निबन्धोंमें श्रम-साधनाकी छाप रहती है। ४. आपके निबन्ध शास्त्रीय अर्थमें रसवान् न रहने पर भी कम रोचक नहीं हैं। ५. व्यंग्यमें द्विवेदी अत्यन्त सिद्ध-हस्त थे। पं० पद्मसिंहके समान शब्दोंकी मीठी-खट्टी चटनी तैयार करके सामने रख देते थे।

आपके साहित्य निबन्धोंमें 'कवि और कविता' 'प्राकृत भाषा' 'वेद' संस्कृत साहित्यका महत्व 'आदि, ऐतिहासिक निबन्धोंमें 'सांची' 'देवगढ़' 'मुगलबादशाहोंकी दिनचर्या' 'महारानी विक्टोरियाका घोषणा पत्र' आदि, वैज्ञानिक निबन्धोंमें 'पेड़-पौधोंमें चेतना शक्ति' 'रोग परीक्षा यन्त्र' 'समुद्रतलका तथ्यज्ञान' आदि, आध्यात्मिक निबन्धोंमें 'जीवन' 'ईश्वर' 'पुनर्जन्म' आदि, जीवन सम्बन्धी निबन्धों में 'पं० बालकृष्ण भट्ट' 'रायदेवीप्रसाद पूर्ण' आदि अति प्रसिद्ध है। आपके लेख मौलिक कम और अनूदित अधिकाधिक हैं।

निबन्धोंके लिए साहित्यिक श्री-वृद्धिका श्रेय आपको है।

प्रश्न—आचार्य द्विवेदी तथा आचार्य शुक्लकी परस्पर तुलना करो।

उत्तर—बाण कविकृत 'कादम्बरीको' उसके आत्मजने पूरा किया, चन्द कवि रचनाको 'जल्हण'के हाथमें देकर चल दिया, ऐसा हम सुनते हैं, इसमें कितना सत्य है—भगवान् जाने। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारतेन्दु युगकी अपूर्णताको उत्तराधिकारी बनकर आचार्य-युगलने पूर्ण किया। चारों हाथ सभी दिशाओंमें एकसे उठे, निर्माण-बस-निर्माण करते चले गये।

दोनों कवि थे, इतिवृत्तवादी। आचार्य द्विवेदी खड़ी बोलीके, आचार्य शुक्ल ब्रजभाषाके माध्यम से आगे बढ़े। और शीघ्र ही उन्होंने अपनी दिशा बदल ली। आचार्य द्विवेदी कवि (मैथिलीशरण-रामचरित्र उपाध्याय-अयोध्यासिंह उपाध्याय) निर्माणमें जुट गए और आचार्य शुक्ल कवि मार्ग निर्माणमें जुट गए। द्विवेदीने कवि दिए, शुक्लने वर्गीकरण किया। दोनों अपनी दिशामें ईमानदार रहे।

दोनों महाशय निबन्धकार थे। द्विवेदी सर्वथा नवीन होते हुए भी भारतेन्दुके प्रभावसे बच न सके न थे। उनके निबन्धोंमें

गम्भीरता नहीं थी, उनके निबन्ध मानों अल्पज्ञके लिए लिखे गये प्रतीत होते हैं। व्यंग्य और मनोरंजनकी छटा वहीं देखी भाली थी। द्विवेदीकी निबन्धकला अपना रास्ता खोज रही थी, बेकन, कारलाइल, बंकिमके अनुवादित निबन्धोंके साथ तुलने की ईर्ष्या करती थी। पर आ० शुक्लके निबन्ध भाषा वारिधिके गहनमें उतर गए, अर्थ गौरवमें वे ऊंचे-से ऊंचे उठे। पाश्चात्य-भारतीय कलाका समन्वय शुक्लजीकी अपनी चीज है।

दोनों धुरन्धर आलोचक थे। द्विवेदी भाषा-मार्जनमें जुट गए। आलोचनाको गुण-दोषोंकी सूची-निर्माणकी वृत्तिसे बचा सके। आचार्य शुक्ल आलोचनाकी माप बन गए। कसौटीभी स्वयं, निबन्धकार भी स्वयं और परख भी स्वयम्। विश्लेषणात्मक पद्धति देकर पुरानी रीति परम्पराकी कपाल क्रिया कर दी। संस्कृत पद्धतिको मनोवैज्ञानिक भूमि देकर जीवित कर दिया।

निबन्धकार और आलोचक द्विवेदी मूर्ति-निर्माणमें दक्ष हैं तो शुक्ल मूर्तिमें प्राण-प्रतिष्ठा करने वाले हैं। द्विवेदीने कला-पक्ष अपनाया तो शुक्लने भाव पक्ष।

दोनों महानुभाव सम्पादक थे। एकने सरस्वतीका सम्पादन कर लेखक पैदा किए, कवि पैदा किए, साहित्यका निर्माण किया, दूसरेने उनको गम्भीरता दी, मनोवैज्ञानिक रसभूमि दी, वास्तविकता दी।

संक्षेपमें-काव्य, निबन्ध आलोचना और सम्पादन कलामें आचार्य द्विवेदी 'प्रथमोऽध्यायः' हैं और आचार्य शुक्ल हैं 'द्वितीयोऽध्यायः' (अथवा-एक प्राण द्वि-गात।

प्रश्न—पं० रामचन्द्र शुक्लका परिचय देकर, उनके साहित्यकी संक्षेपमें चर्चा कीजिए।

उत्तर —पं० शिवदत्त शुक्लके पौत्र, पं. चन्द्रबली शुक्ल के पुत्र आ० रामचन्द्र शुक्लका जन्म आश्विन पूर्णिमा सं० १६४० आगोना ग्राममें हुआ। शुक्लजीकी माता गानाके गोस्वामी तुलसीदासकी वंशज कन्या थी। राठ (हमीरपुर) में शुक्लकी ६ वर्षकी अवस्थामें पढ़ाई हुई। अक्षरारंभ पं. गंगा प्रसादजीने कराया। बचपनमें ही मातासे रामायण-सूरसागर, पिताजीसे भारतेन्दु-नाटक तथा रामचन्द्रिका सुनकर आचार्य शुक्लके हृदयमें साहित्यिकताका बीजारोपण हुआ। शुक्लजी का बचपन तथा किशोरावस्थाका पर्याप्त भाग मिर्जापुरमें व्यतीत हुआ। मिर्जापुरकी रमणीयताने शुक्लजीको इतना वशंवद कर रखा था कि वे मिर्जापुरकी रम्य-भूमिमें देह त्यागना चाहते थे। शुक्लजीका विवाह काशीवासी पं. रामफल पाण्डेकी कन्यासे हुआ। मिडल पास करनेके बाद शुक्लजी की साहित्यिक रुचि और बढ़ी। पड़ोसवासी पं. विंध्येश्वरीप्रसादके साथ जंगलोंमें चले जाते, एका क्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा, एक तो वन-रमणीयताका अबाध अवगाहन होता तथा संस्कृतका पठन-पाठन सरलतया हो गया। 'मनोहर छटा' नामक कविता शुक्लजीने १६ वर्षकी अवस्थामें लिखी और 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई। आनन्दकादम्बिनीमें श्री शुक्ल बराबर लिखते रहे।' शुक्लजीने वकालत भी पढ़ी, पर असफल रहे। मिशन-स्कूलमें तीन वर्ष पढ़ा कर शुक्लजी कोश-सम्पादनके लिए काशी पधारे अर्थात् साहित्यिक यज्ञमें जी-जानसे जुट गए। २ फरवरी सन् १६४१ शुक्ल जी की निधन तिथि है।

'मनोहर छटा' शुक्लजी की प्रथम रचना है, शुक्लजी ने बचपनमें एक नाटक भी लिखा था जो किसी मित्रने हंसते-हंसते फाड़ डाला। कोश-हिन्दी सागर शुक्लजीका साहित्यिक योगदान है। काव्य-व्रजभाषाको काव्योचित मान कर वे काव्य-निर्माण कर सके। निबन्ध-मनोवैज्ञानिक निबन्ध लिखने का सूत्रपात श्री शुक्लने किया। 'चिन्तामणि' एतद्विषयक सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। इतिहास—इतिहास लिखनेकी सूक्ष्म एवं अस्त-व्यस्त धाराको निश्चित तथा प्रौढ़ रूप श्री शुक्लजीने दिया है। उनका काल विभाजन इतना मनोवैज्ञानिक है कि सभी आचार्योंने उसे नतभाल होकर स्वीकार किया है। आलोचना-सर्जनशील आलोचना, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक आलोचनाके साथ-साथ आलोचकोंको दिशाज्ञान देकर शुक्ल जी आद्य आलोचनाचार्य बन गए। भ्रमरगीत, जायसी, तुलसी तथा सूर पर लिखी गई भूमिका भूमिका न रहकर आलोचनाका मापदण्ड बन गई। अनुवाद-बुद्ध चरित्र प्रभृति रचनाओंका अनुवाद भी शुक्लजी कर गए।

प्रश्न —पं. रामचन्द्र शुक्लकी निबन्धकला पर एक सार-गर्भित निबन्ध लिखिए।

उत्तर—कविताका राज्य अखण्ड है। पर व्यक्तित्व मूलक रचनामें गद्य भी अपना स्थान रखता है; यह आधुनिक युगने सही-सही समझ लिया है। गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति। गद्य काव्यकलाकी, व्यक्तित्वकी कसौटी है, और गद्यका मनोहारी ढांचा एकमात्र 'निबन्ध' है।

'निबन्ध' इस शब्दमें क्रमपूर्णता और संघटनका समन्वय व्यंजित है। 'निबन्ध' गद्य, पद्य दोनोंमें लिखा जा सकता है। गद्य मानो निबन्धका अपना घर है, पद्यमें वह अतिथि-वत् सम्मान पाता है।

निबन्धके भी तीन युग हैं। हरिश्चन्द्र-युगमें निबन्धकला मनोरंजनका आस्वादन कर रही थी। चमत्कारवादका तो मानो उस पर जादू था। निबन्ध अपने आकार-प्रकारमें सीमाशून्य थे। ज्ञान-साधनके लक्ष्यने निबन्धकलाको जकड़ सा रखा था। द्विवेदी युग अनुवाद-युग था। मौलिक रचनाएं भी थीं। मानो व अनूदित निबन्धोंके साथ-साथ पग बढ़ाकर अपना मार्ग बूझ रहे थे। अंग्रेजी-मराठी-बंगलाके निबन्ध हिन्दीमें रूप बदल कर आने लगे थे। बंकिम निबन्धावली जैसी रचनाएं हिन्दीने नहीं देखी थीं। बाबू गुलाबरायके शब्दोंमें 'जूठी पतल चाटनेकी बात रही' फलतः निबन्धकला मनोविनोद युग और अनुकरण युग, दो-दो युग देख चुकी थी पर रही वहींकी वहीं उसके समूचे निर्माणकी आवश्यकता शेष थी।

शुक्लजी मानो निबन्धकलाकी प्रतीक्षा कर रहे थे, निबंध-कलाको शुक्लजी की आवश्यकता थी। दोनोंका सहयोगीकरण दैवको अभीष्ट था। बाबू गुलाबरायके शब्दोंमें—'शुक्लजीने अधिकतर विवेचन-प्रधान निबन्ध लिखे हैं, जिनमें समास शैलीका प्राधान्य है। विषयके हिसाबसे हम उनके दो विभाग कर सकते हैं, एक वे जो जीवनसे सम्बन्ध रखने वाले हैं और दूसरे वे जो साहित्यशास्त्रको लेकर हैं और जिनमें उनके आचार्यत्वकी छाप है। ये दोनों विभाग भी अन्योन्य बहिष्कारक नहीं है। वास्तवमें जितना सम्बन्ध जीवन और साहित्य का है, उतना ही सम्बन्ध इन दोनों प्रकारके निबन्धोंका है। शुक्लजीके जीवन सम्बन्धी लेखोंमें हम उनके उत्साह, करुणा, भय, ईर्ष्या, लोकनीति श्रद्धाभक्ति मनोवैज्ञानिक लेखोंको लेंगे, और साहित्यिक लेखोंमें कविता क्या है? साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद, रसात्मक बोधके विविध रूप आएंगे। शुक्लजी के निबन्धोंमें पहिले एक बात सूत्र-रूपसे कही जाती है फिर उसकी विश्लेषणात्मक व्याख्या की जाती है और जीवनसे लिए हुए उदाहरणों द्वारा वह बात स्पष्ट की जाती है। उनके उदाहरण बड़े मार्मिक होते हैं। बेकन, कारलायल इमर्सन आदिमें इतना उतार चढ़ाव नहीं है जितना कि हम शुक्ल जीमें देखते हैं। आचार्य शुक्लकी निबन्धकला में स्पष्टतया विचार किया गया है।

प्रश्न—पं० रामचन्द्र शुक्ल आलोचना पद्धतिके आचार्य माने जाते हैं। क्यों? सप्रमाण उत्तर दीजिए।

—पंजाब विश्वविद्यालय, प्रभाकर १९५१

'आचार्य' पद भूषित व्यक्तिमें ऐसे गुणोंकी आशा की जाती है कि वह इष्ट वस्तुका मर्मज्ञ हो, उसमें उसे प्रांजलता देनेकी क्षमता हो, दिशा-ज्ञान देकर अनुगतों को युक्त पथ-प्रदर्शनकी योग्यता हो, सहानुभूति और जागरूकता हो। निःसन्देह आचार्य शुक्लमें ये सभी गुण विद्यमान थे।

भारतेन्दु-युगमें चौधरी प्रेमघन ने आनन्द-कादम्बिनी में जो रणधीर प्रेम-मोहिनीकी आलोचना छपी थी। उसमें गुणावगुणकी सूची प्रदानकी भावना काम कर रही थी, उसमें पथ-प्रदर्शनकी क्षमता न थी। रीतिकालमें ढेरों लक्षण ग्रन्थ बन जाने पर भी उनमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, कलात्मक प्रसादन. सामाजिक पृष्ठभूमि तथा रचनाकारकी अपूर्व-क्षमताका नितान्त अभाव है।

दूसरे उत्थानमें यद्यपि आचार्य द्विवेदी साहित्यके तलछट ज्ञानके आगार थे, उनकी मर्म-भेदिनी दृष्टि अमोघ थी, परन्तु उन्होंने अपनी दिशा बदल ली, वे भाषा तक रुके रहे। पं० पद्मसिंह शर्मा उर्दू-फारसीके रंग-ढंगके कारण चमत्कारवादी रह गए। दूसरी दिशाओंमें बढ़नेकी क्षमता रखने पर भी वे काव्य-सज्जा—अलंकारों पर लट्टू होकर रह गए 'बस कलम तोड़ दी' 'वाह वाह! क्या कहने!' की शैली में बह गए।

आलोचनाके तीसरे पहरमें आचार्य शुक्ल पधारे। पं० नन्द दुलारे वाजपेयीके शब्दोंमें—"शुक्लजी ने अपने समयकी

एक अर्धजागृत साहित्यचेतना को दिशाज्ञान दिया। रास्ता सुझाया ही नहीं, स्वयं आगे-आगे चले और मंजिल तय किए। विपर्यस्त लक्षणग्रन्थोंकी परम्परा को साहित्य-शास्त्रकी पदवी पर पहुंचाया। उसे शास्त्रीय और वैज्ञानिक रूप दिया। शुक्ल जीकी सबसे बड़ी विशेषता है— समीक्षाके सब अंगोंका समान रूपसे विन्यास। पाण्डित्यमें उनकी अप्रतिहत गति थी, ववेचनाकी उनमें विलक्षण शक्ति थी, वे आलोचक या समीक्षकमात्र नहीं थे, सच्चे अर्थमें साहित्यमें आचार्य थे" श्री शान्ति प्रिय द्विवेदीके शब्दोंमें—"हिन्दीमें आधुनिक-समालोचना शैलीके जन्मदाता शुक्ल जी हैं। वे आदि गुरु हैं। पिछले समालोचकोंके बजाए वे उसी प्रकार नवीन हैं, जिस प्रकार व्रजभाषाके बजाय खड़ी बोली। संस्कृतकी समालोचना शैली शुक्लजी द्वारा नवजीवन पागई। समालोचनाके माध्यमसे शब्दों और विचारोंके व्यवस्थापनमें उन्होंने हमें अपना आचार्यत्व दिया है"

तृतीय उत्थानमें एकमात्र आलोचना को चरम सीमा तक पहुंचा कर पं० रामचन्द्र शुक्ल आचार्य पद प्राप्त कर सके हैं। अभी तक कोई ऐसा व्यक्ति प्रकट नहीं हुआ जो आचार्यकी स्थान-पूर्ति कर सके।

प्रश्न—आचार्य शुक्लका इतिहास एक सर्वश्रेष्ठ रचना है, सप्रमाण सिद्ध कीजिए।

उत्तर—हिन्दीके चार महारथी साहित्य क्षेत्रमें अपना उपमान नहीं रखते। कथाक्षेत्रमें— प्रेमचन्द, नाटकक्षेत्रमें— प्रसाद, निबन्ध, आलोचना और इतिहासमें—आचार्य शुक्ल, काव्य (राष्ट्रीय) क्षेत्रमें—मैथिलीशरण गुप्त, चारों अपने अपने विषयके महापण्डित है, चरम सीमा है, लक्षण-उदाहरण स्वयं हैं। हिन्दी साहित्यके जितने इतिहास उपलब्ध हैं— उनमें आचार्य शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्यका इतिहास' धुरीका स्थान रखता है।

हम इस चर्चासे उन रचनाओं को बाहर रखेंगे; जो इतिहास नहीं हैं, इतिहास पृष्ठ-भूमि जरूर हैं। यथा-कवियोंके विषयमें अन्तःसाक्ष्य, बहिःसाक्ष्य, भक्तमाल, दो सौ बावन वैष्णवोंकी वार्ता; शिवसिंह सरोज ऐतिहासिक ढंगका रहने पर भी उसे इसी वर्गमें रखेंगे।

इस समय मिश्रबन्धु कृत 'मिश्रबन्धु विनोद' रामकुमार वर्मा कृत 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' सूर्यकान्त कृत 'हिन्दी साहित्यका विवेचनात्मक इतिहास' डा० श्याम सुन्दरदास कृत 'हिन्दी साहित्यका इतिहास' तो बड़े बड़े ग्रन्थ हैं। व्रजरत्नदास, गुलाबराय, नन्द किशोर, प्रभृति लेखकों की अल्पकाय रचताएं; कुछ वृहत्काय निबन्धक (थीसिस्) एकाङ्गी इतिहास भी हैं।

पुस्तकका मूल्य उसके रचयिता पर निर्भर करता है। आचार्य शुक्ल सभी इतिहास लेखकोंसे उत्कृष्ट स्थान रखते हैं। श्री मानव'के शब्दोंमें—"हिन्दीके लिए सौभाग्यकी बात है कि उसके लिए पं० रामचन्द्रशुक्ल जैसा मार्मिक व्याख्याता मिला, उसके सुन्दर आकार और हृदयके सौन्दर्यके मूल तक पहुंचनेके लिए ऐसा विवेकी-रसज्ञ और साहित्य-सौन्दर्य-शास्त्री मिला।" सीधी सी बात है कि इधर इतिहास लेखक पं० शुक्लके समक्ष ठहरते नहीं।

दूसरी बात, लेखकके दृष्टिकोणकी अधिकाधिक व्यापकता है। मिश्रबन्धु कृत 'विनोद'में कालविभाजन केवल सन्-संवतोंके आधार पर है। उसमें कोई विश्लेषणात्मक पद्धति नहीं है। श्यामसुन्दर कृत इतिहासमें भावधाराकी कल्पना ठहराई गई है। वीर काव्य की लम्बी परम्परामें चन्दा-भूषण-लाल वियोगी हरि तक सगृहीत हैं। मानो देशकाल और सामाजिक प्रभाव को उड़ा ही दिया गया है। वैज्ञानिक एव उपयुक्त वर्गीकरण जो शुक्लजीने प्रतिष्ठित किया है, वह सभी को मान्य ही नहीं, बल्कि राजमार्ग बन गया है।

समीक्षा, जीवनी, तुलना और युग-प्रभाव, सभी बातोंका उचित निर्वहण किसी रचना में देखने को न मिलेगा। छोटे-मोटे इतिहास तो मानो शुक्लकृत इतिहास रूपी धुरी पर घूमते हुए आराल नजर आते हैं। ऐसी अपूर्वताएं उक्त रचनामें है— जिससे वह सर्वश्रेष्ठ स्थान रखती है।

★

प्रभाकर परीक्षोपयोगी—

तुलसी और रामचरित्रमानस

[लेखकः—श्री पं० भगवतीस्वरूपजी 'कश्चित्']

[श्रावण शुक्ला ७ मंगलवार ता० २६ जुलाई १६५२ ई० को कविकुल कमल दिवाकर गो० श्री तुलसीदासजी महाराज की जयन्ती आ रही है। "संवत् सोरह सौ अस्सी असी गंग के तीर। श्रावण शुक्ला सप्तमी तुलसी तज्यो शरीर।" के अनुसार आपकी निर्वाणतिथि भी यही मानी जाती है। भारतीय आर्यसंस्कृति और भक्ति रस के अन्यतम पुजारी एवं हिन्दी में 'रामचरित-मानस' के इस मन्त्रद्रष्टा-महर्षि की यह जयन्ती प्रतिवर्ष साहित्यिक समुदाय भारत में सर्वत्र न्यूनाधिक रूपमें मनाता है। किन्तु, हम चाहते हैं कि शान्तिके अग्रदूत महात्मा तुलसीदासकी यह जयन्ती भारत के गांव-गांव और घर घर में मनाई जावे। हमारे राष्ट्रीय कर्णधार भी रामराज्यकी दुहाई तो देते हैं, परन्तु जब तक वे 'रामचरित-मानस' के अनुसार अपने निजी जीवन और राज्यतन्त्रको ढालनेका प्रयत्न नहीं करेंगे तब तक रामराज्यकी स्थापना केवल कल्पना मात्र ही सिद्ध होगी। महापुरुषोंकी जयन्तियां और श्राद्धतिथियां गौरवपूर्ण इतिहास को जीवित रखनेका प्रधान साधन हैं। यद्यपि विद्वान् लेखकने यह लेख विशेष रूपमें प्रभाकर परीक्षार्थियों के हितार्थ लिखा है, तथापि महात्मा श्री तुलसीदासजी का आदर्श जीवन और उनका 'राम चरित्र मानस' समस्त संसारके लिए समानरूपसे उपकारक है, अतः इस सामयिक लेखको हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

—सम्पादक]

कविकुलचक्रचूड़ामणि महाकवि तुलसीदासजीका आविर्भाव हिन्दी साहित्यके इतिहासमें एक महत्वपूर्ण घटना है। हिन्दी साहित्यको प्रौढ़त्व प्रदान करने वाले कलाकारोंमें उनका आदरणीय स्थान है, वे महाकवि थे यह बात बहुमतसे नहीं सर्व सम्मतिसे स्वीकार की जाती है। उनके रामचरित्र-मानसको सर्वश्रेष्ठ प्रबन्ध काव्य कहा गया है जिसकी रचना गोस्वामीजीके शब्दों में :—

सम्वत सोरह सौ इकतीसा,
करहु कथा हरिपद धरि सीसा।
नौमी भौमवार मधुमासा,
अवधपुरी यह चरित प्रकाशा॥

किन्तु यह पंक्तियां बालकाण्डके आरम्भमें न होकर ५४ वें दोहे के बाद आई हैं और इतनी पंक्तियोंकी रचना भी एक दिनमें असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य हैं अतः उक्त तिथि ठीक नहीं जंचती। हो सकता है चार दिन पूर्व लिखना आरम्भ कर दिया हो। ग्रन्थका आधार क्या है इस के विषयमें स्वयं तुलसीदासने कह दिया है।

"नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि"

फिर भी अध्यात्म रामायण, वाल्मीकि रामायण, हनुमन्नाटक, प्रसन्नराघव, श्रीमद्भागवत इसके आश्रय ग्रन्थ हैं। इस ग्रन्थकी रचना उन्होंने अपने चरित्र-नायकके जन्म स्थान रामधाम अयोध्या पुरीमें की थी।

"अवधपुरी यह चरित प्रकाशा"

इस ग्रन्थके निर्माणका उद्देश्य संशयालु जनतामें दाशरथि रामका ब्रह्मत्व प्रतिपादन करना था, क्योंकि इनसे पूर्व होने वाले कवियोंने निर्गुणवादके चक्करमें जनताको डालकर उन्हें इस ओरसे विमुख तथा संशययुक्त बना दिया था। उदाहरणके लिए कबीरकी यह पंक्तियां विचारणीय हैं :—

दशरथ सुत तिहु लोक बखाना,
राम नामको मर्म न जाना।
निर्गुन राम भजो रे भाई,
अवगतिकी गति लखी न जाई ॥

इसीलिए उन्होंने स्वयं जहां जनता के भ्रमोच्छेदनके लिए रामचरितका निर्माण किया वहां शिव द्वारा पार्वती का, काग भुशण्डी, द्वारा गरुड़का, याज्ञवल्क्य द्वारा भारद्वाजका संशय दूर करनेके लिए ही राम गुण गान कराया है। और उन्होंने शिव द्वारा पार्वतीको कहलवाया है !

धन्य धन्य गिरिराज कुमारी,
तुम समान कोउ नहिं उपकारी ।
पूछेऊ रघुपति कथा प्रसङ्गा,
सकल लोक जग पावनि गंगा ।
तुम्ह रघुवीर चरण अनुरागी,
कीन्हिहु प्रश्न जगत हितलागी ।
राम कृपा ते पारवति, सपनेहु तव मन माहिं ।
सोक मोह सन्देह भ्रम, मम विचार कछु नाहिं ॥
तदपि असका कीन्हिहु सोई
कहत सुनत सब कर हित होई ॥

उनके राम ब्रह्म हैं ।

व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुन विगत विनोद ।
सो अज प्रेम भगति बस, कौशल्या की गोद ॥

मानसकी मूल कथा वाल्मीकि रामायणकी कथासे पूर्ण तया मेल खाती है। हां कहीं-कहीं क्रममें भिन्नता अवश्य है और विषय प्रतिपादनमें भी अन्तर है। वाल्मीकि रामायणमें भी अन्तर है। वाल्मीकि रामायणमें भी रामको विष्णुका अवतार माना गया है। बाल काण्डमें लिखा है कि ब्रह्मादि देवताओंने 'मनुष्य रूप धारण कर आप रावणको मारो' ऐसी प्रार्थना की:—

"मानुषं रूपमास्थाय रावणं जहि संयुगे।" और पितृत्वके लिए भगवान्ने दशरथको चुना :—

इत्येतद्वचनं श्रुत्वा सुराणां विष्णुरात्मवान् ।
पितरं रोचयामास तदा दशरथं नृपम् ॥

रामचरित मानसके कुछ स्थल ऐसे हैं जो वाल्मीकि रामायणसे पूर्ण मेल नहीं खाते वह 'प्रसन्न राघव' या हनुमन्नाटकसे लिये गए हैं या उनकी अपनी सूझ है। ऐसे स्थानों पर तुलसीदास जीने घटनाओंके चित्रण और पात्रोंके चरित्रमें पूर्ण स्वतंत्रता से कार्य लिया है। कवि कल्पना-प्रसूत कुछ स्थलः—

१ पुष्प वाटिकामें रामसीताका प्रत्यक्ष दर्शन ।

२ जनकपुरमें राम और लक्ष्मणका नगर दर्शनके लिए जाना, उनके सौन्दर्य पर नारियोंके वार्तालाप ।

३ वाल्मीकि रामायणमें परशुराम उस समय आते हैं जब राम, सीतासे विवाह कर अयोध्याके मार्गमें होते हैं किन्तु तुलसीदासजीने उन्हें स्वयंवरमें ही ला खड़ा किया है ऐसा करके उन्होंने अपने नायकके चरित्रको ऊंचा उठाया है। इसी प्रसङ्गमें कई पात्रोंका चरित्र चरम सीमाको छू गया है। परशुराम-लक्ष्मण संवाद भी उन्होंने विलक्षण बुद्धिसे उपस्थित किया है।

रामायणकी कथा सात काण्डोंमें विभक्त की गई है:—

(क) बालकाण्ड—में मंगलाचरण, याज्ञवल्क्य, भरद्वाज, संवाद, सती मोह, शिव पार्वती विवाह, नारद—मोह, मनु-शतरूपाका तप, भानुप्रतापकी कथा, रामजन्म, यज्ञ रक्षा, सीता स्वयंवर और विवाह ।

(ख) अयोध्याकाण्ड—में राज्याभिषेक की तैयारी और विघ्न, सीता राम संवाद, राम लक्ष्मण संवाद, वन गमनसे लेकर भरतका चित्रकूट प्रस्थान, आगमन और नन्दीग्राममें निवास तककी कथा है।

(ग) अरण्य काण्ड—में जयन्तकी कुटिलता, सीता अनुसूया मिलन, पंचवटी-निवास, शूर्पणखा को दण्ड, खर दूषण बध, मारीच-बध, सीता-हरण और शबरी तककी कथा है।

(घ) किष्किन्धा काण्ड—में राम-हनुमान भेंट, सुग्रीवकी मैत्री, बालि-बध, सीताकी खोज और हनुमान जामवन्त संवाद है।

(ङ) सुन्दर काण्ड—में हनुमान्का लंका प्रवेश, सीता हनुमान् मिलन, लङ्कादहन, युद्धयात्रा, विभीषणका स्वागत और समुद्र पर कोप तकका वर्णन है।

(च) लङ्काकाण्ड—में सेतुबन्ध, अंगद - रावण संवाद, लक्ष्मण मेघनाद युद्धसे, लेकर रावण बध तक और सीताकी अग्नि परीक्षा तथा अयोध्या प्रस्थान।

(छ) उत्तर काण्ड—में भरत मिलाप, राज्याभिषेक, प्रजा को उपदेश, गरुड़-काग-भुशण्डि संवाद, काकभुशुण्डि लोमश संवाद, तथा ज्ञानभक्तिनिरूपण हैं।

यह एक प्रबन्ध काव्य है, प्रबन्धकी दृष्टिसे भी गुण इसमें विद्यमान हैं। इससे पहले भी प्रबन्ध काव्य लिखे गए थे पर उनमें प्रायः सभी कवि असफल रहे। हां पृथ्वी राजरासो अवश्य कुछ अपना अस्तित्व रखता है, पर उसकी प्रामाणिकतामें ही सन्देह है और उसमें अनेक प्रबन्ध-दोष भी हैं, इसके बाद भी ब्रजभाषामें प्रबन्ध काव्य लिखे गए पर सभी असफल रहे, इससे पूर्व भी अवधीमें प्रेमगाथाकारोंने उत्कृष्ट-प्रबन्ध काव्य लिखे किन्तु जिस काव्य परम्पराका महाकवि तुलसीदास जी निरूपण कर गए उसके सामने सब फीके हैं। सूरके बाद भाषाका सुन्दर रूप तुलसीमें ही दिखाई देता है। जहां सूरदासने ब्रजको वहां तुलसीने अवधी भाषाको परिष्कृत कर काव्य भाषाका रूप दिया और राम चरित्रके रूप में हिन्दी साहित्यमें बेजोड़ महाकाव्यकी सृष्टिकी। इस कथन की सत्यताके लिए अपने आप कुछ कहनेकी अपेक्षा जगत्प्रसिद्ध विद्वानों तथा महापुरुषों के उद्‌गार विचारणीय हैं।

अनेक भाषाओंके प्रकाण्ड पंडित सर जार्ज ग्रियर्सन कहते हैं:—

'रामचरित मानस कविकी श्रेष्ठ कृति है, इसे नौ करोड़ मनुष्योंका वाईबिल कहते हैं और वस्तुतः उत्तरी भारतके प्रत्येक हिन्दूको इसका जितना ज्ञान है उतना मध्यम श्रेणीके अंग्रेज किसानको बाइबिलका नहीं। इसी प्रकार सी. एफ. एड्र्यूज रामचरित मानस पर अपने विचार प्रकट करते हैं।

'शायद बाइबिल और कुरानको छोड़कर मनुष्य जातिके साधारण जनोंमें किसी अन्य पुस्तकने इतना व्यापक प्रकाश नहीं डाला जितना कि तुलसीरामायण ने। तुलसीदासकी रामायणकी गणना अब तक आधुनिक संसारके जीवित ग्रन्थोंमें है।'

विश्व पूज्य महात्मा गांधीजीने भी रामायणके विषयमें कहा थाः—

'किसी ग्रन्थको सर्वोत्तम कहनेका यह अर्थ कदापि नहीं कि उसमें कुछ भी दोष हैं ही नहीं। परन्तु रामचरित मानस केलिए यह दावा अवश्य है कि उससे लाखों जीवोंको शांति मिली है, जो ईश्वरसे विमुख थे वे ईश्वर-शरणमें गए हैं और आज भी जा रहे हैं, मानसका प्रत्येक पृष्ठ भक्तिसे भरपूर हैं। मानस अनुभवका ज्ञान भण्डार है।'

स्व. रामचन्द्रजी शुक्ल लिखते हैं—

'आज रामचरित मानस' हिन्दी समझने वाली हिन्दू जनताका जीवन-साथी हो रहा है। तुलसीकी वाणी मनुष्य जीवनको प्रत्येक दशा तक पहुँचाने वाली है। क्योंकि उसने रामचरितका आश्रय लिया है, रामचरित जीवनकी सब दशाओंकी समष्टि है।

इसी प्रकार अनेक महापुरुषोंकी विचारधाराएं हैं। जिनसे अनुमान किया जा सकता है कि रामचरित-मानस भारतीय साहित्यमें अत्यन्त गौरव पूर्ण स्थान रखता है जितना प्रचार इस ग्रन्थका है उतना किसी अन्यका नहीं। जनताकी इसके प्रति अपार भक्ति और श्रद्धा है। इतना समय बीतने पर भी आज वह नया है, वस्तुतः इस ग्रन्थकी रचना कर गोस्वामीजीने हिन्दू जनता पर ही नहीं समस्त मानव जाति पर अशेष उपकार किया है, यदि यह बात न होती तो आज संसारकी समृद्ध भाषाओंमें इसका अनुवाद इतना लोकप्रिय न होता।

कला पक्षकी दृष्टिसे भी 'रामचरित मानस' किसी महाकाव्यसे पीछे नहीं, भले ही उन्होंने बालकाण्डमें निरभिमान स्वभावसे कवि न होनेकी उच्च स्वरसे घोषणाकी है।

कवि न होउं नहि वचन प्रवीनू, सकल कला विद्या सब हीनू॥
कवि होउ नहि चतुर कहावौं, मति अनुरूप रामगुन गावौं॥

फिर भी तुलसीदास जीने कविकर्तव्यको बड़ी सुन्दरतासे निभाया है। 'राम चरित मानस'में प्रायः सभी रसोंका पूर्ण परिपाक हुआ है। रामकी बाललीला वर्णनमें वात्सल्य रस, जनकपुरमें सीताहरणके पश्चात् वियोग शृंगार, इससे पूर्व परशुराम-लक्ष्मण संवादमें रौद्र रस, नारदमोह और शिव

पार्वती विवाहमें हास्यरस, चित्रकूटमें भरत मिलन पर करुण रस, लङ्का दहनमें भयानक तथा अद्भुत रस, राम-रावण युद्ध आदि प्रसंगोंमें वीर रस तथा युद्ध स्थल वर्णनमें बीभत्स रसका अच्छा परिपाक हुआ है और शांतरस प्रधान तो रामायण है ही। इस प्रकार काव्यकी आत्मा रसका परिपाक स्थान स्थान पर रस महाकाव्यमें हुआ है। अलंकार योजना भी 'मानस'में महत्वपूर्ण ढंगसे हुई है, वे अलंकार भी स्वतः ही आ धरे हैं, उन्हें आमन्त्रित नहीं किया गया। वैसे सभी अलंकार उनकी रचनाओंमें पाए जाते हैं, फिर कुछ ही उदाहरण विद्यार्थियों के लाभार्थ यहां रखेंगे। अनुप्रास तो उनकी रचनामें सर्वत्र पाये जाते हैं।

यमक – मूरति मधुर मनोहर देखी, भयऊ विदेह विदेह विसेषी।
वक्रोक्ति "मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू।"
दृष्टांत–जिय बिनु देह नदी बिनु वारी, तैसेइ नाथ पति बिनु नारी।
उल्लेख—जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।
अपह्नुति—कह प्रभु हंसि जनि हृदय डराहू, लूक न असिन केतु नहि राहू।
ये किरीट दशकन्धर केरे, आवत बालि तनय के प्रेरे।
परिसंख्या—दंएड जतिह कर भेद जहं नर्तक नृत्य समाज।
जीतिय मनहि सुनिय अस, रामचन्द्र के राज॥
उत्प्रेक्षा—दादुर धुनि चहुं ओर सुहाई, वेद पढ़हि जनु बटु समुदाई।

रूपक—अलंकारका तो तुलसीदासजीने दिल खोल कर प्रयोग किया है।

छन्दोंका भी जितना सफल प्रयोग तुलसीदासजीने किया है, हिन्दी साहित्यमें केशवको छोड़ कर शायद ही अन्य कविने किया हो। कोई-कोई कवि किसी विशेष छन्दकी रचनामें ही सफल देखा गया है, किन्तु तुलसीदासजी आठ प्रकार मात्रिक और ग्यारह प्रकार वार्णिक छन्दोंका प्रयोग करनेमें पूर्ण सफल हुए हैं। विस्तार भयसे उदाहरण सहित छन्दोंके नाम न देकर केवल नाम ही यहां लिखेंगे। (सम्पादकजीकी आज्ञा थी कि लेख तीन पृष्ठसे अधिक न हो, पर क्या करूं कलमके पीछे लेख न होकर लेखके पीछे कलम चल रही है। अस्तु)

दोहा, सोरठा, चौपाई, तोमर, डिल्ला, त्रिभंगी, हरिगीगीतिका, बरवै, छप्पय, मत्तगयन्द, कवित्त, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, तोटक, भुजंग प्रयात, मालिनी, रथोद्धता, वसन्ततिलका, वंशस्थ, शार्दूल विक्रीड़ित और स्रग्धरा। कहीं विभिन्न छंदों के मेलसे उन्होंने नए छन्द भी बनाए हैं। विनय पत्रिका और गीतावलीमें ऐसे छन्दोंकी प्रधानता है।

वैसे तो तुलसीदासजीकी रचनामें ओज, प्रसाद और माधुर्य तीनों गुण पाये जाते हैं, किन्तु प्रधानता प्रसाद गुण की है—

प्रसाद गुण—जल भरि नयन कहहि रघुराई।
तात करम निज ते गति पाई॥
माधुर्य—सुनि सनेह साने वचन, मुनि रघुवरहि प्रसंस।
राम कस न तुम कहेउ अस, हंस वंस अवतंस॥
ओज—जम्बुक निकट कटक्कट कहहि,
खाहि हुआहि अघाहि दपट्टहि॥

वे एक भावुक व्यक्ति थे, उनकी रचनाओं में कोमल वृत्तियोंको अच्छा स्थान मिला है। संयोग और वियोग स्थलों में पति-पत्नी, माता-पिता, भाई भाई; मित्र-मित्र, भक्त और भगवान, स्वामी और सेवकके सम्बन्धमें कोमल भावनाओं का जो प्रकटीकरण हुआ है, उन्हें पढ़ कर हृदय विह्वल हो उठता है। भक्तके प्रेमका उदाहरण कितना मार्मिक है—

कामिहि नारि पियारी जिमि,
लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर,
प्रिय लागहिं मोहि राम।

उनके भक्त वरदानमें केवल भक्ति ही मांगते हैं—

यह वर मांगहु कृपा निकेता।
बसहु हृदय सिय-अनुज समेता॥

और आजके भक्त—

यह वर मांगहु कृपा निकेता,
मिले जलेबी दूध समेता।
श्री राज बदन षड़ानन माता,
बरसत मेह हमें देऊ छाता॥
होइ तासु मम पुण्य बहूता,
जो पहिरहु 'बाटा को जूता (गड़बड़ रामायण)

आदि वरदानोंकी झड़ी लगा देते। पति-पत्नी प्रेमका उदाहरण देखिये--

तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा।
जानत प्रिया एक मन मोरा॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं।
जानु प्रीति बसद् तने हि माहीं॥

संतति प्रेमः—हा रघुनन्दन प्रात पिरीते।
तुम बिन-जियत बहुत दिन बीते॥
हा! जानकी लखन हा! रघुवर।
हा! पितु हित चातक जलधर॥

भ्रातृ प्रेमः—पुनि करुनानिधि भरत हंकारे।
निज कर जटा राम निरु आरे॥
अन्हवाए प्रभु तीनिउ भाई।
भगत वछल कृपालु रघुराई॥
भरत भाग्य प्रभु को भल ताई।
सेष कोटि सत एक छिन गाई॥

ऐसे अनेक स्थल हैं, जिनके अध्ययन मात्रसे वरवश हमें तुलसीदासजीकी कृतज्ञता स्वीकार करनी पड़ती है। एक उदाहरण और देखिये—

राम सीताके वियोगमें दुःखी है, उनका स्नेह सीताके सौन्दर्यको अधिक तीव्र कर रहा है। चन्द्रमाको देख उनका ध्यान सीताकी ओर आकृष्ट हो गया। चन्द्रमाकी शोभा फीकी पड़ गई—

प्राची दिशि शशि उगेहु सुहावा।
सिय मुख सरिस देखि सुख पावा॥
बहुरि विचार कीन्ह मन माहीं।
सिय बदन सम हिमकर नाहीं॥

मानसमें इस प्रकारके अनेक स्थल आपको मिलेंगे, जहां तुलसीदासजीने कोरे कागज पर अक्षर नहीं, हृदय ही निकाल कर रख दिया है। इसीलिए यह मानव समाजमें झोपड़ियोंसे लेकर राज्य-प्रासादों तक कुरान, बाइबिल, वेद, पुराणसे अधिक लोकप्रिय और व्यापक रूप धारण कर गया है।

★

श्री धनदा-प्रयोग

यह प्रयोग हमें बकसर जिला उन्नावके निवासी तन्त्रसिद्धि कुलाचार्य स्व० चण्डिका सहाय महाराजके एक शिष्यसे प्राप्त हुआ है। इस प्रयोगसे उनका कहना है कि कई एक दुःखी जनोंका कल्याण हुआ है। हमने भी दो एक सज्जनोंको इसे बताया और देखा कि उनकी भी मनःकामना पूर्ण हुई। यह प्रयोग वास्तवमें एक अनुभूत सिद्ध प्रयोग है। हमें विश्वास है कि जो भी इस प्रयोगको करेंगे, उनका अभीष्ट सिद्ध ही होगा। प्रयोग इस प्रकार है—

पहले सङ्कल्प करे। यथा—

ॐ विष्णु...... अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकं वासरे अमुक गोत्रोऽहम् अमुकशर्मा धनदा-प्रसादसिद्धि-द्वारा जन्म वर्ष मास लग्न दशान्तर्दशाविदशागोचरारिष्टवर्ग सर्वतो भद्रचक्रादि प्रमुख ज्योतिःशास्त्रानुसारेण श्रीमार्तण्डादिग्रह संसूचित-संसूच्यमान-संसूचयिष्यमाण मम इह जन्मार्जित जन्मान्तरार्जित कायिक-वाचिक-मानसिक महापातकोपपातक निवृत्तिपूर्वक सर्वाबाधा सकलारिष्ट निवृत्तिपूर्वक दीर्घायुः शरीरारोग्य लक्ष्मीफल प्राप्त्यर्थ मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत सप्तशती पाठान्तरस्थस्य सर्वाबाधा विनिर्मुक्तेति मंत्रस्य दशसहस्रान्तर्गत पंचशत संख्याकजपमहं करिष्ये।

इसके पश्चात् विनियोग करे। यथा—

अस्य श्री सर्वाबाधा विनिर्मुक्तेति मंत्रस्य शंकर ऋषि रनुष्टुप्छन्दः श्री धनदा देवता ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अब ऋष्यादि न्यास करे। यथा—

शंकर ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।
श्री धनदा देवतायै नमः हृदि।
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।

ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

तब कर न्यास करे। यथा—

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ।

इसी प्रकार हृदयादि षडंगन्यास करे । तदनन्तर देवताका हृदय कमलमें ध्यान करे । यथा—

अश्वारूढां त्रिनेत्रां करकमलधरां पीतवासां सुकेशीम्
भक्ताभीष्ट प्रदात्रीं शशि मुकुटधरां स्वर्णदाने प्रशस्ताम् ।
दुष्टान् पापान् दहन्तीं स्मरहर दयितां सेवितां सिद्ध संघै-
स्तां देवीं देववन्द्यां त्रिभुवनजननीं चेतसा चिन्तयामि ॥

ध्यान कर चुकने पर निम्न मन्त्रका जप करे—

ॐ सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसमन्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥

इस मन्त्रकी जप संख्या ५०० पांच सौ प्रतिदिन है । इस प्रकार पुरश्चरण २० दिनका है । इसकी कुल जपसंख्या केवल १०००० दशहजार है । न्यूनाधिक न करे । ('चंडी')

कुछ अनुभूत यंत्र मंत्र

[ले०—श्री पं० गोविन्दजी मिश्र]

(१) व्यापार लाभयन्त्र—

७३	८०	२	७
६	३	७७	७६
७६	७४	८	१
४	४५	७५	७४

इस यन्त्रको लाल वस्त्र पर अष्ट गन्धसे लिख कर हाथ में रखें तो व्यापार में लाभ हो

(२) एकांतरा (पाली ज्वर) दूर करने का यंत्र—

६२	६६	२	७
६	३	६६	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

इस यन्त्रको ठीकरी पर लिख कर भुजामें बांधे तो एकांत ज्वर जाय ।

(३) सौभाग्य वृद्धि यन्त्र—

५	६	३	६
४	४	७	५
६	६	३	५
५	४	७	४

यन्त्रको मस्तकमें रखे तो सौभाग्यमें वृद्धि हो तथा पति की प्रिया हो ।

(४) नेत्र पीड़ा निवारण मन्त्र—

ॐ नमो श्रीरामकी धनु ही लक्ष्मणका बाण आंखें दर्द करे तो लक्ष्मण कुमारकी आन । इति । नीमकी डालीसे २१ बार झाड़ दे, तो ३ दिनमें आंखकी पीड़ा दूर हो जायगी । इसमें सन्देह नहीं ।

(५) ज्वर नाशक यन्त्र—

६	।४	५३
६	॥६	१
४।	४५	८

इस यन्त्रको काली स्याहीसे लिख कर धूप देकर बांधे तो हर प्रकारका ज्वर दूर हो जाय ।

(शेष आगामी 'नववर्षाङ्क'में)

द्विग्रहोंका केन्द्रोंमें फल

[ले०——श्री पं० मदनमोहनजी गौड़ ज्योतिर्विद्]

द्विग्रहोंका केन्द्रोंमें फल

आज समाजमें शनैः शनैः ज्योतिष शास्त्रसे विश्वास दूर होता जा रहा है—इसका एकमात्र कारण शास्त्रका अल्प ज्ञान अथवा अपूर्ण ज्ञान है, विभिन्न ग्रन्थकारोंने समय-समय पर इस पर अधिक प्रकाश डाला है, किन्तु साधारण जनता उसका लाभ ग्रहण करनेमें असमर्थ रही है। इस शास्त्रमें प्रत्येक ग्रहका अन्य ग्रहके संयोगसे कुछ भिन्न फल होता है। अभी यहां उसीका प्रदर्शन किया जायगाः—

सूर्य चन्द्र योग फल

(१) लग्न स्थानमें सूर्य और चन्द्रका संयोग मनुष्योंको माता पिताओंके दुःखसे युक्त करता है। संतान, वैभव, तथा आदर से भी वह वंचित रहता है।

(२) चतुर्थ स्थानमें सूर्य और चन्द्र जातकको बान्धव तथा पुत्रादिके सुखसे हीन कर देते हैं।

दारिद्र्य निरन्तर उसका सहचर रहता है। जड़ता भी अपना पूर्ण प्रभाव रखती है।

(३) सप्तम स्थानमें ये ग्रह स्त्री-सुखसे रहित कर देते हैं - मित्र भी शत्रु हो जाते हैं तथा दीनतासे उसका चित्त अशांत रहता है।

(४) दशम स्थानमें सूर्य चन्द्रसे सुगठित शरीर वाला, शूरवीर, शत्रुपक्षका नाशक तथा रजोगुण वृत्तिका होता है।

सूर्य-मंगल योगका फल

(१) लग्नमें सूर्य-भौम होने पर पित्त-प्रधान व्यक्ति होता है। क्रोधी, निर्दय, कठोर और दुष्ट स्वभावका होता है।

(२) चतुर्थमें इन दोनों ग्रहोंका संयोग बन्धुओंसे वंचित करता है। धन भी स्वल्प हो जाता है सुखका ह्रास होता है, शत्रुपक्ष अधिक होनेके कारण लुब्ध वृत्तिका होता है।

(३) सप्तम स्थानमें सूर्य और मंगल मानवको स्त्री विरह के दुःखसे दुःखी करते हैं। स्थान स्थान पर कभी कभी पराभवका भी सहन करना पड़ता है।

सूर्य-बुध योगका फल

(१) लग्नमें यह योग अत्यन्त शुभ माना गया है। विद्वान, वाचाल, बुद्धिमान, दीर्घायु तथा मनुष्योंको प्रिय होता है।

(२) चतुर्थ स्थानमें सूर्य-बुधका योग राजाके समान विख्यात, अधिक वैभव वाला, काव्यकी अभिलाषा करने वाला तथा पीन कलेवरका होता है।

(३) सप्तम स्थानमें यही योग बध या बन्धन-कारक, साधारण लोभी, स्त्री रतिमें असमर्थ, तस्कर प्रवृत्तिका होता है।

सूर्य गुरु योगका फल

(१) सूर्य और गुरुका योग लग्नमें होनेसे जातक मन्त्री, सेनापति अथवा महान् व्यक्ति होता है। विद्वान् धनवान् भोगी और प्रसिद्ध मनुष्य होता है।

(२) चतुर्थमें यह योग नीतिज्ञ, वेदज्ञ, साहित्यज्ञ तथा प्रिय वार्त्तालाप करने वाला होता है।

(३) सप्तम स्थानमें यह योग स्त्री-जित, पितासे द्वेष रखने वाला, कामी, विभिन्न धनसे पूर्ण मानवको जन्म देता है

(४) दशम स्थानमें गुरु और सूर्यका संबंध व्यक्तिको अत्यन्त कीर्त्तिशाली, सुखी, मानी तथा उच्चपदको सुशोभित करने वाला बनाता है।

सूर्य शुक्र योगका फल

(१) लग्नमें यह योग मनुष्यको कलह प्रिय, उद्दण्ड, मलिन रहने वाला, दुःखी; नीच प्रकृतिका धन और स्त्री सुखसे रहित करता है।

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

चांदीकी अनुभूत तेजी मंदी

[ले०—श्री पं० मोतीलालजी पण्ड्या अर्घकाण्डवाचस्पति]

[विद्वान् लेखकने अर्घकाण्ड (तेजीमंदी) विज्ञान पर गम्भीर अनुशीलन किया है। आपने 'सर्वतोभद्रचक्र' 'वाणिज्यसर्वस्व' आदि कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं। इस अङ्कसे 'श्रीस्वाध्याय'के व्यापारी वर्गके लाभार्थ आपने अपने विचार लिखने प्रारम्भ किये हैं। अभी आपने चांदी पर ही अपने विचार लिखे हैं, आगामी नववर्षाङ्कसे सभी वस्तुओं पर आपके सूक्ष्म विचार और महार्घ समर्घ (तेजीमंदी) के गूढ़ रहस्य प्रकाशित किये जावेंगे। अभी एक हमारे स्नेही दैवज्ञ महोदयने हमें लिखा था कि 'श्रावणी ३० तक प्रत्येक वस्तुमें भयानक मंदी आयेगी जो गत फाल्गुन (फरवरी मार्च) माससे भी अधिक भयानक होगी।" किन्तु ग्रह योगोंको देखते हुए हमें ऐसी भीषण मंदी प्रतीत नहीं हुई, अतः इस विषयमें श्री पण्ड्याजी (इस लेखके लेखक) से भी पत्र द्वारा परामर्श किया। उन्होंने ता० ११-६-५२के पत्रमें जो उत्तर दिया वह हम यहां अपने व्यापारी पाठकोंके लाभार्थ प्रकाशित करते हैं—"कृपाकार्ड मिला। श्रावणी अमावास्या तकके ग्रह योगोंको देखते हुए चांदीमें क्रमबद्ध घटाबढ़ी होते हुए कुछ मंदीकी तरह चांदीका झुकाव भले ही रहे, परन्तु फरवरी मार्च जैसी भीषण मंदी नहीं जंचती। ता० २८ जुलाईसे ८ अगस्त तककी तेजीका अच्छा चांस है! ता०६ से २० अगस्त तक मंदी तथा मासान्त तक तेजीका ध्यान मजबूत है। सितम्बर मासमें क्रमबद्ध तेजी मंदी रहेगी। ईश्वरेच्छा लोकादृष्ट एवं मेदिनी ज्योतिषके ग्रहयोगोंके द्वारा यदि विश्वपर प्रभाव डालने वाले कदाचित् कोई योग हों तभी दृष्टियोग विफल हो सकते हैं।" सम्पादक]

चांदीकी दैनिक तेजी-मन्दी

तारीख	जुलाई
१ मं	तेजी साधारण
२ बु.	तेजी होकर मंदी
३ गु.	मंदी होकर तेजी
४ शु.	तेजी होकर मंदी
५ श.	मंदी
६ रवि	मंदी
७ सो.	मंदी
८ मं.	मंदी होकर साधारण तेजी
९ बु.	तेजी होकर मंदी
१० गु.	मंदी
११ शु.	मंदी होकर तेजी
१२ श.	तेजी
१३ रवि.	तेजी
१४. सो.	,,
१५. मं०	,,
१६ बु.	तेजी होकर साधारण मंदी
१७ गु;	तेजी
१८ शु.	तेजी
१९ श.	मंदी
२० रवि.	,,
२१ सो.	तेजी
२२ मं.	,,
२३ बु.	मंदी
२४ गु.	तेजी
२५ शु.	मंदी
२६ श.	,,
२७ रवि	मंदी होकर तेजी
२८ सो.	तेजी

२६ मं.	,,
३० बु.	तेजी होकर मंदी
३१ गु.	तेजी

नोट—ता० २८को चांदी खरीदें।

तारीख	अगस्त
१ शु.	तेजी
२ श.	,,
३ रवि.	,,
४ सो.	,,
५ मं.	,,
६ बु.	,,
७ गु.	,,
८ शु.	,,
६ श.	मंदी
१० रवि	,,
११ सो.	मंदी होकर तेजी
१२ मं.	मंदी होकर तेजी
१३ बु.	मंदी
१४ गु.	,,
१५ शु.	,,
१६ श.	,,
१७ रवि.	,,
१८ सो.	,,
१६ मं.	,,
२० बु.	मंदी होकर तेजी
२१ गु.	तेजी
२२ शु.	,,
२३ श.	,,
२४. रवि	,,
२५ सो.	,,
२६ मं.	,,
२७ बु.	,,
२८ गु.	मंदी होकर तेजी
२६ शु.	तेजी
३० श.	तेजी
३१ रवि.	तेजी

नोट—ता० ८को खरीदा हुआ माल बेच दें यह योग प्रजल तेजीका है। ६-१० रुपयेकी तेजी संभव है।

तारीख	सितम्बर
१ सो.	मंदी होकर तेजी
२. मं.	तेजी
३. बु.	तेजी होकर मंदी
४. गु.	मंदी होकर तेजी
५ शु.	मंदी
६ श.	मंदी होकर तेजी
७ रवि.	तेजी
८ सो.	तेजी
६ मं	तेजी
१० बु.	तेजी होकर मंदी
११ गु.	तेजी
१२ शु.	मंदी
१३ श.	,,
१४ रवि	मंदी
१५ सो.	,,
१६ मं.	तेजी
१७ बु.	,,
१८ गु.	,,
१६ शु.	,,
२० श.	,,
२१ रवि.	मंदी
२२ सो.	,,
२३ मं	,,
२४ बु.	,,
२५ गु.	तेजी
२६ शु.	,,
२७ श.	,,
२८. रवि.	,,
२६ सो.	,,
३० मं.	,,

ता० ११को तेजीमें चांदी बेचें। ता० १६को खरीदें। उत्तम लाभ होगा। ता० २५ से ३० तकका तेजीका योग भी उत्तम है।

चांदी सोनेका "त्रैमासिक व्यापार भविष्य"

[ले०—राजवैद्य डा. बी. दत्त मिश्र, कामरशीयल एस्ट्रोलोजर]

गत तीन मासका व्यापार जिस प्रकार चला उसके संबंध में 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा परिस्थितिका पर्यवलोकन एक दैवज्ञके नाते कराया था और उसी आधार-शिलाको लेकर पुनः 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा जनता-जनार्दनके हितार्थ दैवज्ञके नाते स्वकीय बौद्धिक और शास्त्रीय बलके आधार पर त्रैमासिक व्यापार भविष्य मास जुलाई, अगस्त, सितम्बर तकका पुनः पाठकोंके सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है।

जुलाई १९५२ ई०

इस मासमें सूर्य हर्शल, शुक्र और मंगल, गुरु ये पांच ग्रह फलवती राशियोंमें हैं, कर्क, वृश्चिक और वृष ये तीनों राशियां प्रत्येक वस्तुको तेज करने वाली हैं और शनि तुलामें है, यह मन्दीकारक है तथा कर्कको दशम दृष्टिसे देखता है। अतः बाजार इस मासमें विशेष तेज न जाकर स्टेडी ही रहेगा। किन्तु मन्दीका प्रभाव शनिकी कृपासे अवश्य ही होगा। अर्थात् १८ जुलाईसे पूर्व बाजारमें तेजी चलेगी फिर मंदी जानें

ता० २को हर्शल और गुरुकी सेक्स्टाइल होती है, इससे बाजारमें अवश्य तेजी आवेगी। ता०३को बुध और मंगलकी चतुर्थ दृष्टि आती है, जिससे बाजारमें तेजी आवेगी और ता० ३ को ही शुक्र हर्शलकी युति कर्क राशिमें होती है, अतः यहां पर रुई, चांदी, कपड़ेमें (सुपरफाइन) अच्छी तेजी आवेगी। फिर ता० ४ को शुक्र-गुरुकी सेक्स्टाइल है, यह भी चांदी सोनेके बाजारको तेज करेगी। विशेष रूपसे चांदीमें तेजी आवेगी। फिर ता० ६ को सूर्य हर्शलकी युति कर्कमें आती है, जिससे चांदी सोनामें विशेष तेजी आवेगी, यह अच्छी तेजी लावेगा। ता० ७ को हर्शल चन्द्र आपोजीशन है, जिसके प्रभावसे दिनके स्टे० टा० ४।२५ पर २ घण्टेकी चांदी सोनेमें तेजी आवेगी। परीक्षा करके देखें और उसी दिन ही ६।१ पर सूर्य-चन्द्र समम होता है, जिससे २ घण्टेके लिए तेजी आवेगी। ता० ८ को भी खुलता बाजार तेजीमें खुलेगा। ता० ९ को गुरु और मङ्गलकी समम दृष्टि बनती है, इसका प्रभाव दो दिन तक रहेगा, जिससे चांदी सोनेमें तथा रुईमें भी तेजी आवेगी। पुनः ता० १३ को चन्द्र शनि समम है, सो खुलते बाजारमें चांदी सोनेमें तेजी आवेगी और ता० १५ को ३ बजे दिनमें चांदी सोनेमें तेजी आवेगी और ता० १६ को बाजार मन्दा रहेगा। ता० १८ को बाजारमें फिर तेजी आकर बाजार यहांसे ही मन्दामें बदलेगा। ता० २१ को खूब घटाबढ़ी चलेगी और ता० २२ को भी बाजार मन्दा रह कर कुछ पड़ा-सा रहेगा। फिर ता० २४ को बाजारमें एक बार गरमी आकर फिर मन्दा होगा। ता० २९ को जरूर तेज होगा, किन्तु उतना ही फिर मन्दा भी होगा। खुलते बाजार में ३० को फिर चांदी सोनेमें तेजी आवेगी और बाजार बंद मन्दीमें होगा।

अगस्त १९५२ ई०

यह मास मन्दीका महत्त्वपूर्ण असर लाने वाला है, क्योंकि इस मासमें शुक्र, सूर्य, शनि, बुध मन्दीकारक राशियों में है। गुरु-मंगल तेजीकारक राशियोंमें है तथा अन्य योगा-योग भी मन्दीकारक हैं, लम्बी तौरसे ता० १ को बाजार स्टेडी रहेगा और २ को चांदी सोनेमें मंदी आवेगी। ता० ३ को बाजारमें गरमी आवेगी साधारण-सी, जिसका होना न होने के समान है। ता० ४ को अच्छी घटबढ़ चलेगी और ता० ५ को निश्चित रूपसे बाजार मंदा और पड़ा रहेगा। ता० ६ को मंदीका योग है और आज कई योग बनते हैं, जिनका असर मन्दीमें ही होगा। किन्तु मंदी भी अच्छी आवेगी, तेजी के साथ परीक्षा करें। खुलते ही बाजारमें फिर ता० ९ को चांदी-सोनेमें तेजी आवेगी। ६।२९ पर और १० को भी मन्दी ही रहेगी, किन्तु खुलता बाजा कुछ-कुछ गरम रहे। ता० ११ को अच्छी मन्दी आकर तेजी आवेगी। चांदी, सोना, रुई, तिल-तैल B. Twills और चांदी-सोना १० से ही गरम चल कर ११ खुलते बाजार तक गरम रहे, फिर

मन्दा होवे। ता० १२ को मन्दी और विशेष रूप से आवेगी, रुईका बाजार उस दिन उठ सकता है। १३ को मन्दी रहे। ता० १६ को बाजार तेज होवे, १७ को घटाबढ़ी चले, १६ को मन्दा रहे। रातके ६ बजे बाद तेजी आवे, २० को बाजार में अवश्य ही तेजी आवेगी। २२ को बाजार खुलता ही मंदी में खुलेगा। २३ को चांदी सोनामें गरमी आवेगी और २४ चांदी सोनाका बाजार २।३६ पर तेज होगा २ घण्टेके लिए। २५।२६।२७ को बाजार मंदीमें चलेगा, फिर २८ को बाजार में तेजी आवेगी और ३१ को खूब घटाबढ़ी चलेगी।

सितम्बर १९५२ ई०

इस मासमें सूर्य कन्यामें, शनि तुलामें, मङ्गल धनुमें, शुक्र तुलामें, बुध सिंहमें हैं, विशेष ग्रह मंदीकारक राशियोंमें हैं और गुरु वृषमें वक्री हो रहा है। ११ को बुध अतिचारी है, इसका कारण इन योगोंके बलसे यह मासभी व्यापारके के लिए मंदीकारक विशेष रहेगा। ता० १ को गुरु बुधकी चतुर्थ दृष्टि है। यह कुछ तेजी करेगा। ता० २ को शुक्र, शनिकी सेमीस्क्वायर है, इससे बाजारमें तेजी और मन्दी दोनों ही आवेंगी। ता० ३ को खुलते ही बाजारमें तेजी रहेगी। ता० ४ को तेजी रहेगी और ता० ५ को घटाबढ़ी चलेगी। ता० ६ को मालूली तेजी आवे, ता० ६ को तेजी आये, चांदी सोनेमें मंदी आवे। ता० ७ को मंदी रहेगी, एक तेजी आवेगी खुलते बाजारमें ही, ता० १० को भी तेजी आवेगी। ता० ११ को खूब घटाबढ़ी चलेगी, किन्तु असर नहींके बराबर होकर बाजार पड़ा रहेगा और दिनके १।४२ पर मंदी का असर होवे अर्थात् बाजार खुलते ही मन्दी आवेगी और यह २।३ बजे तक रहेगी। १।४२ के बाद रुख बदल जायगा। १३ को बाजारमें खुलते ही तेजी और फिर २ बजे चांदी-सोने में अच्छी मंदी आवेगी, अन्नमें तेजी आवेगी। ता० १४ को मंदी रहेगी, सूर्य गुरुकी पञ्चम है। ता० १५ को शुक्र-शनि की युति है, अतः मंदी रहेगी। ता० १६ को गुरु वक्री होता है, यहांसे ही बाजारमें अच्छा परिवर्तन होगा। ता० १८ को घटीबढ़ी चलेगी। बाजार ऊपर ही चलेगा, ता० १६ को मंदी रहेगी एवं २० को भी। ता० २१ को दोपहर चांदी-सोना तेज होगा।

(पृष्ठ ५४ का शेष)

(२) चतुर्थमें यह योग मनुष्योंको शोकार्त, संसारसे द्वेष रखने वाला, दरिद्र तथा नीच सेवा करने वाला बताता है।

(३) सप्तम स्थानमें सूर्य-शुक्र योग स्त्रीके वशमें रहने वाला, धन हीन, द्वेष्य, धनादिसे रहित तथा वनादिमें विचरण करने वाला करता है।

(४) दशममें यह योग किसी प्रदेशके राज्यका मन्त्री, शास्त्रज्ञ, कला सुखका इच्छुक, मतिमान, धनवान् और मोटर आदि वाहनके सुखसे परिपूर्ण बनाता है।

सूर्य-शनि योगका फल

(१) लग्नमें यह योग अनिष्टकर कहा गया है, मनुष्य कदाचारी, मलिन बुद्धिका, निन्दित कर्म कारक, पापी तथा दुःखी होता है।

(२) यह योग चतुर्थमें होनेसे नीच, दरिद्रतासे युक्त, परिवारसे वियुक्त तथा विपन्न होता है।

(३) सप्तम स्थानमें उद्भूत योग मनुष्यको आलसी, दुर्भाग्य युक्त, मन्द बुद्धिका, धन और स्त्री सुखसे रहित और महा मूर्ख बनता है।

(४) दशम स्थानमें यह योग मनुष्योंको विदेश गमन शील करता है—राजासे धनकी प्राप्ति होने पर भी चोरों द्वारा धन हरण कर लिया जाता है। ये सब फल पूर्ण अंश साम्य होने पर पूर्ण होते हैं अन्यथा अपूर्ण फल होता है।

★

ता. २२।२३ को चांदी सोना तेज होकर फिर मन्द। रहेगा। ता. २५को चन्द्र मंगल युति योगसे चांदी सोना तेज होगा। ता. २६को घटा-बढ़ी होगी और बाजार मन्दा रहेगा ता. २७।२८को बाजार नरम रहेगा और २६को तेजी आवेगी एवं ३०को भी। इस प्रकार यह योगायोग है विशेष जानकारीके लिये हमारी Monthly Fore east मंगावें।

★

★ तेजी मन्दीके अनुभूत प्वाइन्टस् ★

[लेखक—श्री ज्योतिर्विद् राजारामजी जैन, हस्त रेखा, अंग-परीक्षा-विशेषज्ञ]

गतांकमें अस्वस्थतावश लेख नहीं पहुंच सका, किन्तु यथावत् सेवा करनेके अब भी अयोग्य होते हुए मान्य सम्पादक जीके आदेश पर सेवार्थ तत्पर हूँ। अस्तु। १ जुलाईको बाजार जिधर चल रहा है, उसी रुखका व्यापार गली लगा कर करना ही उचित होगा। बाजारकी चाल फ्रण्टियर मेलकी भांति मन्दीकी ओर गत फाल्गुन मासकी भांति चलनेकी पूर्णाशा है। उसकी रूपरेखा तो जूनमें ही बनने लगेगी, वस्तुतः वह जूनकी ५ तारीख होगी। इस मन्दीमें वस्तु मात्र जो कि जुलाई भर या २३ जुलाई तक मन्दी चलेगी। १३ जुलाईको मकरे राहु कर्के केतु रुई रेशम वा ओढ़ने बिछानेकी अन्य वस्तुएं किराना वा काली मिर्चको तेज करने वाला योग अवश्य है, किन्तु पहले मन्दीका झटका भी अवश्य लगता है शेयर्समें १००) १००) रु. दैनिककी घटा-बढ़ी दिखाई देगी। आषाढ़ी पूनम शुभवारी शुभ नक्षत्र युता गजबका मन्दा चाहती है। सूर्यास्त काल वायु परीक्षण भी शुभ निकलने पर ऐसा ही होगा। अमान्त आषाढ़में ५ सोमवार गुजराती आषाढ़में भी ५ सोमवारमें भी मन्दीके प्रतीक हैं। श्रावणकी सोमवती तक मन्दी ही मन्दी चलनेकी आशा है। आगे बुध वक्री होकर अस्त स्वभावतः सदैव बाजारको पलट देता है। और पलट देगा।

अन्य योग श्रावणमेंबुधवारा १५ मुहूर्ती चन्द्र दर्शन शुक्ल पक्षमें शुक्रोदय पश्चिममे, शुक्रास्त पूर्वसे विपरीत फल करेगा। ४ अगस्त सन् २५को भी इसी भांति मंगलवारा श्रवण नक्षत्रमें ग्रहण पड़ा था, तब वस्तु मात्रमें ग्रहण पड़ते ही तेजी चमकी थी। परन्तु यहां शुदि १४ तिथिक्षय पूनम ग्रहण है। अतः रुई; काली मिर्च, रेशम, ओढ़ने बिछानेकी समस्त वस्तुओं पर मन्दीका योग है, जब कि अन्य तेजीके समर्थ योग होते हुए भी मन्दीको रोक न सके तो आश्चर्य नहीं है। ३१ मार्चसे मंगल गुरु प्रतियोग चल रहा है, मंगल तुलामें गुरु मेषमें चन्द्रमा जब जब-मेष वा तुलामें आता है, मन्दी ला रहा , आगे भी लाता रहेगा। वस्तुओंमें कण्ट्रोल उठनेकी पूर्ण सम्भावना है ध्यान रखियेगा किन्तु १६ अगस्तको मंगल वृश्चिक जलराशिमें प्रवेश करते ही जलकी श्रेष्ठ वृष्टि सर्वत्र करेगा। वर्षा योग इस वर्षमें प्रायः श्रेष्ठ हैं। ५।६।१३। २१।२२।२८।३० जुलाईसे श्रेष्ठ वर्षा होती दिखाई देगी। वृश्चिके भौम गिरी वस्तुओंको उठानेमें सहायता करेगा। बुधवारी प्रतिपदामें अन्नमात्रको अवश्य तेज करती है। २१ अगस्त तक बाजारमें तेजियां रहेंगी। बादको भादवा शुदि २को शुभवारा ४५ मुहूर्ती चन्द्र दर्शन धमाके बन्द मन्दी लावेगा। २७ अगस्तको शुक्र शनियोग वस्तुमात्रको तेज करनेकी अपूर्व क्षमता रखता है, पश्चात् २८ अगस्तको गुरु राहु केन्द्र योग मंदीका प्रबल योग है। ३० अगस्तको हस्ते चतुर्थ चरणे शनि अपने कालमें ८ दिसम्बर सन् ५१से विपरीत फल करेंगे। ४ सितम्बरसे बादल वर्षा और भावोंमें भारी परिवर्तन दिखाई देगा। ८ सितम्बरको गुरुवारकी चमत्कारी वर्षा होगी, बाजार जिधर चले। एक सप्ताह तक आप भी उसी रुखका व्यापार करें। वर्षा कालमें कन्याका अतिचारी बुध १८ सितम्बरसे अन्नादिमें तेजीका प्रतीक है, २२ सितम्बरको शन्यस्त वर्षा हवाके जोरमें गुड़, खांडके व्यापारियोंमें उत्साह उत्पन्न करेगा, जबकि अन्नादिमें मन्दे होंगे। चांदी २३ सितम्बर जिधर चले, विजय दशमी तक उधर ही चलेगी, लाभ हानिका पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता महोदय अपने ही ऊपर जान कर बाजारकी पोजीशन देखकर ही काम किया करें।

त्रैमासिक व्यापार रुख

[लेखक—ज्योतिषाचार्य रमलाचार्य श्री पं. गणेश विद्यासागर विश्वनाथ शर्मा दैवज्ञ]

जुलाई १६५२ ई०

ता० १ जुलाईको सूर्य शनि केन्द्र योग तथा नेपच्यून मार्गी होगा, यह योग तेजीका है। ता. २को गुरु हर्शल त्रिएकादश योगमें व्यापारियों ! घबराओ नहीं अभी हमारी कलममें ताकत तथा ग्रहोंमें क्रांति है बिना किसी प्रकारकी ननुनचके तेजी खेल डालो, आपको लाभ होगा। ता. ३को शुक्र हर्षलकी युति होगी यह बाजारोंको दोनों तरफ चला कर भी तेजीका ही पैगाम सुनाती रहेगी। ता. ४को गुरु शुक्र त्रिएकादश योग तेजी चाहता है। ता. ५ आज बुध शनि त्रिएकादश सूर्य शुक्र युति होगी यह बाजारोंमें भारी घटाबढ़ी कर देनेकी शक्ति रखता है, होशियारीसे खेलना। ता. ७ आज बाजार कुछ मंदीकी तरफ झुक जावेंगे। ता. ८को चन्द्र शुक्र दृष्टि मन्दीकी ही सूचना करती है। ता. ६ शनि चन्द्र त्रिकोण आये उछाले मालका बेचाण करो। ता. १० कर्क राशि पर सूर्य प्रवेश करेगा इसका असर ४ अंशों तक रहेगा। ता. १४ तक एक लाईन चलेगी यहां रूई डिफर्डमें तेजी तथा चांदी सुवर्ण सरसों मटर ग्वार बारदानामें आये उछाले मालका बेचाण करो और नफा खाते रहो, बेचके लेना। ता. १५को कर्क संक्रान्ति मंगलवारी होगी यह बाजारमें परिवर्तन कर देगी, चांदी सोना ५) ७) की घटाबढ़ी करने वाला है, नजरानेसे व्यापार करो अथवा हमारी मंथली रिपोर्ट मंगवाकर देखो, यह चांस ता. २० तक चलेगा जिसमें ता. १६-१८-१६को अच्छा परिवर्तन करने वाली हैं ता. २० को तेजी चलेगी। ता. २४ तक तेजीकी तरफ रहेगा। ता. २५-२६-२७ को आये उछाले मालका बेचाण करो ता. २८ से ३१ तक दोनों तरफ चलता हुआ बाजार मंदा अधिक रहेगा।

ता. २ जुलाईको गुरु हर्शल त्रिएकादश योग बनेगा।

आप क्या समस्त संसार जानता है कि ता. १८ फरवरीको गुरु हर्शलका केन्द्र योग बना था वहां महामन्दी आई, उसी प्रकार ता. २ जुलाईको गुरु-हर्शल त्रिएकादशयोग बनेगा। अतः बादल बिजली वर्षा होना जरूरी है और रुई सूत आई-रन शेयर डिफर्ड, सरसों मूंगफली, अलसी, मटर, गुवार चांदी सोना सब वस्तु तेज होगी। आंकड़ा (व्यापार रुख) में देखना।

सूर्य हर्शलकी युति ता. ६ जुलाई को।

जब जब इन दोनोंकी युति होती है तब तब बाजारमें मंदी आती है। इसका प्रभाव संसार भरकी सब वस्तुओं पर आया करता है।

ता. १४ जुलाईको राहु मकरमें केतु कर्कमें, ता. १५ को सूर्य कर्कमें यह योग महान् मंदी कारक बनेगा। वैसे तो इसका प्रभाव १३ दिन चलता है परन्तु ४ दिन तो भारी चमत्कार बतायेगा इसका असली रूप है मन्दी।

अगस्त १६५२ ई०

ता. १ अगस्तको मंगल हर्शलका त्रिकोण-योग बनेगा यह बाजारको तेज करता है, घटे भावोंमें माल खरीद करो। ता. ३को सूर्य शनि त्रिएकादश योग होगा, ता. १ से ३ तक तेजी। ता. ४ सिंह राशि पर शुक्रका प्रवेश होगा, ता. ४-५ को थोड़ा मन्दा रह कर बाजार तेज। ता. ६ को बुध शुक्र युति है नजराने द्वारा व्यापार करो थोड़ा तेज होनेपर बाजार में मालका बेचाण करना भाव मिलेंगे, नजराने अवश्य निकल जावेंगे। ता. ७-८को गुरु नेपच्यून षडष्टक होगा यह बाजारको दोनों तरफ झुलाता रहेगा भाव दोनों पार्टियोंको मिलेगा जीत तेज वालेकी अधिक दिखाई देती है। ता. ६ मंगल गुरु दृष्टि बाजारको अच्छा मन्दा कर देगी। ता. १० बुध; राहु दृष्टि उछालेमें मालका बेचाण करो। ता. ११ मंगल बुध केन्द्र योग दोनों तरफ चलेगा। ता. १२ सूर्य बुध युति तेज। ता. १३ सूर्य, राहु दृष्टि मंदा कर देगी। ता. १४-१५ तक इसका असर रहेगा। ता. १६ सिंह पर सूर्यका प्रवेश होगा वृश्चिक पर मंगल असर तेजीका थोड़ा तथा मन्दीका अधिक समझेगा ता. १७ बुध हर्शल द्विर्द्वादश योग दोनों तरफ घटा-बढ़ी

ता है इसका प्रभाव ता. १९ तक रहेगा। ता. २०को बुध में उदय होगा यह बाजारको तेजीकी तरफ ले जावेगा। . २३ तक तेजी चलेगी। ता. २४को बुध मार्गी होगा यह दोनों तरफ चलता तेज ही करेगा। ता. २८ तक घटे वोंमें माल खरीद करो। ता. २९को गुरु राहु केन्द्र योग होगा यह बाजारमें मंदी कर देगा। ता. ३०को दोनों तरफ घटाबढ़ी चलेगी। ता. ३१ बुध नेपच्यून त्रिएकादश योग तेजी ना देगा।

पापकर्तरी योग

ता. १६ अगस्तको सूर्य सिंहमें तथा शनि कन्या पर है, इन दोनोंके बीच शुक्र फंस गया है इसको कर्तरी (कैंची) योग कहते हैं यहां नजराना द्वारा व्यापार करना चाहिए घटा बढ़ी होगी।

भारी मंदी फिर चलेगी

ता. १८ अगस्तको राहुकी दृष्टिमें प्लूटो आयेगा यह इसी प्रकारकी परस्पर दृष्टि सन् १९३४में हुई थी तब बाजारोंमें भारी मंदी चल पड़ी थी स्मरण रखना यह भी एक चांस है।

सितम्बर १९५२

ता० १ को बुध गुरु केन्द्र योगमें नजराने लगा दो लाभ होगा मन्दीमें। ता० ३ सिंह राशिमें बुधका प्रवेश होना बाजार मजबूत बनाता है। ता० ३ से ८ तक राहु नेपच्यून षडष्टक योग भारी परिवर्तन करेगा। मेरे ध्यानमें जहां भी बाजार घटे, खरीद करो लेकर बेचो, मुझे यहां पर अच्छी तेजी दिखाई देती है। ता० ८ को राहु नेपच्यून त्रिकोण योग बनेगा, यह बाजारोंमें फिर मन्दीका जोश पैदा करेगा। आये उछाले बेचाण करो और नफा बढ़ाते रहो। ता० ११ गुरु बुध वक्र बुधका अस्त भारी परिवर्तन ४) ५) की घटाबढ़ी एक ही दिनमें करेगा। ता० १२ सूर्य राहु षडष्टक घटाबढ़ी। ता० बुध मङ्गल केन्द्र मन्दा। ता० १४ सूर्य गुरु केन्द्र तेज। ता० १५ बुध शनि द्विर्द्वादिश मंदा। ता० १६ कन्या संक्रांति मंगल बारी घटे भावमें माल खरीदो। ता० १७ के शाम तक इसका असर रहेगा। ता० १९ बुध गुरु त्रिकोण बाजारको समान बनाये रखता है। ता० २० शुक्र नेपच्यून युती भावोंमें तेजी करता है। घटे भावोंमें माल खरीदो, अच्छी तेजी चलेगी लेकर बेचो। ता० २२ तुला राशिमें शुक्रका प्रवेश होना फिर मन्दीका समर्थन करता है। ता० २३ गुरु नेपच्यून षडष्टक मन्दा। ता० २४ सूर्य बुध युति तेज। ता० २५ मङ्गल हर्षल षडष्टक योग तेज। ता० २६ मङ्गल राहु त्रिएकादश तेज। आज तेजीका नफा खा लेना अच्छा है। ता० २७ समान। ता० २८ गुरु षडष्टक कुछ मन्दी। ता० २९ मंगल नेपच्यून त्रिएकादश दोनों तरफ बाजार चलता रहेगा। ता० ३० तक इसका प्रभाव रहेगा।

दोनों ९० डिग्री पर

ता० ८-९-५२ को राहु नेपच्यून त्रिकोण योग यह करीब ७ वर्षमें आता है। और ९॥ दिन तक अपना असर करता है, पहिले यह योग बना तब अच्छी तेजी आई थी।

गुरु सूर्य ९० डिग्री पर

ता० १४ सितम्बर १९५२ को यह योग तेजीका है। चलती गाड़ीमें सवार होकर जाना चढ़ते समय तो आपको परेशानीका मुकाबला करना पड़ेगा। लेकिन सीट आपका अवश्य मिल जावेगी। यहां कन्या राशिमें पंचग्रह योग मंदी का द्योतक है।

●

त्रैमासिक व्यापार रुख

[लेखक—श्री यादवचन्द्रजी जैन ज्योतिर्विद्]

श्रावण मास

इस मास चांदीमें घटावढ़ी चलेगी। कई बार कई एक तरफा लाइनें चलेंगी। गुड़ इस मास धीरे २ मन्दीकी ओर ही जावेगा। ता० २५ जुलाईको बुध वक्री होने पर गुड़में इक तरफा लाइन बनेगी। हमारा ध्यान मन्दीका है। तिलहन पदार्थ वदी पक्षमें मंदे ही रहेंगे। ता० १६ या १८ जुलाई से तेजी आवेगी। फिर ता० २४ जुलाईसे सरसों आदि तिलहनमें इकतरफा लाइन बनेगी, परन्तु कौन-सी इकतरफा लाइन बनेगी यह बाजार-रुख देख कर विचार करें। ता० २ या ४ अगस्तके बाद चांदी सरसोंमें अच्छी तेजी चलेगी। ता० ५ अगस्तको चन्द्र-ग्रहण हो रहा है। उस समय चन्द्रमा पर मंगलकी दृष्टि होनेके कारण लाल वस्तुओंमें तेजीका वातावरण बनेगा। २४ जुलाईके दिन बुध वक्री हो रहा है, सो यह संपूर्ण पदार्थोंमें मन्दीका वातावरण बनावेगा। श्रावणसे मगसिर तक किसी बड़े नेता या महान् पुरुषकी मृत्यु और छत्रभंग होनेका योग बनता है।

भाद्रपद मास

इस मास ५ बुध तथा ५ गुरुवार हैं, अतः यह मास अत्यन्त सुख या शांतिमय व्यतीत होगा। चांदीकी पिछली चालू तेजी इस मासमें भी चलेगी। सरसों आदि तिलहन पदार्थ इस मास तेजीमें ही रहेंगे। ता० २८ से विशेष रूप से तेजी आना सम्भव है। रुईमें वदी पक्षमें घटाबढ़ीके साथ मन्दी आकर सुदी पक्षमें तेजी अवश्य होगी।

आसोज मास

इस मास प्रत्येक वस्तुके भावोंमें भारी परिवर्तन होंगे। मेष राशि पर गुरु वक्री हो रहा है, सो यह कहीं न कहीं युद्ध की अग्नि भड़कावेगा, अथवा कोई भारी उपद्रव करायेगा। ता० २४ अगस्तसे सरसों आदि तिलहनमें फिर इकतरफा लाइन चलेगी और यहींसे अन्न आदि पदार्थोंमें भारी मन्दा चलना भी संभव है। चांदीमें कई बार इकतरफा लाइनें बनेंगी। ता० २३ सितम्बरको चांदीमें अच्छी तेजी आनेकी सम्भावना है।

★

तीन मासका साप्ताहिक व्यापार भविष्य

[लेखक—ज्यो. भू. दै. र. पं. श्री गिरिधारीलालजी शर्मा]

प्रथम सप्ताह

आषाढ शुक्ला १० बुधवार ता० २ से इसे ७ जुलाई तक तेजी मन्दी दोनों होगी। ता० २ के १२ बजेसे या २ बजेसे ता० ४ तक मंदी, बड़े भाव बेचते रहो ता० ५ के १२ बजेसे तेजी ता० ५ से वर्षाका भी प्रादुर्भाव अच्छे रूपसे होगा।

द्वितीय सप्ताह—

ता० ८ से १४ जुलाई तक कुछ मंदीमें ज्यादा जोर रहेगा रुई ३ दिन अचूक मंदी रहेगी कोई नहीं रोक सकता। बाढ वर्षाका बहुत वेग रहेगा। ता० ८-९-१० में २ दिन अच्छी मंदी रहेगी ता० १२ को बहुत घटबढ।

तीसरा सप्ताह—

ता० १५ से २१ जुलाई तक रुई चांदीमें अवश्य तेजी वर्षाकी बहुत भरमार रहेगी! वर्षासे कई एक जगह प्रलय का रूप होगा। ता० १५-१६में दोनों तेजी नहीं एक तो अचूक तेजी। ता० १७-१८ को अच्छी घटबढसे तेजी। ता० २१ को अच्छी मंदी होगी हमारा ऐसा ध्यान है।

चौथा सप्ताह—

ता० २२ से ३० जुलाई तक रुई चांदीमें अच्छी घट बढ होगी, घटे वहां खरीदो अच्छी तेजी होगी। २२-२३-२४ में घटबढ अच्छी होगी। ता० २४ को बहुत मंदीकी संभावना है। ता० २५ को घटे वहां खरीदो। ता० २६ की तेजी कोई नहीं रोक सकता। १ बजे बाद होगी। ता० २८ को तेजी रहे तो भविष्यमें भी तेजी समझो। १ सप्ताह तक यहां तेजी रुईकी नहीं कह सकते, सोना चांदी अवश्य तेजी रहेगी।

पांचवां सप्ताह—

ता० २६, जुलाईसे ५ अगस्त तक व्यापारमें बहुत उथल-पुथल होगी, व्यापार तेजीका रखे। ता० २६ को तेजी होके मंदी होगी। ता० ३० को २ बजेसे अवश्य तेजी, ता० १-२-४ को अवश्य तेजी जंचती है। रुईमें विशेष तेजी नहीं जंचती है। ता० ५ को बाजार भड़केके साथ खुलेगा, दो बजेसे मंदी। ता० १ से ५ तक वर्षा और पवनका बहुत वेग रहेगा। जिसमें पवनसे बहुत हानि होगी।

छठा सप्ताह—

ता० ६ से १३ अगस्त तक साधारण सी तेजी होगी। ता० ६ से ८ तक तो घट-बढ रहेगी या मंदी रहेगी। ता० ६ से अच्छी तेजी रहेगी। ता० ६-११-१२-१३ को तेजी ता० ७-८ में एक मंदी होगी अच्छी।

सातवां सप्ताह—

ता० १४ से २० अगस्त तक घट के बढेगा। पहले १७ तक घटेगा। सोना, चांदी साधारण घटेगा। रुई अच्छी घटेगी। ता. १४-१५ अच्छी मंदी। ता. १६ को मंदी होके तेजी होगी। ता. १८ को एकदम बाजार घटेगा, ४ बजेसे बढ़ेगा। ता. १६-२० में एक तेजी एक मंदी।

आठवां सप्ताह—

ता. २१ से २८ अगस्त तक साधारण बाजार रहेगा, १) रुपया घटेगा तो दूसरे दिन उतना ही बढ़ेगा। ता. २१ को मंदी, २२ को तेजी। यदि ता. २२ को तेजी होगी तो २३ को अवश्य तेजी आवेगी। ता. २५ को मन्दी, ता. २६ को तेजी होगी। सोना, चांदी, रुई मन्दी होगी। ता. २७ को २ बजे से तेजी, ता. २८ को ३ बजे तक मन्दी पीछे तेजी दो तरफा लगावें।

नौवां सप्ताह—

ता. २६ अगस्तसे ४ सितम्बर तक तेजीका व्यापार रखो अगर ता. २६ को बाजार तेजी रहा है तो निश्चय तेजी समझो। चूक नहीं होगी। ता. २६-३० अच्छी घटा-बढ़ होगी। ता. १ से तेजी होगी, ४ को मन्दी होगी। यहां पर वर्षाकी खैंचातानी होगी, दक्षिणमें उत्पात होगा।

दशवां सप्ताह—

ता. ५ से १२ सितम्बर तक रुई चांदी, सोनामें अच्छी घटबढ़ होगी, पहले मन्दी होके तेजी होगी। रुई विशेष मन्दी होगी। ता. ८ से सोना, चांदीमें विशेष फेरफार होगा घटे वहां खरीदो, ता. ५-६ को घटबढ़ बहुत होगा। ता. ८ से सोना, चांदीमें अवश्य तेजी होगी। घटके बढ़ेगा घटनेसे मत घबराओ।

ग्यारहवां सप्ताह—

ता. १३ से १६ सितम्बर तक बहुत घट-बढ़ रहेगी। ता. १५-१६ को बहुत घट-बढ़ होगी। ता. १७-१८ को दो तरफा लगावें। ता. १८ को अच्छी मन्दी, १६ को तेजी। ता. १६ से १६ के बीचमें मन्दी और वर्षाका बहुत वेग रहेगा।

बारहवां सप्ताह—

ता. २० सितम्बरसे २८ तक रुईमें घटबढ़ या मन्दी होगी। सोना, चांदीमें बहुत हेर फेर होगा। तेजीमें जोर रहेगा। वर्षाका भी उत्पात होगा। ता. २०-२२-२४-२७ में अचूक तेजी होगी। ता. २३-२५-२६ को बहुत घट-बढ़ होगी। ता. २३ को मन्दी होके तेजी होगी। ता. २४ को १२ बजे बाद तेजी होगी। ता. २५ को बाजार तेजी या मन्दा जैसा रहे वैसा ही ता. २८ अक्टूबर तक रहेगा। ता. २८ को बन्द बाजारमें तेजीका अच्छा वातावरण रहेगा।

"श्री स्वाध्यायके ग्राहकोंको और श्रीमान् श्रद्धेय पं. हरदेव जी शर्माकी कृपासे आज ४ वर्षसे मैं श्रीस्वाध्यायकी जो सेवा कर रहा हूं। उसका फल हमें बहुत अच्छा प्राप्त हुआ

(शेष पृष्ठ ६५ पर)

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय पञ्चाङ्ग' से]

आषाढ शुक्ला	११	गुरुवार	ता० ३	जुलाई	देवशयनी एकादशी व्रत स्मार्त गृहस्थोंके लिए।
	१२	शुक्रवार	ता० ४		
	१३	शनिवार	ता० ५	,,	एकादशीव्रत वैष्णव विरक्तोंका चातुर्मास व्रतारम्भ।
	१५	सोमवार	ता० ७	,,	शनि प्रदोषव्रत।
श्रावण कृष्ण	३	गुरुवार	ता० १०	,,	श्रीगुरु पूर्णिमा व्यासपूजा, वायु परीक्षा सत्यव्रत।
	१०	बुधवार	ता० १६	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. ६।५०
	११	गुरुवार	ता० १७	,,	कर्क संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न पर्यन्त।
	१३	शनिवार	ता० १९	,,	कामिका एकादशीव्रत।
	३०	सोमवार	ता० २१	,,	शनिप्रदोषव्रत।
श्रावण शुक्ला	१	बुधवार	ता० २३	,,	सोमवती अमावस्या हरियाली ३०।
	२	गुरुवार	ता० २४	,,	चन्द्र दर्शन।
	५	रविवार	ता० २७	,,	सन्धारा (श्रावणी) तीज।
	७	मंगलवार	ता० २९	,,	नाग पंचमी श्रावणी उपाकर्म ऋषितर्पण।
	८	बुधवार	ता० ३०	,,	श्री गो० तुलसीदास जयन्ती।
	११	शनिवार	ता० २	अगस्त	श्री दुर्गा ८ मेला श्री नयनादेवी और चिन्तापूर्णी।
	१२	रविवार	ता० ३	,,	पुत्रदा एकादशी व्रत।
	१५	मंगलवार	ता० ५	,,	प्रदोषव्रत।
भाद्रपद कृष्ण	३	शुक्रवार	ता० ८	,,	रक्षाबन्धन (रखड़ी) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण सत्यव्रत।
	५	रविवार	ता० १०	,,	कजली ३ श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. ८।५३ बहुला ४।
	७	मंगलवार	ता० १२	,,	चन्दन ६ हल ६।
	८	बुधवार	ता० १३	,,	श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत स्मार्त गृहस्थोंके लिए चन्द्रोदय स्टे. टा. ११।१२
	९	गुरुवार	ता० १४	,,	जन्माष्टमीव्रत वैष्णवोंका चन्द्रोदय स्टेण्डर्ड टाइम १२।१।
	१०	शुक्रवार	ता० १५	,,	गुग्गा ९।
	११	शनिवार	ता० १६	,,	भारत स्वातन्त्र्योत्सव ६।
	१२	रविवार	ता० १७	,,	सिंह संक्रान्ति पुण्यकाल, अजा एकादशीव्रत गोवत्सा १२।
	३०	बुधवार	ता० २०	,,	प्रदोषव्रत।
भाद्रपद शुक्ला	२	शुक्रवार	ता० २२	,,	पिठोरी अमावस्या कुशोत्पटिनी ३० सतीपूजन।
				,,	चन्द्र दर्शन।

भाद्रपद शुक्ल	३ शनिवार	ता०	२३	,,	हरितालिका ३ व्रत श्री वराह जयन्ती।
	४ रविवार	ता०	२४	,,	कलङ्क ४ पत्थर चौथ चन्द्रदर्शन निषिद्ध चन्द्रास्त स्टे. टा. ८।४०
	५ सोमवार	ता०	२५	,,	ऋषि पंचमी।
	८ गुरुवार	ता०	२८	,,	दूर्वाष्टमी श्रीराधा ८ श्री दधीचिजयन्ती।
	६ शुक्रवार	ता०	२६	,,	श्रीचन्द्र ६ (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)
	११ रविवार	ता०	३१	,,	पद्मा (जलभूलनी) एकादशी व्रत।
	१२ सोमवार	ता०	१	सितम्बर	सोमप्रदोषव्रत वामन १२ जयन्ती मेला अम्बाला व पटियाला।
	१४ बुधवार	ता०	३	,,	अनन्त १४ व्रत प्रौष्ठपदी श्राद्ध सत्यव्रत।
	१५ गुरुवार	ता०	४	,,	महालय (पितृपक्ष) प्रारंभ।
आश्विन कृष्णा	४ रविवार	ता०	७	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. ८।३५
	११ रविवार	ता०	१४	,,	इन्दिरा एकादशीव्रत।
	१३ मंगलवार	ता०	१६	,,	भौमप्रदोषव्रत कन्या संक्रान्ति पुण्य काल
	१४ गुरुवार	ता०	१८	,,	सर्वपितृ ३० महालय श्राद्ध समाप्ति।
	३० शुक्रवार	ता०	१६	,,	अमावस्या (देवकार्ये)।
आश्विन शुक्ला	१ शनिवार	ता०	२०	,,	चन्द्रदर्शन शारद नवरात्रारम्भ घटस्थापन।
	५ बुधवार	ता०	२४	,,	ललिता पञ्चमी।
	७ शुक्रवार	ता०	२६	,,	श्री सरस्वत्यावाहनम्।
	८ शनिवार	ता०	२७	,,	श्रीदुर्गाष्टमी महा ८ श्रीसरस्वतीपूजन और बलिदान मेला ज्वालामुखी
	६ रविवार	ता०	२८	,,	महानवमी नवरात्रोत्थापन अपराजिता पूजन विजया १० मेला दशहरा
	१० सोमवार	ता०	२६	,,	श्री सरस्वती विसर्जन पाशांकुशा एकादशीव्रत गृहस्थियोंके लिए।
आषाढ़ शुक्ला	१० बुधवार	ता०	२	जुलाई	श्रीस्वाध्याय सदन स्थापना दिवस

★

(पृष्ठ ६३ का शेष)

है इसके लिये श्रीमान् सम्पादक जीका शतशः धन्यवाद। भविष्यमें मैं श्रीस्वाध्यायकी सेवा और भी अधिक परिश्रमसे करूंगा।

तीन मासका सारांश

ता. ८ जुलाईसे विश्वभरमें उत्पात होते रहेंगे, उत्तर दक्षिणमें वर्षाका उत्पात होगा, पूर्व पश्चिममें राष्ट्रोंका उत्पात रहेगा। कांसी, सुवर्ण चांदी खरीदनेमें लाभ रहेगा, ता. १० को १२ बजेसे सोना चांदीमें बहुत उलट फेर होगा। ता. १२ प्रत्येक व्यापारमें राज्यकी ओरसे अंकुश मुक्त होगा। ता. १२ से १७ तक वर्षाका बहुत उत्पात होगा। ता. २२ जुलाईसे रुई मन्दी रहेगी। सोना, चांदी तेज रहेंगे, बेचनेका कार्य मत करो, ता. २७ से वर्षाका बहुत जोर रहेगा, पश्चिममें राष्ट्रोंका वैमनस्य जोर पकड़ेगा।

ता. ६ से २० अगस्त तक मन्दीका व्यापार करो, ता. १६ को मन्दीका व्यापार बदल दो।

ता. ७ जुलाईसे अन्नादिक मन्दा और वस्तुमें तेजी। काश्मीरकी समस्या विकट रूपमें दिखाई पड़ेगी। ता. १७ जुलाईसे ३ अक्टूबर तक रुईके बिना सब वस्तुओंमें तेजी। तैलादि पदार्थ बहुत तेज होंगे। ता. २५ सितम्बरको जो तेज हो उसको अचूक खरीदो निश्चय लाभ होगा। आगे-ईश्वर इच्छा।

★

तीन मासका साप्ताहिक व्यापार भविष्य

[लेखक—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

जुलाई १९५२

यह मास मंगलवारसे आरम्भ हो रहा है। ता. १ से ४ तक तेजी सोना ३), चांदी ५), रुई १७), अलसी २), अरहर १), मटर १), ता. ५ से ७ तक मन्दी चांदी ३) ४), सोना ३), गुवार मटरमें ॥) ।।।) का रियेक्शन मन्दीका आवेगा। ता. ८ से १४ तक बाजार दोतरफा चलेंगे। ता. ८ से ११ तक मन्दी चांदी ४), सोना २॥), रुई १०), अरहर ।।।), गुवारमटर १), ता. १२ से १५ तक तेजी सोना २), चांदी ४) बाकी वस्तु सम बनी रहेगी। ता. १५ से २४ तक दोतरफा बाजार चलेगा। ता. १५ से १८ तक मन्दी चांदी ५) ६), सोना ४), रुई १५) गुवारमटर १), जूट ३), कालीमिर्च १०) १५),। ता. १८ से २४ तक इकतरफा तेजी सोनेमें ४), चांदी ५) ८), रुई १०), गुवार मटर १) १॥) ता. २५ से ३१ तक इकतरफा मन्दीमें नजराने लगाकर कार्य करें, सोना ४) ५), चांदी ८) १०), जूट ६) ७), अलसी २), सरसों ३), मसूर, गुवार, मटर १) १॥), रुई ३०) ४०), सिल्क १०)।

अगस्त १९५२

यह मास शुक्रवारसे प्रारम्भ हो रहा है। ता. १से ४ तक तेजी रहेगी, सोना २) २॥), चांदी ४) ५), रुई १५) २०), मटर गुवार ।।।) १), ता. ४ से ७ तक बाजार दोतरफा चलेगा बाजार रुख देख कर कार्य करें। ता. ८ से १६ तक मन्दी सोना में ३) ४), चांदीमें ८) ९), रुई २०) २५), गुवार मटर १), यहां ता. ८ को २ बजे नजरानेकी गली लगायें या खरीदो। ता. १२ को नफा लेकर घटे भावमें फिरसे खरीदो डबल लाभ हो जायगा। ता. १७ से २४ तक इकतरफा तेजी चलेगी। ता. १७ को १ बजे खरीदो २॥ दिनमें लाभ। तेजी सोनेमें २॥) ३), चांदीमें ५), रुईमें १२), जूटमें ४), मटर ।।।), गुवार १॥), ता. २५ से ३१ यहां बाजार दोनों ओर चलेंगे, ता. २५ से २७ तक तेजी। ता. २८ से ३१ तक मन्दीके रुख पर कार्य करें। ता. २५ को १२ बजे से २ बजे तक पहिले खरीदो पीछे फिर डबल बेचो। ता. २७ के ३ बजे दोतरफा लाभ ता. ३१ तक सामने होगा। सावधान हर हालतमें नफा १० घण्टामें मिलने लगे तो छोड़ना नहीं बाजारकी चाल विचित्र होवी है।

सितम्बर १९५२

यह मास मंगलवारसे प्रारम्भ हो रहा है। इस मासमें मन्दी तेजी दोनों चलेगी व्यापारी सावधान। ता. २७ अगस्तसे लगायत ता. ७ सितम्बर तक इकतरफा मन्दी चलेगी, सोनेमें १०) १२), चांदीमें १५) २०), रुईमें ५०) ६०), जूटमें ८) १०), गुवारमें ३), मटरमें २।।।), अलसीमें ७) ८), अरंडामें १०) १५), कालीमिर्चमें ५०) ६०) यहां व्यापारी नजराना मन्दीका लगाकर कार्य करें १३ दिनमें अच्छी मन्दी आसकती है। ता. ८ से १६ तक यहां बाजार इकतरफा तेजी की ओर जावेगा। ता. ८ के १२ बजे खरीदो। ता. ११ को ४ बजे तक नफा लेकर ता. १२ को घटे भाव फिर खरीदो तेजी इकतरफा चांदी १०), सोना ६), रुई २५), अलसी सरसों ४), जूट ३) ४), मटर गुवार १) सिर्फ शेयरोंमें मन्दी रहेगी। ता. १७ से २० तक बाजार दोनों तरफ चलेगा रुख अनिश्चित। ता. २० से ३० तक इकतरफा मन्दी चलेगी। ता. १६ को समय २ से ४ तक १५ दिनकी इक-तरफा मन्दीका नजराना लगावें। यहां अनिश्चित मन्दी विदेशी खबरोंसे आवेगी तथा सोमवती अमावस भी मन्दी लाती है. रुख मन्दी सोनेमें ६) ७) ,चांदीमें १०) १२), बारदाना जूटमें ६) ७), रुईमें २०) २५), किराना काली मिर्च ३०) ४०), गुवार मटरमें १) १॥) की मन्दी आ सकती है। यदि मन्दीसे तेजी आनेके लिये ता. २१ को बाजार १ बजेसे ४ तक तेजीमें चले तो मन्दी थोड़ी आवेगी, बाजार बिपरीत तेजीमें चलेगा। देखो बाजार ता. २१ का।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र

भारतीय गणराज्य और नवनिर्वाचित मन्त्रिमण्डलका भविष्य

['श्रीस्वाध्याय'के गताङ्क और 'श्रीविश्वविजय-पंचाङ्गमें' हम वर्तमान वर्ष सं० २००६ विक्रमीका सविस्तर भविष्य-विवेचनंकर चुके हैं। इससे वर्षों पूर्व भी हम एकाधिकबार लिख चुके हैं कि सं० २०१५ वि. से पूर्व संसार सुखकी सांस नहीं ले सकेगा। यत्र-तत्र-सर्वत्र सांसारिक जीव त्रिविध तापोंसे सन्तप्त होते दिखाई देंगे। भारतके लिए भी अभी आगामी कुछ वर्ष पूर्ण शांति एवं समृद्धिकारक नहीं कहे जा सकते। अभी गत ता० १३ मईको नवनिर्वाचित राष्ट्रपति और मन्त्रिमंडलने अपने पदोंकी शपथ ली, उस समयकी ग्रह-स्थितिसे भी यही प्रकट हो रहा है। उक्त ग्रहस्थिति पर हमने अपना मत जो निर्धारित किया था—अधिकांश में ठीक वही विचार बंगलौरके सुप्रसिद्ध अंग्रेजी पत्र 'एस्ट्रालाजिकल मेग्जान'के सम्पादक श्रीबी.व्ही. रमन महोदयने अपने पत्रमें प्रकट किये हैं। अतः यहां हम उसका हिन्दी अनुवाद दे रहे हैं। श्री रमन महोदयने राष्ट्रपतिके शपथ ग्रहण कुण्डलीमें सूर्य १२ वें वृषभ राशिका माना है, परन्तु हमारे मतसे उस समय ता० १३ मई को सूर्य मेष राशिमें ही था, वृषभमें दूसरे दिन ता० १४ को प्रवेश हुआ। अतः हमने कुण्डलीमें सूर्य मेष राशि पर ही रक्खा है। इतना तो निश्चित है कि भारतका भविष्य उज्ज्वल है, आपत्तियोंको सरकार सबल हाथोंसे रोकनेका प्रयत्न करेगी। इसपर हम अपने विशेष विचार आगामी 'नववर्षाङ्क' और अपने सं०२०१० के 'श्रीविश्वविजय पंचाग'में देनेका प्रयत्न करेंगे।

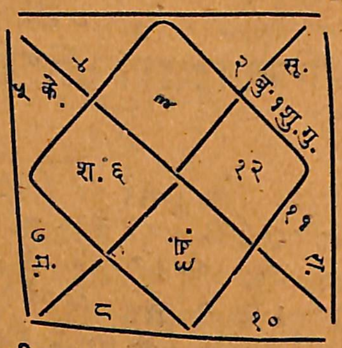
—सम्पादक]

मंगलवार १३ मई१ ६५२ को श्री डा. राजेन्द्रप्रसादने प्रातः ८-३० बजे राष्ट्रपतिके पदकी शपथ ली। इसी दिन सायंकाल ६बजे श्री नेहरूके नेतृत्वमें मन्त्रिमण्डलने शपथ ली। राष्ट्रपतिने पार्लमेण्टके संयुक्त अधिवेशनके सामने भाषण दिया और सरकारकी नीति और तात्कालिक प्रोग्राम पर प्रकाश डाला। आपने अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्थितिका भी निरीक्षण किया और भारतकी शांति स्थापनाकी इच्छाको पुनः दृढ़ताके साथ व्यक्त किया। सीलोनको चेतावनी देते हुए आपने कहा कि जो तरीका उसने अपनाया है वह भारतीयोंको नैसर्गिक अधिकारोंसे वंचित करने वाला है। राष्ट्रपतिने कहा इतिहास में पहली बार अन्न धान्यका विशाल भण्डार हमारे पास जमा हुआ है। भाषणकी समाप्ति हिन्दू कोडबिलके उल्लेखके साथ हुई और कहा गया कि इसको कुछ भागोंमें विभक्त कर हरेक भाग अलग अलग पार्लमेण्टके सामने पेश किया जायगा।

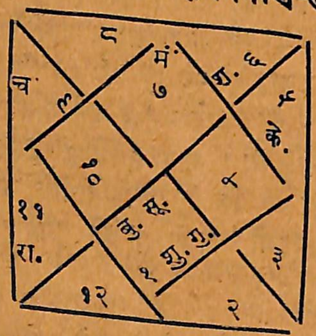
ज्योतिषकी दृष्टिसे इस पर अब विचार कीजिए। राष्ट्रपतिके शपथ लेने और नई सरकारके बननेका क्षण कम महत्वपूर्ण नहीं। प्रत्येक क्षणका अपना महत्व है। इसलिए जन्मका क्षण और जिस समय हम कोई महत्वपूर्ण कार्य करनेका निश्चय करते हैं वह क्षण महत्वपूर्ण है। सूर्य ग्रहों और तारोंसे आई किरणें हमारे मस्तिष्कके कोष्ठोंको प्रभावित करती हैं। शब्दों, कार्यों, विचारों और हमारी चेष्टाओंसे अदृश्य शक्तियां गतिमान होती हैं। इसको आप किसी नामसे पुकारिये—विद्युतीय, ईथरीय या विद्युत चुम्बकीय या सौर्य राशि। मानवकी सफलता मानव और वह जो कार्य करता है उनके बीचके आकर्षण और विकर्षण पर निर्भर है। ज्योतिष शास्त्र उस क्षणकी विशेषताओंका केवल उद्घाटन करता है।

अगले पांच वर्षों पर प्रभाव डालने वाली दो कुण्डलियां अगले पृष्ठ ६८ पर दी जा रही है।

राष्ट्रपतिके शपथ ग्रहणकी कुण्डली



केन्द्रीय मंत्रिमण्डल-निर्माण-लग्न



एक उस समयकी है जब राष्ट्रपतिने शपथ ली और दूसरी उस समयकी है जब मंत्रिमण्डलने शपथ ली। दोनों महत्वपूर्ण हैं और परस्पराश्रित हैं। परन्तु इन दोनोंमें भी दूसरी अधिक महत्वपूर्ण है।

शुभ समय पर न प्रारम्भ करनेके ही कारण अनेक योजनायें कागज पर रह गईं या विफल रहीं। इसलिए समय और क्षणका बहुत महत्व है। राष्ट्रपतिने चतुर्थी को, जो मंगलको थी, शपथ ली। इस दिनका अधिपति मंगल था। ज्योतिषशास्त्र ऐसे कार्योंके लिए मंगलको शुभ नहीं मानता। कुण्डलीको देखनेसे प्रतीत होगा कि लग्न लग्नाधिपति और सूर्य पर शनिकी वक्र दृष्टि है। इस प्रतिकूलताके विरुद्ध लग्नाधिपति बुध दो शुभ ग्रहोंके साथ विद्यमान है और चन्द्र पर गुरुकी दृष्टि है।, इस कारण प्रभाव सन्तुलित हो गया है शुक्र शुभस्थानमें है अतः शुक्र भुक्ति शुक्रदशामें राष्ट्रपति अपने उच्चपदका काम बहुत सफलता और सम्मनके साथ सम्पन्न करेंगे। वे लोकतंत्री गवर्मैण्टकी परम्पराओंका पूर्णतः पालन करेंगे। गवर्मैण्टसे मतभेद होने पर वे परामर्श देनेमें संकोच न करेंगे। १९५६ के अन्तमें शुक्र दशाके अन्दर रवि-भुक्तिका आरम्भ होता है। सूर्य तीसरे घरका स्वामी है और १२ वें स्थानमें अधिष्ठित हैं। ६ वें और ११वें घरके स्वामी मंगलकी वक्र दृष्टि है। मुख्य स्वामी शुक्र स्वतः ११ वें घरमें हैं और ५ वें और १२ वेंका स्वामी है। नवांशकुण्डलीमें पुनः शुक्र ८ वें घरमें नीच स्थानमें है और मंगलकी उस पर दृष्टि है। १२ वें स्थानमें सूर्य है और बृहस्पतिकी उस पर दृष्टि है। चन्द्र लग्नके अनुसार सूर्य छठे घरमें है नवेंका स्वामी है और शुक्र ६ वें और ११ वें घरका स्वामी होते हुए ५ वें घरमें है। इनसे प्रतीत होता है कि राष्ट्रपतिके जीवनमें राजनीतिक संकट आनेकी सम्भावना है और बहुत सम्भव है वे अपने विशेष अधिकारोंका प्रयोग करें।

मंत्रिमण्डल शपथकी दूसरी कुण्डलीमें तुला लग्न १६ वें अंशमें और दशम लग्न कर्क राशिके २२ वें अंश पर उच्चस्थितिमें है, जो कि अधिक महत्वपूर्ण है। शुक्र लग्नाधिपति है और मंगल लग्नमें पड़ा है ये दोनों मुख्य ग्रह हैं जो प्रभावित कर रहे हैं। ज्वलनशील मंगल उच्च स्थिति पर पहुँचनेसे केवल ४० अंश पीछे है, और यह दूरी वह जुलाई १९५२ के अन्त तक पूरी कर लेगा। यह सरकारके लिए अशान्तिका सूचक है और सूचित करता है कि हिंसात्मक उपद्रव होंगे। लगभग १९५६ में मंगल उच्च स्थितिके साथ युति बनायेगा और लगभग १९५५में शनि ठीक केन्द्रयोग बना देगा, ये दो वर्ष सरकारके सम्मान और गवर्मेण्टकी बनावट एवं रूपके सम्बन्धमें अत्यन्त महत्वपूर्ण होंगे। वैयक्तिक दृष्टिसे यह समय नाजुक मन्दीका और घरेलू बातोंमें चिन्ताका होगा। राष्ट्रके विचारसे घरेलू अशान्ति, मजदूर हड़तालें पड़ोसियोंमें गलतफहमी और राष्ट्रीय सम्पत्तिके नाशको यह सूचित करता है। चतुर्थ स्वामी शनि १२ वें घरमें है और चौथे पर मंगलकी दृष्टि है। राष्ट्रीय कुण्डलीमें ४ था स्थान खेती और जमीनको सूचित करता है। इसलिए औद्योगीकरण और खेतीकी उन्नतिकी योजनाओंकी विपुलता होगी परन्तु सरकार जनताके कष्टोंको दूर करनेके लिए कोई ठोस काम न कर सकेगी। दूसरा घर व्यापार और वित्तका है। दूसरे स्थानका स्वामी मंगल लग्नमें और तीसरे और छठे घरके स्वामी बृहस्पतिकी

उस पर दृष्टि है। शुक्र लग्न [८ वें] और बुध ६ वें (१२) घरका स्वामी है। वित्तीय दृष्टिसे इस वर्षमें समृद्धि बढ़ेगी और अपने मूल आर्थिक तंत्रकी रचनासे बहुत आगे बढ़ जायगा। चतुर्थ स्वामीकी विपरीत दशा होनेके कारण शिक्षामें सुधार होनेसे रुक जावेंगे और औद्योगिक योजनाकी प्रगति धीमी हो जायगी। सूर्य देशकी सर्वोच्च शक्तिको सूचित करता है। उस पर मंगलकी दृष्टि है जो कि दूसरे और ७ वें घरका स्वामी है। ७ वां घर परराष्ट्रीय विषयों और युद्धका है। इससे यह नहीं प्रतीत होता है कि अनुत्पादक रक्षा-व्ययमें कुछ कमी होगी। अगले कुछ वर्षोंमें आर्थिक कठिनाइयां आवेंगी, बेकारी बढ़ेगी, राजनीतिक पार्टियों द्वारा शक्ति प्राप्त करनेका यत्न किया जायगा। ७ वें घरका स्वामी मंगल है, अतः सेनाकी शिक्षा और उसकी साज-सज्जासे सम्बन्धित चीजोंकी तेजीसे वृद्धि होगी और सैनिकीरकणके लिए असाधारण उत्साह दिखाई देगा।। इससे यह भी प्रकट होता है कि भारत किसी पर आक्रमण करनेका विचार न करेगा। १० वें घर पर शनिकी दृष्टि होनेसे प्रगट होता है कि कम्युनिज्मका जोर बढ़ेगा और चूंकि व्यापारके ग्रह बुध पर मंगलकी दृष्टि है, अतः सामाजिक अव्यवस्था उत्पन्न होगी और भारतकी आर्थिक उन्नतिमें इससे बाधा पहुंचेगी। ५ वें घरमें राहु है, इसका अर्थ है कि सरकारी नीतिमें दूरदर्शिताका अभाव दिखाई देगा। सामाजिक और आर्थिक महत्वके प्रश्न जब विचारणीय पड़े होंगे उस समय पार्लमेण्ट अपनी शक्ति हिन्दूकोड बिल जैसे बिलोंके विचार पर खर्च कर रही होगी।

मद्रास

गवर्मेंट अन्न और जमीनके सम्बन्धमें स्पष्ट सीधे और रचनात्मक नीतिका अनुसरण न करेगी। सरकार आर्थिक परिणामोंकी परवाह न करके दारुबन्दी सदृश सनकी योजनाएं चलावेगी। नवीन मंत्रिमण्डलका कार्य पहलेकी अपेक्षा अधिक अच्छा रहेगा। कण्ट्रोल शिथिल होंगे। पहले सालका अन्त होनेसे पहले ही पुनः मन्त्रिमण्डलका संगठन होगा। मन्त्रिमण्डलकी बहुत सी शक्ति विरोधीदलसे लड़ते हुए खर्च होगी और अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा।

बम्बई

बम्बई मन्त्रिमण्डलने प्रातः १० बजे २१ अप्रैल १९५२ को शपथ ली। चार ग्रह लग्न और चन्द्रमासे १० वें ११ वें भावमें इस बातके सूचक हैं कि मन्त्रिमण्डल अलोकप्रिय और अनुत्पादक नीतियोंका पूर्ण उत्साहके साथ अनुसरण करेगा और राज्यकी आर्थिक स्थिति संकटापन्न हो जायगी। सूर्य-मंगल समसप्तक श्रमसमस्या उत्पन्न करेगा और हड़तालें और प्रदर्शन होनेकी सम्भावना है।

भारत

दूसरी कुण्डलीको देखनेसे ज्ञात होगा कि लग्नमें मंगल अधिष्ठित है परन्तु तीन शुभ ग्रहोंसे वीक्षित है। लग्न बलवान् है। यह इस बातका सूचक है कि व्यापार और व्यवसायको लाभ होगा और प्रशासन सन्तोषजनक रीतिसे चलेगा। ८ वें घर पर मंगलकी दृष्टि होनेसे (जन-नीति-सदाचारका शासक है) देशमें अनैक्य और अशान्ति रहेगी। ८ वें घर पर मंगलकी दृष्टि होना बताता है कि मन्त्रिमण्डलके अन्दर शीघ्र परिवर्तन होंगे और लग्न मंगल और शनिकी निकट समीपता आन्तरिक संघर्ष और विनाशक आलोचनाकी सूचक है। मंगल जब लग्नमें होगा तो युद्धीय प्रवृत्तियां दिखाई देंगी। इसलिए जनतामें आशाभंग होगा और अदूरदर्शी नेतृत्वके प्रति असन्तोष रहेगा। ५ वेंमें राहुका होना सूचित करता है कि दिए गए वचन पूरे न होंगे, ६ वेंमें तीन शुभ ग्रह हैं और ये बताते हैं कि सफल परराष्ट्र नीतिका अनुसरण किया जायगा। बृहस्पति और शनिका विरोध नवीन और पुरातन तथा प्राचीन और अर्वाचीनके विरोधका सूचक है। इस कारण प्राचीन नवीनके उपासक अपनी अपनी शक्तिका संग्रह करेंगे। इससे कटुता बढेगी और जब शनि वहां पहुँचेगा, जहां मंगल दूसरी कुण्डलीमें है, तो संवैधानिक संकट उत्पन्न होगा। शनि १२ वेंमें हैं, और उसकी दृष्टि २ सरे (पड़ोसी) पर है, अतः पाकिस्तानके साथ हमारे सम्बन्ध नहीं सुधरेंगे, बल्कि और अधिक बिगड़ जावेंगे। परन्तु भारत इस संकटको पार कर जायगा। दूरका भविष्य वस्तुतः उज्वल है। परन्तु शनि जब तक कन्या राशि और तुला राशिके शेष भागको पूरा नहीं करता हमारे नेताओंको सतर्क रहना चाहिए और विपत्तियोंके सब सम्भावित स्रोतोंका समय रहते अन्त कर देना चाहिए।

★

अन्नजलका भविष्य

[ले०—श्री. पं० कालीचरणजी शर्मा ज्यो०]

अन्नं जगतः प्राणाः प्रावृट्कालस्य चान्नमायत्तम् ।
यस्माद्ततः परीक्ष्यः प्रावृट्कालः प्रयत्नेन ॥

अन्न ही जगत्का प्राण है और यह अन्न वर्षाकालके आधीन है, इस कारण प्रयत्न पूर्वक वर्षाकालकी परीक्षा करनी चाहिए। सस्य सम्पत्तिके भविष्य पर गुरु चारका भी प्रभाव अवश्य पड़ता है। यथा—

'विचरन् भद्वयमिष्ट स्तत्सार्द्ध वत्सरेण मध्यम कालः सस्यानां विध्वंसी विचरेदधिके यदि कदाचित् ।'

इस वर्ष आषाढ़ कृ० ३० अमावास्याके निकटसे आरम्भ होकर आषाढ़ी—पूर्णिमा तक समस्त भारतमें जलवर्षा होजाएगी तथा जल तृणकी कमी दूर होकर सर्वत्र अन्नकी वोवनी योग्य हो जानेसे व सस्य सम्पत्तिकी भावी आशाको लेकर कृषक गण प्रसन्न दिखाई देंगे।

श्रावण मासमें प्रकृतिके कोपसे जलकी खेंच हो जाएगी हरा चारा खरड़ी वैड़ी महाडीयां परका सूख जानेसे चारे और जलकी चिन्ता उत्पन्न हो जाएगी। परन्तु खेतियां सूखेगी नहीं।

भाद्रपद-आश्विन दोनों महीनोंमें वर्षा यथेष्ट होगी अन्न तृणका कष्ट दूर हो जाएगा, एवं ज्वार, मूंग, चावल चवलोंकी उत्पत्ति विशेष होगी। मध्यभारत मूंग उड़द व ज्वार आदि दूसरे प्रान्तोंको भेजनेमें समर्थ हो जाएगा। जनता कण्ट्रोलकी दुकानों पर अन्न लेने नहीं जाएगीं, अन्न सर्वत्र सुविधासे प्राप्त होने लगेगा। कीटरोग लग जानेसे मूंगफलीकी फसल नगण्य होगी।

गेहूंकी फसल उत्तम। कपासकी तथा चणे और तूवरकी फसल मध्यम मानसे उत्तम होगी।

नोट—गतवर्षके आषाढ़ मासीय 'श्रीस्वाध्याय'में हमने चातुर्मासिक वर्षाके भविष्यका उल्लेख करते हुए लिखा था कि 'इस वर्ष जल कण्ट्रोल भावसे वर्षेगा अन्नकी त्रास रहेगी, यह फल मिला या नहीं प्रत्यक्ष है।

———

चांदी की दैनिक तेजी मन्दी

(ले०—श्री मिलापचन्द्रजी मुहणोत ज्यो०)

[इस लेखके लेखक, 'श्रीस्वाध्याय'के पाठकोंके लिए नये ही हैं अतः हम यहां इनकी केवल एक मास (जुलाई)की चांदी की दैनिक तेजी मंदी दे रहे हैं। यदि इससे पाठकोंको लाभ हुआ तो आगामी अंकसे तीन मासकी दैनिक तेजी मंदी और इनके विशेष विचार हम प्रकाशित कर सकेंगे। —सम्पादक]

जुलाई मास

ता० १—खुलते बाजार मन्दी, शाम ८।१६ तेजी।
ता० २—मन्दी घट-बढ।
ता० ३—तेजी २।५१ मिनट पर जरा मन्दी।
ता० ४ - मन्दी।
ता० ५—तेजी
ता० ६—मन्दी
ता० ७—मन्दी फिर तेजी मन्दी।
ता० ८—मन्दी
ता० ९—मन्दी-तेजी-मन्दी।
ता० १०—मन्दी
ता० ११—तेजी
ता० १२—तेजी।
ता० १३—पहले मन्दी फिर तेजी।
ता० १४ - तेजी-मन्दी।
ता० १५—३।३७ मिन्ट पर मन्दी।
ता० १६—बहुत मन्दी।
ता० १७—तेजी
ता० १८—तेजी
ता० १९—तेजी
ता० २०—को १।३० पर मन्दी ३।१६ पर तेजी।
ता० २१—से मंदी ता० २४ तक।
ता० २४—को शामसे तेजी।
ता० २५—से तेजी।
ता० २६—तेजी
ता० २७—तेजी